ज्ञानाञ्जलि

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

नैक द्वारा 'बी'–ग्रेड प्रमाणित

अंक – एकादश

वर्ष – 2018

प्रधान सम्पादक
डॉ. दीप्ति वाजपेयी

संरक्षक
डॉ. करुणा सिंह
प्राचार्या

:: सम्पादक मण्डल ::

डॉ. निधि रायज़ादा
श्रीमती नेहा त्रिपाठी
डॉ. अरविन्द यादव
डॉ. मीनाक्षी लोहनी

श्रीमती दीक्षा
डॉ. मिन्तु बंसल
डॉ. विजेता गौतम
डॉ. नीलम शर्मा

चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध

कुल गीत

शस्य श्यामला बादलपुर की हरी भरी उर्वर धरती पर
जन - गण मंगल करने के हित, विद्या दीप जलाया है।

गंगा यमुना की धारायें इसके तट पावन करती
मुक्त प्रदूषण शीतल छाया, तन मन को पुलकित करती
शान्ति समन्वय नैतिकता हित ज्ञान का दीप जलाया है।
शस्य श्यामला.....

खेत-खेत क्यारी-क्यारी में, नित्य नया जीवन भरती
श्रम सीकर सिंचित यह माटी चन्दन सा जग महकाती
बाल पुष्प का सौरभ माटी चन्दन अगरु जलाया है
शस्य श्यामला.....

इसका है इतिहास निराला गाथा गायन अलबेला
मिहिर भोज की कीर्ति कथा से इसका मस्तक गर्वीला
आगत भी है परम्परागत विद्या दुर्ग सजाया है।
शस्य श्यामला.....

आजादी के प्रथम युद्ध की साक्षी है पावन धरती
बुद्ध तथागत की करुणा भी ममता का संचय करती
समरस की सुन्दर संध्या में रंजन द्वीप जलाया है।
शस्य श्यामला.....

भव्य भारती के पदतल में करें अर्चना करें नमन
रमा विजय श्री मिले सभी को, जितेन्द्रिय सब बने युवा जन
ज्ञान सूर्य से मिटे तिमिर सब, ज्योतिर्पुंज जलाया है।
शस्य श्यामला.....

ऊर्जा बौद्धिकता मानवता शुचिता पावनता और सृजन
विद्या मन्दिर बादलपुर का आओ कर लें अभिनन्दन
विद्या हर घर-घर तक पहुँचे ज्ञान का शंख बजाया है।
शस्य श्यामला.....

अनुक्रमणिका

1.	**कुलगीत**	**कु.मा.रा.म. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर**	
2.	**संदेश**	**श्री राम नाईक, राज्यपाल, लखनऊ, उ.प्र.**	
3.	**संदेश**	**डॉ. दिनेश शर्मा, उच्च शिक्षा मंत्री**	
4.	**संदेश**	**डॉ. प्रीति गौतम, निदेशक, उच्च शिक्षा, इलाहाबाद**	
5.	**संदेश**	**संजय अग्रवाल, आई.ए.एस. अपर मुख्य सचिव**	
6.	**संदेश**	**प्रो. नरेन्द्र कुमार तनेजा, कुलपति**	
7.	**प्राचार्य की कलम से**	**डॉ. करुणा सिंह, प्राचार्या**	
8.	**सम्पादकीय**	**डॉ. दीप्ति वाजपेयी, प्रधान सम्पादिका**	
9.	हिन्दी के बढ़ते चरण	**विशाखा**, बी.ए. प्रथम वर्ष	8
10.	माता-पिता के प्रति मेरी सोच, मेरी राय	**अन्शु शर्मा**, बी.कॉम. तृतीय वर्ष	8
11.	बेटी बचाओ	**कु. निशा यादव**, बी.ए. तृतीय वर्ष	9
12.	भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों पर.....	**मधु कुमारी**, बी.एड. प्रथम वर्ष	11
13.	भारतीय पत्रकारिता	**कु. अंजली नागर**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	14
14.	वेदप्रतिपादिता राष्ट्रे साम्मनस्यभावना	**डॉ. दीप्ति वाजपेयी**, एसो.प्रो. संस्कृत	19
15.	महाकवि कालिदासः	**अन्जली नागर**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	20
16.	वैदिकः संस्कृतिः	**गुलिस्ता सैफी**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	22
17.	जननी	**मोनिका सिंघल**, बी.ए. तृतीय वर्ष	24
18.	भारतवर्षस्य महत्वम्	**कविता नागर**, बी.ए. प्रथम वर्ष	25
19.	आधुनिक संस्कृत-पठन-पाठन-प्रणाली	**लक्ष्मी**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	26
20.	भारतीयदर्शनम्	**सरिता रौशा**, एम.ए. प्रथम वर्ष	27
21.	संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्	**सन्जू नागर**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	30
22.	पुराणानि	**गीता रौसा**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	32
23.	The Problem of Unemployment	**Vishakha**, B.A. Ist Year	34
24.	Women More Generous Than Men?	**Deeksha,** B.A. Ist Year	35
25.	The Aim and Success	**Kajol Khari,** B.A. Ist Year	35
26.	Sympathy: A Sui Generic Attribute	**Monisha Arya,** B.A. Ist Year	36
27.	Life is What we Make of It	**Aanchal Nagar,** Ist Year	37
28.	How to Maintain Cleanliness	**Neelam Gautam,** M.A., English IIIrd Sem.	37
29.	Safety of the Women: A Concern	**Sakshi,** B.A. IInd Year	38
30.	Treatment of Juvenile Criminals.....	**Sakshi Bhati,** M.A. IIIrd Sem	40
31.	The Present Education System....	**Sakshi Bhati,** M.A. IIIrd Sem	41
32.	The Water Footprint	**Dr. Meenakshi Lohani,** Astt. Pro. Geog.	41

33.	We Can all Make a Positive.....	**Shilpi,** Astt. Pro. Home Science	43
34.	Easy Solutions to Stress Free Life	**Dr. Vineeta Singh,** Astt. Pro. Sociology	44
35.	Question & Answer	**Kajal Sharma,** B.A. Ist Year	46
36.	Jokes	**Sana Parveen,** B.A. II Year	46

काव्याञ्जलि

37.	कविता	**नीतू**, बी.ए. प्रथम वर्ष	49
38.	कविता	**निशा राघव**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	49
39.	कविता	**सना परवीन**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	49
40.	अनुशासनम्	**मीनाक्षी**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	49
41.	चिरनवीना संस्कृत एषा	**प्रीति**, एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर	50
42.	मम माता देवता	**रितु नागर**, (संकलन कर्त्री) बी.ए. प्रथम वर्ष	50
43.	भारतभक्ता	**रेशमा**, बी.ए. तृतीय वर्ष	50
44.	कृषीवलमीतम्	**शिल्पा नागर**, बी.ए. प्रथम वर्ष	50
45.	प्रभातवर्णनम्	**प्रियंका विकल**, बी.ए. तृतीय वर्ष	51
46.	भवतु भारतम्	**प्रिया मावी**, बी.ए. तृतीय वर्ष	51
47.	वृक्षात रक्षत	**अर्चना शर्मा**, (संकलन कर्त्री) एम.ए. प्रथम वर्ष	51
48.	आँसू	**डॉ. कनकलता**, असि. प्रो. संस्कृत विभाग	52
49.	जलचक्रम्	**पूजा**, बी.ए. प्रथम वर्ष	52
50.	Energy Conversation	**Sweta Baisla,** B.A. Ist Year	53
51.	Easy and Difficult	**Monika Kumar,** B.A. Ist Year	53
52.	Faithful Friends	**Soniya Nagar,** B.A. Ist Year	53
53.	Sympathy	**Pooja Sharma,** B.A. Ist Year	54
54.	We are the World	**Shiksha Sharma,** B.A. Ist Year	54
55.	Tree	**Ankita,** B.A. Ist Year	54
56.	On Killing a Tree	**Pallavi Gautam,** B.A. Ist Year	55
57.	The Fountain	**Km. Meenu,** B.A. IInd Year	56
58.	Nature	**Vishakha,** B.A. Ist Year	56
59.	The Beauty of Friendship	**Shama Parveen,** B.A. IInd Year	57
60.	It Is Upto You	**Shama Parveen,** B.A. IInd Year	57
61.	The Perfect Life (Ben Jonsen)	**Kanchan Nagar,** B.A. Ist Year	57
62.	What is Life	**Vishakha,** B.A. Ist Year	55
63.	We are Indians	**Nisha Bhati,** M.A. Ist Year	55
64.	Good Quotations by Famous People	**Nisha Bhati,** M.A. Ist Year	47

विविधाञ्जलि

65.	वार्षिक आख्या	**डॉ. निधि रायजादा**, एसो.प्रो. इतिहास	55
66.	हिन्दी साहित्य परिषद्	**डॉ. मिन्तु**, सहायक आचार्य हिन्दी	57
67.	संस्कृत परिषद्	**डॉ. कनकलता**, असि.प्रो. संस्कृत	58
68.	अंग्रेजी परिषद्	**श्रीमती जूही विरला**, असि. प्रो. अंग्रेजी	59
69.	संगीत परिषद्	**डॉ. बबली अरूण**, परिषद् प्रभारी	60
70.	राजनीति विज्ञान परिषद्	**डॉ. आभा सिंह**, विभाग प्रभारी	60
71.	चित्रकला परिषद्	**श्रीमती शालिनी सिंह**, परिषद् प्रभारी	61
72.	समाजशास्त्र-परिषद्	**डॉ. सुशीला**, परिषद् प्रभारी	62
73.	विज्ञान संकाय परिषद्	**श्रीमती नेहा त्रिपाठी**, असि. प्रो.	63
74.	शिक्षाशास्त्र परिषद्	**डॉ. सोनम शर्मा**, परिषद् प्रभारी	65
75.	भूगोल परिषद्	**डॉ. मीनाक्षी लोहानी**, परिषद् प्रभारी	65
76.	इतिहास परिषद्	**डॉ. निधि रायजादा**, परिषद् प्रभारी	66
77.	वाणिज्य परिषद्	**डॉ. अरविन्द कु. यादव**, परिषद् प्रभारी	68
78.	गृह विज्ञान परिषद्	**डॉ. शिवानी वर्मा**, परिषद् प्रभारी	69
79.	अर्थशास्त्र विभाग	**श्रीमती भावना यादव**, परिषद् प्रभारी	70
80.	बौद्धिक प्रसार	**डॉ. सीमा देवी**, प्रभारी	71
81.	शारीरिक शिक्षा परिषद्	**श्री धीरज कुमार**, असि.प्रो. शारीरिक शिक्षा	72
82.	महिला प्रकोष्ठ	**डॉ. अर्चना सिंह**, प्रभारी	73
83.	नेचर क्लब	**डॉ. डी.सी. शर्मा**, प्रभारी	74
84.	बी. एड. संकाय	**श्री बलराम सिंह**, परिषद् प्रभारी	74
85.	समान अवसर केन्द्र	**डॉ. अर्चना सिंह**, प्रभारी	75
86.	रेंजर	**डॉ. सुशीला**, प्रभारी	76
87.	कैरियर काउन्सलिंग सेल एवं रोजगार....	**श्रीमती भावना यादव**, संयोजिका	78
88.	राष्ट्रीय सेमिनार	**डॉ. दीप्ति वाजपेयी**, सेमिनार संयोजक	79
89.	Activity Report of IQAC	**Dr. D. C. Sharma**	82
90.	National Cadet Corps	**Dr. Meenakshi Lohani,** N.C.C.Care Taker	83
91.	ESPD Club	**Ms. Diksha**	83
92.	Rashtriya Uchchatar Shiksha....	**Dr. Meenakshi Lohani,** Rusa: Co-ordinator	84
93.	राष्ट्रीय सेवा योजना	**श्रीमती शिल्पी**, कार्यक्रम अधिकारी	89
94.	राष्ट्रीय सेवा योजना	**श्रीमती नेहा त्रिपाठी**, कार्यक्रम अधिकारी	91
95.	पुरातन छात्रा सम्मेलन	**डॉ. मिन्तु**	95
96.	महाविद्यालय परिवार	**प्राचार्या, डॉ. करुणा सिंह**	96

Vision

To provide low cost quality higher education to the girls students of socio-economically weaker sections of the area, in order to bridge the rural-urban divide and thus bring about holistic national development.

परिकल्पना

इस क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की छात्राओं को कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभेदों को दूर करते हुए समग्र राष्ट्र का विकास करना।

Mission

As a unit of Uttar Pradesh Government Higher Education, "Kumari Mayawati Govt. Girls Post Graduate College, Badalpur" is engaged in pursuit of academic excellence, in order to achieve the empowerment of women in the adjoining rural area by :

- ***the development of leadership skills, inner strength and self-reliance,***
- ***inculcate moral values and tolerance and***
- ***making new technological innovations available to the target group, in order to prepare them to face national and global challenges.***

संकल्प

उ. प्र. राज्य उच्च शिक्षा की इकाई के रूप में ''कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर'' ग्रामीण अंचल की छात्राओं को गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान कर निम्न बिन्दुओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने हेतु कृत संकल्प है–

— छात्राओं में मनोबल, आत्मनिर्भरता एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करना।

— उनमें नैतिक मूल्यों का विकास कर सहिष्णुता की भावना विकसित करना।

— नवीन तकनीकी एवं नवाचारों के माध्यम से छात्राओं में राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करना।

गधाञ्जलि

हिन्दी के बढ़ते चरण

विशाखा
बी.ए. प्रथम वर्ष

प्रस्तावना

मनुष्य जिस वातावरण अथवा समाज में जन्म लेता है, जिसमें वह पलता है, उसी वातावरण अथवा समाज की भाषा को वह ग्रहण करता है और अंगीकार कर लेता है। राष्ट्र-भाषा का तात्पर्य किसी भी राष्ट्र की उस भाषा से होता है जिसे उस राष्ट्र के अधिकांश व्यक्ति स्वेच्छा से ग्रहण करते हैं तथा उसी के माध्यम से अपने विचारों, अनुभूतियों और कार्य-कलापों की अभिव्यक्ति करते हैं तथा स्वयं को गौरवान्वित समझते हैं।

आज के युग में हिन्दी की अहमियत

आज हम देखें तो लड़के-लड़कियाँ हिन्दी से पढ़ाई करके आज वो प्रोफेसर, टीचर व अपना सुनहरा भविष्य बना रहे हैं। हिन्दी का इतनी तेजी के साथ विकास हो रहा है कि 50 हजार टीचर आपको आज हिन्दी विषय के मिलेंगे। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा व मातृभाषा दोनों है इसलिए हम हिन्दी को सरलता से पढ़ सकते हैं।

आज हिन्दी का दौर इतना बढ़ गया है कि आज सब विद्यार्थी हिन्दी विषय से ही अपना कैरियर बनाना चाहते हैं।

हिन्दी भाषा के महत्वपूर्ण तथ्य एवं हिन्दी का महत्व

भले ही आज हमारी सारी पढ़ाई-लिखाई और सारे कार्य अंग्रेजी में होते हैं लेकिन भारत के लोगों की मूलभाषा हिंदी है और आप भारत के किसी भी कोने में चले जाइये अगर आपको हिंदी आती है तो आपको रहने कार्य करने में कोई परेशानी नहीं होगी और हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो पूरे भारत को एकता में जोड़ती है तो आइए जानते है हिंदी भाषा से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य और हमारे देश में हिंदी के महत्व के बारे में जानते हैं।

हिंदी शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के सिंधु शब्द से हुई है। सिन्धु नदी के क्षेत्र में आने कारण ईरान लोग सिन्धु न कहकर 'हिन्दु' कहने लगे जिसके कारण यहाँ के लोग हिन्द, हिन्दू और हिन्दुस्तान कहलाने लगे।

हिन्दी भारत की संवैधानिक राज्य भाषा है जिसे 14 सितम्बर 1949 को अधिकारिक रूप से राष्ट्रभाषा का दर्ज दिया गया।

भारत में अनेक भाषा और बोलियाँ बोली जाती हैं। हमारे देश में इतनी भाषाएँ हैं कि ये कहावत कही गयी है

''कोस कोस पर बदले पानी चार कोस पर वानी''

हमारे देश भारत में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और 4 कोस पर भाषा यानि वाणी भी बदल जाती है लेकिन इन सभी भाषाओं में सबसे अधिक भाषा बोले जाने वाली हिंदी है।

हिंदी विश्व की चीनी भाषा के बाद दूसरी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है। हिंदी हमारे देश भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, फिजी, मारिसस, गयाना, सूरीनाम और नेपाल में सबसे अधिक बोली जाती है।

विश्व के सबसे उन्नत भाषाओं में हिंदी भाषा सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है अर्थात् हम जो हिंदी में लिखते हैं वही बोलते भी हैं और वही उसका मतलब भी होता है जबकि अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं है।

माता-पिता के प्रति मेरी सोच, मेरी राय

अन्शु शर्मा
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

अब मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है कि मैं क्या लिखूँ क्योंकि माता-पिता के प्रति मेरी जो सोच है उसे मैं शब्दों

में बयाँ नहीं कर सकती पर फिर भी अपने मन के भावों को आपके सम्मुख प्रकट करने की कोशिश कर रही हूँ।

"पत्थर पूजे कई, तुम्हारे जन्म की खातिर उन्होंने, पत्थर बन माँ-बाप का दिल कभी कुचलना नहीं।"

हम इस दुनिया में जन्म लेते हैं तो किसलिए लेते हैं। सिर्फ इसलिए कि माता-पिता के पैसों को जितना खर्च किया जाए उतना करो और खाओ, पियो, ऐश करो। क्या यही जिन्दगी है? मेरे विचार से तो यह बिल्कुल गलत है।

हम इस दुनिया में जन्म लेते हैं सिर्फ ओर सिर्फ इसलिए कि हम जिन माँ-बाप की सन्तान है उनका नाम गर्व से ऊँचा हो, उन्हें ये एहसास न हो कि उन्होंने अपनी औलाद को जन्म देकर कोई गुनाह किया है। इसलिए हमें कोई भी ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिये जिससे हमारे माँ-बाप को समाज में सर उठाकर जीने का हक भी न हो। वैसे हम कितने भी बड़े हो जाये पर अपने माता-पिता से कभी बड़े नहीं हो सकते।

"भूलो सभी मगर माता-पिता को भूलना नहीं, उपकार अनगिनत हैं उनके, इस बात को भूलना नहीं।।"

अक्सर हम उन माँ-बाप को भूल जाते हैं जिन्होंने हमें जन्म दिया और पालन पोषण करके इतना बड़ा किया कि हम अपनी जिन्दगी अच्छे तरीके से बिता सकते हैं तो फिर हम अपने माता-पिता को भूल कैसे जाते हैं।

"मुख का निवाला दे, अरे जिसने तुम्हें बड़ा किया, अमृत पिलाया तुमको, जहर उनके लिए उगलना नहीं।।"

हम उन माँ-बाप को भूल जाते हैं जो खुद खाना न खा कर अपने बच्चों का पेट भरते हैं क्योंकि ये उनसे देखा नहीं जाता कि उनके सामने उनकी संतान भूखी रहे।

"सोकर स्वयं गीले में, सुलाया तुम्हें सूखे में, माँ-बाप की आँखों को भूलकर भिगोना नहीं।।"

हम उन माँ-बाप को भुला देते हैं जो खुद बिना बिस्तर के गीले में सोते हैं पर अपने बच्चों को बिस्तर पर सूखे में सुलाते हैं। दोनों समय का भोजन माँ बनाती है, तो जीवन भर भोजन की व्यवस्था करने वाले पिता को हम सहज ही भूल जाते हैं। अगर कभी ठोकर या चोट लगी तो **"ओ माँ"** ही मुँह से निकलता है। लेकिन रास्ता पार करते हुए ट्रक पास आकर ब्रेक लगाये तो **"बाप रे"** मुँह से निकलता है। क्योंकि छोटे-छोटे संकटों के लिए माँ है। पर बड़े संकट आने पर पिता ही याद आते हैं।

"माँ मुझे कोई और जन्नत का पता नहीं, क्योंकि हम माँ के कदमों को ही जन्नत कहते हैं।।"

अब मैं बस यहीं कहना चाहूँगी कि जो माता-पिता अपने बच्चों का पालन पोषण करके इतना बड़ा करते हैं और अगर वही संतान माँ-बाप को ठोकर मार दे, तो उन माँ-बाप से पूछिये उनके दिल पर क्या गुजरती होगी, ये तो सिर्फ वहीं जानते हैं इसलिए ऐसा कोई काम मत करो, जिससे माँ-बाप का सर नीचा हो, ऐसा काम करो, जिससे उनका सर गर्व से ऊँचा उठ जाए। जिससे हमारे देश और समाज दोनों का विकास होगा।

''माँ-बाप की एक दुआ जिन्दगी बना देगी, जब पड़ेगी कोई कठिनाई तो माँ-बाप की याद आएगी।''

बेटी बचाओ

कु. निशा कुमारी
बी.ए. तृतीय वर्ष

चरण सिंह और सुहासी देवी का परिवार बेहद सुखी और इज्जतदार परिवार के रूप में जाना जाता था। पाँच बेटियाँ एक बेटा से भरा पूरा परिवार था। सारे बच्चे पढ़े-लिखे और अपनी अपनी जिन्दगी में व्यस्त थे। पाँचों बेटियों की शादी हो गयी थी सभी अपनी ससुराल में खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही थीं। एकमात्र बेटा राजवीर अभी अविवाहित था जल्द ही राजवीर की भी शादी हो गई। राजवीर की शादी एक शिक्षिका से हुई थी। चरण सिंह और सुहासी देवी अपने

बेट राजवीर की शादी में बहुत दान दहेज चाहते थे किन्तु राजवीर पढ़ा-लिखा था उसने बिना दान दहेज के शादी की। राजवीर और निहारिका दोनों सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे थे। कुछ समय बाद दोनों के घर एक नन्ही परी ने जन्म लिया दोनों का जीवन और खुशहाल हो गया। चरण सिंह और सुहासी देवी को कोई खास खुशी नहीं हुई। वो अपने एकमात्र बेटे से पोता चाहते थे। कुछ समय बाद दूसरी सन्तान की प्राप्ति का समय आ गया। अब राजवीर के माता पिता ने साफ-साफ कह दिया था कि उन्हें दूसरी पोती नहीं चाहिए इसलिए वो किसी अच्छे अस्पताल में जाएँ चेक कराएँ और अगर बेटी हो तो गर्भ में ही मरवा दे यानी की ऑपरेशन करा दे। जितना भी पैसा लगता है लगाएँ उन्हें उस से कोई फर्क नहीं पड़ता बस उन्हें पोता चाहिए। बेटे और बहु को यह बात नागवार गुजरी। दोनों ने माता-पिता को साफ कह दिया की वो चेक नहीं कराएंगे जो भी हो बेटा या बेटी उन्हें मंजूर होगा। बच्चे तो भगवान की देन होते हैं उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा अगर भगवान उन्हें एक और बेटी दे देंगे।

सुहासी और चरण सिंह किसी की बात मानने को तैयार नहीं थे। सुहासी ने कहा कि यह सब चोचले पहला हुआ करते थे पहले यह सब मशीनें नहीं थी। होती तो कोई भी पाँच-पाँच बेटियाँ नहीं करता। सुहासी अपनी बात पूरी करने वाली ही थी कि राजवीर ने बात काटते हुए कहा माँ अगर ऐसी मशीन होती तो क्या आप मेरी बहनों को मरवा देती।

सुहासी देवी ने गहरी चुप्पी साध ली, बोलो माँ जवाब दो माँ राजवीर बार-बार पूछा रहा था, माँ ने गहरी सांस लेते हुए गुस्से में कहा बेटा मेरी बेटियों को छोड़ो, मेरे बेटा, मैं नहीं चाहती थी कि तुम्हारा कोई बेटा न हो बेटा में तुम्हारा वंश चलते हुए देखना चाहती हूँ। बेटा बुढ़ापे की लाठी होता है, बेटियों से घर नहीं चलता राजवीर बात को समझो बेटा दिल ने नहीं दिमाग से सोचो। माँ जी आपने तो पाँच-पाँच बेटियों को जन्म दिया था तो आप मुझे क्यूँ रोक रही है बहु ने बड़ी उत्सुकता से सवाल किया। तो क्या बहु घर में ढेर लगा दो लड़कियों का सुहासी ने गुस्से में कहा।

राजवीर जाओ बहु को लेकर जाओ चैक कराओ बेटा है तो ठीक और बेटी है तो हमें नहीं चाहिए। पापा आप भी ऐसी बात कर रहे हैं, आप तो कम से कम ऐसी बात न कहें बहुत ही दुखी स्वर में राजवीर ने अपने पिता से कहा- बस बेटा हमें ना सिखाओ अगर हमें पोता नहीं दे सकते तो हमारा घर छोड़ दो, चले जाओ यहाँ से तुम्हारे बूढ़े माँ-बाप रह लेंगे तुम्हारे बिना। पापा हम अपने बच्चे को नहीं मरवाएंगे हम आपका घर छोड़ देंगे। ओह तो जो आया भी नहीं है इस दुनियाँ में बेटा उसके लिए अपने माता-पिता को छोड़ दोगे। तो माँ जी आप वैसे उसे मरवा सकती हैं जिस ने अभी जन्म भी नहीं लिया। आप उस नन्ही जान से यह हक नहीं छीन सकती माँ जी। उसे अपनी जिन्दगी जीने का हक है माँ जी बहु ने तपाक से कहा।

बेटा तुम हमारी बात कभी नहीं मानते माता-पिता दोनों ने बहुत दुखी हो कर कहा। पापा, माँ आप तो जानते हैं कि मैंने अपनी सारी बहनों से कितना प्यार पाया है मैं वो प्यार अपनी बच्चियों को देना चाहता हूँ मुझ से ज्यादा दीदीयों को आप की चिंता होती है इसलिए पापा में चाहता हूँ कि मेरी बेटी ही हो।

माता-पिता की नाराजगी के बावजूद राजवीर और निहारिका ने चैक नहीं कराया। कुछ समय बाद एक और नन्हीं परी ने उनके घर जन्म लिया कुछ समय बाद तीसरी बेटी ने जन्म लिया तीनों के नाम सत्यम, शिवम और सुन्दरम रखा गया। दादा और दादी तीनों पोती को कुछ खास पसंद नहीं करते थे। कुछ समय बाद उन्हें एक पोते की भी प्राप्ति हुई जिसका नाम सत्यार्थ रखा गया। बड़े होने पर सत्यम डॉक्टर, शिवम अध्यापिका और सुन्दरम एक वकील बनी। तीनों बेटियों ने माता-पिता का सर गर्व से ऊँचा कर दिया। सुहासी देवी मोहल्ले की औरतों के बीच बैठी हुई अपनी पोतियों की तारीफों के पुल बांध रही है। पता है मेरी सत्यम एक बहुत बड़े अस्पताल में एक बहुत बड़ी डॉक्टर है और मेरी सुन्दरम के जैसे तो कोई बहस नहीं कर सकता सारे वकील चुप हो जाते है जब मेरी सुन्दरम बोलती है और मेरी शिवम

जैसा तो कोई है ही नहीं।

शायद सुहासी देवी भूल गई है कि यह वही पोतियाँ है जिन्हें वो इस दुनिया में नहीं लाना चाहती थी। वार्तालाप में पोते सत्यार्थ का नाम नहीं है क्योंकि पोतियों ने सब को पीछे छोड़ दिया है और दिखा दिया है कि लड़कियाँ किसी से कम नहीं है। न कम थी और ना कम होंगी।

भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों पर वैश्वीकरण का प्रभाव

मधु कुमारी
बी.एड. प्रथम वर्ष

अर्थशास्त्र की दृष्टि से देखें तो वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ होता हैं एक देश की अर्थव्यवस्था का विश्व के सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ व्यापार। या यूँ कहें तो वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। इसके अन्तर्गत व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, पूंजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एवं अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का एकीकरण आता हैं।

टॉम जी. पामर के अनुसार, ''वैश्वीकरण सीमाओं के पार विनिमय पर राज्य प्रतिबंधों का ह्रास या विलोपन और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ उत्पादन और विनिमय का तीव्र एकीकरण और जटिल विश्व स्तरीय तंत्र है।''

वैश्वीकरण का उपयोग अर्थशास्त्रियों द्वारा 1980 से किया जाता रहा है, हालाँकि 1960 के दशक में इसका उपयोग सामाजिक विज्ञान में किया जाता था। वैश्वीकरण को एक सदियों लंबी प्रक्रिया के रूप में देखा जाए तो जो मानव जनसंख्या और सभ्यता पर नजर रखती है, जो पिछले 50 वर्षों में नाटकीय रूप में प्रकट होती नजर आ रही है। आजादी की लड़ाई और राष्ट्रीयता के आंदोलनों में हमने जिस श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति को विश्व की भावी संस्कृति के रूप में पेश किया, आज वह वैश्वीकरण के कारण पश्चिमी दुनिया की जीवन शैली से प्रकाशित हो रही है। जो प्रभाव से मुक्त मूलरूप से बची है वह किसी न किसी रूप में बिक रही है और हम इस बिकने को भारतीय संस्कृति का प्रचार और भारत की प्रतिष्ठा मान बैठे हैं।

संस्कृति और मूल्यों की रचना लगातार होती है और इस रचना में अनेक शक्तियाँ चाहे वह आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि हो, अपना निर्णायक असर डालती हैं। कहीं ऐसा न हो कि भारत की अमरता, इसका सनातन सत्य, इसकी सदाप्रवाही पवित्र संस्कृति, इसके संत, इसका मातृभाव, इसकी लौकिक-पारलौकिक प्रेरणाएँ, आकाँक्षाए, इसकी दिग्विजया परम्परा, इसकी सर्वमंगलमयी प्रतिभा-प्रतिमा, इसकी विश्वमंगलमयी भक्ति, इसका ज्ञान और कर्म अपना अधिष्ठान, अनुष्ठान और अभीष्ट त्याग कर केवल 'पेट' में ऐसे समा जाएँ कि प्राणों की महत्ता और सत्ता बेमानी हो जाए।

किसी भी चीज के दो तथ्य होते हैं एक अच्छा दूसरा बुरा। इसी प्रकार वैश्वीकरण के भी भारतीय संस्कृति एवं

मूल्यों पर अच्छे और बुरे दोनों प्रभाव पड़े हैं।

हमारा देश भारत विविधता में एकता वाला देश है। यहाँ पर विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। सभी की अपनी-अपनी भाषाएँ, रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज, वेद-पुराण एवं साहित्य है। सब अपनी संस्कृति की पहचान बनाए हुए हैं। संस्कृति के प्रकाश में ही भारत अपने वैयक्तिक और वैश्विक जीवन मूल्यों की रक्षा कर सकता है। भारत की एक आदर्श परम्परा थी जिसका पालन राजतन्त्र ने भी किया और लोकतन्त्र ने भी। आज पूरा देश जिस सांस्कृतिक दौर से गुजर रहा है उसके पदचाप में संस्कृति की कोई अनुगूँज नहीं सुनाई देती है। एक तरफ सरकार कहती है कि उसे सांस्कृतिक मूल्यों का भान है और उसके क्षरण को रोकने के लिए कार्यबद्ध है किन्तु दिन-प्रतिदिन सांस्कृतिक मूल्य एवं आदर्श नष्ट होते जा रहे हैं। देश भर में संस्कृति के नाम पर अनगिनत संस्थाएँ बनीं, किन्तु संस्कृति उनसे दूर-दूर ही बनी रही। संस्कृति एक ऐसा फलक है, जिसमें आदमी और भगवान दोनों शरण पाते हैं।

वैश्वीकरण के कारण न प्राचीन संस्कृति बची है न आधुनिकता पूरी तरह आई है। आज हम न पूरब के हैं न पश्चिम के। आज हम एक अजीबो-गरीब संस्कृति के मोहपाश में कैद होते जा रहे हैं। गर्व से कहों हम भारतीय हैं, दोहराने में भी झिझक होने लगी है। यद्यपि भारतीय संस्कृति का प्राचीन स्वरूप 'विविधता में एकता' सुरक्षित है तथापि एकता के आधारभूत रंग धूमिल पड़ गए हैं और विविधता के सतही रंग उभर कर हमारे समक्ष आ गए हैं। हम भारतवासी अपनी भाषा, रहन-सहन, खान-पान और वेशभूषा में भले ही अलग-अलग हों परन्तु हमारी संस्कृति एक ही है। आज जो कुछ भी मूल्य बोध के स्तर पर हमारे पास है, वह हजारों वर्ष की जीवन शैली की देन है। किसी भी जीवन की पहचान उसके सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों से होती है। फिर भी वैश्वीकरण के भारतीय अर्थव्यवस्था तथा सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों पर निम्न प्रभाव पड़े हैं। यदि भारत पाश्चात्य संस्कृति के इन सकारात्मक पहलू को अपनाये तो हमारा देश और हमारी संस्कृति भी काफी विकसित होगी। ये पहलू निम्न हैं

1. पहनावा सबसे पहले अगर हम पहनावे की बात करें तो जहाँ भारतीय संस्कृति का पहनावा सूट, साड़ी, कुर्त्ता-पाजामा आदि हैं, तो वहीं पाश्चात्य संस्कृति का पहनावा पैंट-शर्ट, स्कर्ट-टॉप आदि हैं। जब कोई भारतीय विदेश जाता है तो वह वहाँ के पहनावे की ओर आकर्षित होते हैं और इस पहनावे को अपना लेते है तो इसमें पाश्चात्य संस्कृति का क्या दोष?

2. गहरी जड़ों वाले परिवारिक मूल्य भारतीय संस्कृति का हिस्सा है। माता-पिता बच्चों को बड़ा करने का अपना फर्ज पूरा करते हैं, फिर भी बच्चे बड़े होने पर परिवार के बड़ों का ख्याल रखते हैं। भारतीय संस्कृति में शादी एक पवित्र बंधन हैं लेकिन जब हम एक समुदाय से दूसरे समुदाय में शादी करते हैं, तो पूरा समाज इसके विरोध में हो जाता है, जबकि पश्चिमी सभ्यता के लोग ऐसा नहीं करते हैं।

3. साफ-सफाई की आदत हम में से ज्यादातर लोगों की आदत यह है कि हम कूड़े को कूडेदान में डालने की बजाए यहाँ वहाँ फेंक देते हैं, लेकिन हम वैश्वीकरण के कारण ही तो यह देख पाते है कि पश्चिमी सभ्यता के लोग अपने आस-पास बिल्कुल सफाई रखते है और सड़क, पार्क या सार्वजनिक स्थान पर एक कागज का टुकड़ा भी नहीं फेंकते हैं।

4. चीजें व्यवस्थित रखना विश्व के कुछ देशों में विभिन्न प्रकार का कूड़ा जैसे प्लास्टिक, रसोई का कचरा आदि, कचरे की अलग-अलग थैलियों में डाला जाता है। फिर इन्हें घर के बाहर रखा जाता है जिससे संबंधित संग्राहक उसे उठा लें लेकिन भारत में खाली पड़ी जमीन पर कचरा फेंकना एक आम बात है। इसलिए हमें साफ-सफाई का भाव उनसे सीखना चाहिए।

5. यातायात के नियम भारतीय लोग यातायात के नियम हमेशा तोड़ते रहे हैं, लेकिन हम यह देखते हैं कि विश्व के कुछ देश पुलिस की गैर-मौजूदगी में भी यातायात के नियमों का सख्ती से पालन करते है। अत: हमें उनसे यह सीखना चाहिए।

6. परिवहन हमें विश्व के अन्य देशों से ही वैश्वीकरण के अच्छी परिवहन प्रणाली लाने का प्रयास करना चाहिए। तथा हम धीरे-धीरे इस दिशा में प्रयास भी कर रहे हैं।

7. व्यवसायिकता वैश्वीकरण के कारण ही हम धीरे-धीरे व्यवसायिक बन रहे हैं। जो मनुष्य अपने पेशेवर जीवन में अपनी निजी भावनाएँ, परेशानी और व्यवहार को दखल नहीं देते। इसके साथ पश्चिमी सभ्यता के लोग समय की बहुत कद्र करते हैं।

इसलिए, आगे बढ़ते हुए संस्कृति को सहेज कर रखना गलत नहीं है, पर हमें समय के साथ बेहतरी के लिए बदलना चाहिए।

इसके अलावा भी वैश्वीकरण के कुछ और अच्छे प्रभाव हैं, जिन्हें की हमें अपनाना चाहिए, वो निम्न हैं:-

1. वैश्वीकरण के कारण भारत भी पश्चिमी सभ्यता के प्रतिस्पर्द्धात्मक दुनिया में अपना कदम रख पाया है। अब भारतीय भी बिना संकोच किए हुए आगे बढ़ रहे हैं।
2. वैश्वीकरण के कारण ही आज औरतें भी अपने विचार प्रकट कर सकती हैं और घर की चारदीवारी से बाहर निकल पाई हैं। इसके अलावा पश्चिमी सभ्यता के कोई और अच्छे प्रभाव नजर नहीं आते।
3. वैश्वीकरण के कारण ही भारत आज विश्व की अर्थव्यवस्था से प्रतिस्पर्द्धा कर रहा है। अपने द्वारा बनाई गए वस्तुओं को विश्व की अर्थव्यवस्था में लाभ कमाने की दृष्टिकोण से उतार रहा है।
4. वैश्वीकरण के कारण ही तो आज भारत द्वारा बनाए गए डिजाईनर कपड़े, चूड़ी आदि वस्तुओं की विदेशों में भी माँग बढ़ी है।
5. वैश्वीकरण के कारण भारत विज्ञान ओर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी आगे बढ़ा है।

उपरोक्त विशेषताओं के होते हुए भी वैश्वीकरण के भारतीय अर्थव्यवस्था के सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों पर निम्न बुरे प्रभाव भी पड़े हैं-

1. वैश्वीकरण के कारण ही आज चीन द्वारा बनाई गई प्रत्येक वस्तु भारतीय बाजारों पर अपना कब्जा जमाए हुए है। इसके कारण आज भारतीय हस्तकरघा उद्योग बन्द होने के कगार पर पहुँचे हुए हैं। अत: भारतीयों को इससे अगाज होना चाहिए।
2. वैश्वीकरण के कारण भारतीय पश्चिमी सभ्यता की नकल करके अब संयुक्त परिवार की बजाए एकल परिवार में रहना ज्यादा पसंद करते हैं। बच्चे अपने रिश्ते तथा रिश्तेदारों को भी भूलते जा रहे हैं।
3. इसी कारण आज की युवा पीढ़ी केवल अपने बारे में सोचती है और वह बहुत स्वार्थी हो गई है।
4. आज की युवा पीढ़ी परिवार के साथ समय व्यतीत करके आनंद लेने की बजाए दोस्तों के साथ समय व्यतीत करना अधिक पसंद करती है। दोस्तों के साथ डिस्को, पब, शराब, सिगरेट आदि पीना जीवन शैली के अंग बन गए हैं।
5. जंक फूड जैसे मैगी, चाऊमीन, नूडल्स, बर्गर, पिज्जा हमारे रोज के खाने में शामिल हो गए है, जिससे की हमें तरह-तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ रहा हैं।

6. लोग वैश्वीकरण के कारण पश्चिमी सभ्यता की नकल कर अपने माता-पिता को बोझ समझने लगे हैं और उन्हें वृद्धाश्रम में रहने के लिए मजबूर कर देते हैं।
7. भारतीयों की दिनचर्या से इस कारण प्रात:काल का व्यायाम, योग आदि खत्म हो गया है।
8. घर में दादा-दादी ना होने के कारण बच्चों में संस्कार का अभाव है, उन्हें सही-गलती में अन्तर नहीं मालूम, अपने से बड़े का आदर करना भूल रहे हैं तथा वास्तविकता से दूर जा रहे हैं।

वैश्वीकरण के कारण आज के समाज में बहुत ही परिवर्तन हुआ है। बच्चों द्वारा जंक फूड का सेवन अधिक हुआ है, जो सेहत के लिए हानिकारक है जिसके चलते छोटे बच्चे गंभीर रोगों से ग्रस्त हो रहे हैं। लोग रात में देर से सोते है तथा सुबह देर से उठते हैं, जिस कारण लोग सुबह का योगा, टहलना सब भूलते जा रहे हैं जिस कारण आज भारतीय भी ऐसे रोगों से घिरते जा रहे हैं, जिनका नाम पहले केवल पश्चिमी देशों में सुना जाता था। अब संयुक्त परिवार ना होने के कारण बच्चे अपने को तन्हा महसूस करते हैं, तथा गलत आदतों को शिकार हो जाते हैं। ये सब बुराई भारत में वैश्वीकरण के कारण ही आई है।

अत: हम कह सकते है कि वैश्वीकरण के भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों पर अच्छे एवं बुरे दोनों प्रभाव पड़े हैं। ना तो हम इसकी आलोचना कर सकते और ना ही हम इसका पूरी तरह तारीफ कर सकते है। फिर भी वैश्वीकरण के कारण भारत को बहुत कुछ सीखने को मिला है, जिसे हम नजरअंदाज नहीं कर सकते।

भारतीय पत्रकारिता

कु. अंजली नागर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

भारत में पहला छापाखाना कलकत्ता में 1755 में अस्तित्व में आया और यह बड़ी दिलचस्प बात है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी एवं उसके अंग्रेज कर्मचारियों के बीच एक संघर्ष छिड़ गया। तब पत्रकारिता का 'श्री गणेश' भी इस शहर से अंग्रेज और ईसाई मिशनरियों द्वारा किया गया। इस प्रकार अहिन्दी भाषी क्षेत्र से प्रकाशित होने वाला पहला समाचार-पत्र 'कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' या 'हिकीज बंगाल गजट' था। यह एक साप्ताहिक पत्र था जो अंग्रेजी भाषा में था। इस प्रकार भारत में पहले अंग्रेजी के साप्ताहिक पत्र से पत्रकारिता की शुरूआत एक अंग्रेज सम्पादक जेम्स आगस्टस हिकी ने की। उनके इस समाचार-पत्र का प्रथम प्रकाशन 29 जनवरी, 1780 ई. को हुआ। इस समाचार-पत्र में सम्पादक जेम्स आगस्टस हिकी ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रशासन एवं अंग्रेजी के भ्रष्टाचार का पूरी तरह से पर्दाफाश किया था। इससे कुपित होकर तत्कालीन गवर्नर वारेन हेस्टिंग्ज ने इस पत्र को बन्द कराकर हिकी को जेल में डाल दिया। तब समाचार-पत्रों और पत्रकारों के स्वाभिमान की रक्षा के लिए कोई नियम कानून नहीं थे लेकिन हिकी ने हिम्मत नहीं हारी, उन्होंने इण्डिया गजट (1780 ई.), कलकत्ता गजट (1784 ई.), बंगाल जनरल (1785 ई.) तथा इण्डियन वर्ल्ड पत्र भी निकाले।

हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय जनजागरण की कहानी है। यह जनजागरण राष्ट्रीयता के विकास, राष्ट्रीय चेतना के विकास, समाज-सुधार और अंधविश्वास की जकड़न से एहसास की कहानी है। देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दुख अवस्था से मुक्ति की आवश्यकता को महसूस करने का जो मानस बनता गया उसके साथ देश

में पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास होता गया। हिन्दी पत्रकारिता ने स्वतन्त्रता-आन्दोलन के साथ ही सामाजिक चेतना और समाज को गति दी, शक्ति दी उसके आधार को व्यापक बनाया तथा तत्कालीन संघर्ष-संबंधी योजनाओं को सैद्धान्तिक रूप से प्रस्तुत करने के साथ ही जनमानस को अनेक खबरों के प्रति सचेत किया। हिन्दी पत्रकारिता का मुख्य स्वर शुरू से ही राष्ट्रीय एवं सार्वदेशिक रहा है। हिन्दी पत्रकारिता आरम्भिक दिनों में भी क्षेत्रीय या संकुचित दायरे में नहीं सिमटी।

देश में पत्रकारिता के बढ़ते महत्व को आजादी की जंग के समय भी आँका जा चुका है। उस समय जन-जन में देश की आजादी के प्रति अलख जगाने का काम पत्र और पत्रकारों ने ही किया था। उस समय समाचार-पत्र ही आजादी के दीवारों की अभिव्यक्ति का मुख्य साधन थे। तत्कालीन परिस्थिति से प्रभावित होकर प्रसिद्ध उर्दू शायर अकबर इलाहाबादी ने ठीक ही कहा था

खीचों न कमानों को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।।

पत्रकारिता के बढ़ते महत्व को देश के महापुरुषों महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और इन्दिरा गांधी आदि ने भी स्वीकार किया था। पत्रकारिता को (प्रेस), भारतीय लोकतन्त्र में चौथा स्तम्भ कहा गया।

हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास

अंग्रेजी पत्रकारिता की शुरूआत की तरह हिन्दी पत्रकारिता का श्रीगणेश भी कलकत्ता से हुआ। सन् 1931 में श्री ब्रजेन्द्रनाथ बंधोपाध्याय ने राजा राधाकान्तदेव के पुस्तकालय से एक पुराने पत्र की प्रतियाँ, खोज लीं। यह पत्र था 30 मई, सन् 1826 को प्रकाशित 'उदन्त मार्तण्ड' तथा इसका प्रकाशन श्री युगलकिशोर शुक्ल के सम्पादन में कलकत्ता स्थित कोल्हूटोला की अमड़ाताला नामक गली की सत्तर नम्बर वाली हवेली से किया गया था। शुक्लजी मूलत: कानपुर निवासी थे। पत्र की भाषा एकदम खालिस हिन्दी थी।

हिन्दी भाषा का प्रथम समाचार-पत्र प्राय: 'बनारस अखबार' था। सन् 1854 ई. में निकलने वाले इस दैनिक समाचार-पत्र के संचालक थे राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' तथा सम्पादक थे श्री 'गोविन्द रघुनाथ थन्ते'।

हिन्दी पत्रकारिता : कालक्रम निर्धारण

हिन्दी पत्रकारिता का काल निम्न प्रकार निर्धारित किया जा सकता है

1. उदय काल 1826 ई. से 1867 ई. तक।
2. भारतेन्दु युग 1867 ई. से 1900 ई. तक।
3. तिलक अथवा द्विवेदी युग 1900 ई. से 1920 ई. तक।
4. गांधी युग (छायावाद-प्रगतिवाद युग) 1920 ई. से 1947 ई. तक
5. स्वातन्त्रोत्तर युग 1947 ई. से आज तक।

कालक्रमानुसार हिन्दी पत्रकारिता के उद्‌भव एवं विकास का सूक्ष्म विवेचन इस प्रकार किया जा सकता है

1. उदय काल इस काल की समयावधि 1826 ई. से 1867 ई. तक निर्धारित की गई है। पत्रकारिता के इस उदय

काल में प्रथम हिन्दी पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' (1826 ई.) के अलावा 'बनारस अखबार', 'बंगदूत' आदि समाचार-पत्र निकले, जिनके सम्पादक क्रमशः पं. युगल किशोर शुक्ल, गोविन्द, रघुनाथ थन्ते और नीलरतन हालदार थे। इसके अलावा इस काल में ही 'समाचार सुधावर्षण' कलकत्ता से प्रथम दैनिक हिन्दी पत्र के रूप में श्यामसुन्दर सेन ने निकाला।

2. भारतेन्दु युग वस्तुतः हिन्दी जगत में भारतेन्दु हरिशचन्द्र का उदय एक क्रान्तिकारी घटना थी। निश्चयतः हिन्दी पत्रकारिता का क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है। यूँ तो उनसे पहले ही नाना प्रकार के पत्र-पत्रिकाएँ अल्पजीवी बन कर रहे गये या फिर आंग्ल सत्ता-कोप के शिकार। मगर सौभाग्यवश इसके तत्कालीन पालक-पोषक इतने निर्भीक निडर, साहसी, देशभक्त और जान हथेली पर लेकर चलने वाले तथा अपने कर्त्तव्य-पक्ष पर डटे रहना जानते थे। इनमें भी अग्रणी सिद्ध हुए थे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रमाण 28 मार्च, सन् 1867 ई. को काशी में प्रकाशित और स्वयं भारतेन्दु द्वारा सम्पादित 'कवि वचन सुधा' का उनका प्रतिज्ञा-पत्र। यह प्रथम मासिक पत्रिका थी जो बाद में पाक्षिक हो गई। इसके पश्चात् 1873 ई. में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन (जो बाद में 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के नाम से परिवर्तित हो गई) मासिक बनारस। 1874 ई. में बाल बोधनी नाम से नारी शिक्षा हेतु निकली मासिक काशी!

इसी समय के कुछ अन्य प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाएँ और सम्पादक थे

- हिन्दी प्रदीप (बालकृष्ण भट्ट) 1877 ई. मासिक, इलाहाबाद।
- आनन्द कादम्बिनी (चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमधन') 1881 ई. मासिक, मीरजापुर।
- ब्राह्मण (पं. प्रतापनारायण मिश्र) 1883 ई. मासिक, कानपुर।
- "भारतेन्दु का स्थान हिन्दी पत्रकारिता में उत्तम है। उन्होंने हिन्दी के प्रत्येक अभाव को दूर करने की भरपूर चेष्टा की।"

देश की तत्कालीन परिस्थितियों और अवस्थाओं का इन पत्रों में जितना यथार्थ-चित्र मिलता है, तत्कालीन आंग्ल सत्ता का जिस साहस और निडरता से इन्होंने पर्दाफाश किया है, स्वदेश-प्रेम और राष्ट्रीयता का जितना अधिक प्रचार-प्रसार करके इन्होंने जनमत तैयार किया है, वह वास्तव में हर प्रकार से असाधारण और स्तुल्य है।

3. तिलक अथवा द्विवेदी युग इस युग को, 'जागरण सुधार काल' कहा जा सकता है। हिन्दी पत्रकारिता का विशिष्ट और सच्चा विकास हुआ द्विवेदी युग में आकर मुख्यतः द्विवेदी जी का विशेष नेतृत्व मिलने के कारण इसको 'द्विवेदी युग' भी कहा गया, जो उचित ही है।

जनवरी सन् 1900 में प्रकाशित होने वाली सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन से द्विवेदी युग का विकास होता है, इसको संरक्षण मिला नागरी प्रचारिणी सभा जैसी महत् संस्था से, इसके सम्पादक मण्डल में बाबू श्यामसुन्दर दास, राधाकृष्ण दास, जगन्नाथ 'रत्नाकर' लेखक-पत्रकार सम्मिलित थे। सबसे महानतम्-विभूति महावीर प्रसाद द्विवेदी थे जिन्होंने सन् 1903 ई. से इसका सम्पादन-कार्य आरम्भ किया। हिन्दी जगत को जितनी साहित्य-सम्पदा और श्रेष्ठ लेखक इस पत्रिका और द्विवेदी जी की विरद् कृपा से मिले, जितना अधिक और शुद्ध भाषा रूपी हिन्दी मिली, जितना अधिक हिन्दी और हिन्दी-साहित्य का प्रचार-प्रसार तथा जन-प्रेम मिला, उतना अन्य किसी से नहीं।

भारतीय इतिहास में यह कालखण्ड ब्रिटिश शासन का दमनकाल था। अंग्रेज अपनी कूटनीति और दमन से भारतीयों

की राष्ट्रीय भावना को सदैव के लिए दबा देना चाहते थे। अनेक काले कानूनों को ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों के लिए पास किया। जनता शोषित और दलित थी। आर्थिक दृष्टि से भी भारत का शोषण हो रहा था। देश का धन अबाध गति से बाहर जा रहा था। इस कालखंड को गोपालकृष्ण गोखले और बालगंगाधर तिलक जैसे महान् लोगों ने नेतृत्व प्रदान किया। 'स्वराज और स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार' के नारे आए। तिलक जी 'केसरी' पत्र का सम्पादक-कार्य कर रहे थे। उक्त शीर्षक के लिए उनको पत्रकार-शिरोमणि की उपाधि दी गयी थी।

द्विवेदी काल के साहित्यकारों ने देश की दुर्दशा के साथ राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने की बातें की, आत्मोत्कर्ष का पाठ पढ़ाया। गोपालकृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानंद, पं. मदनमोहन मालवीय आदि नेताओं और नि:स्वार्थ समाज सेवियों ने देशवासियों के स्वाभिमान को जगाने तथा अपनी गौरवशाली परम्पराओं के प्रति और निष्ठावान बनाने का कार्य किया, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बल दिया। पत्रों के माध्यम से अनेक माँगे ब्रिटिश सरकार से की गयीं। अनेक सुझाव दिए गए। सब इन पत्र-पत्रिकाओं से ही संभव हुआ। 10वीं शती के अंत तक, पत्रकारिता का केन्द्र कलकत्ता रहा, परन्तु 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ से भारतीय राजनीति के क्षेत्र में बालगंगाधर तिलक का प्रभाव पड़ने लगा था। उन्होंने 1908 ई. से अपने केसरी पत्र का हिन्दी संस्करण हिन्दी-केसरी नाम से प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। गणेशशंकर विद्यार्थी उनके समर्थक थे।

20वीं शती के प्रथम चरण में हिन्दी जगत में दो प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती थी

1. राजनीतिक, 2. साहित्यिक

1900-1918 ई. तक प्राय: प्रत्येक वर्ष कोई न कोई पत्रिका अवश्य प्रकाशित हुई।

राजनीतिक पत्रिकाएँ

1. **हितवासी** 1904 ई. कलकत्ता, सम्पादक रूद्रदन्त शर्मा और रखाराम गणेश देउस्कर।
2. **नृसिंह** 1907 ई. साप्ताहिक, सम्पादक-अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।
3. **अभ्युदय** 1907 ई. साप्ताहिक, सम्पादक पं. मदनमोहन मालवीय।
4. **प्रताप** 1913 ई. साप्ताहिक, कानपुर, सम्पादक गणेशशंकर विद्यार्थी।

'कलकत्ता समाचार' 1914 ई. और **'विश्वामित्र'** 1918 ई. में प्रकाशित हुए।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रिकाएँ

1. **सरस्वती** 1900 ई. मासिक, इलाहाबाद। प्रारम्भ में इसका सम्पादन काशी में होता था।

   1903 ई. में पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी इसके सम्पादक हुए।
2. **सुदर्शन** 1902 ई. मासिक, जयपुर, संपादक-चन्द्रधर शर्मा गुलेरी।
3. **समालोचक** 1902 ई. मासिक, जयपुर, संपादक चन्द्रधर शर्मा गुलेरी।
4. **इंदू** 1909 ई. मासिक, काशी, संपादक अम्बिका प्रसाद गुप्त।

4. गाँधी युग (छायावाद-प्रगतिवाद युग) यह युग मुख्यत: दो-दो महायुद्धों के मध्य का था जबकि विश्व-पटल पर अनेकानेक परिवर्तन और क्रान्तिकारी आन्दोलन हो रहे थे। पत्रकारिता स्वच्छ और सुघड़ होने के साथ-साथ

महत्वपूर्ण और जनप्रिय होती जा रही थी। इस काल के पत्र-पत्रिकाएँ साहित्यिक, जनप्रिय और जनवाणी को उद्घोषित करने वाले थे।

इस कालखंड में पत्रकारिता का विकास और अधिक हुआ। साहित्य की नयी प्रवृत्तियाँ, उसमें होने वाले प्रयोग और नूतन दृष्टिकोण सबसे पहले पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही सामने आए। पुरानी पत्रिकाओं के साथ-साथ अनेक नयी पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुई।

इस काल में कुछ साहित्यिक पाक्षिक पत्र भी निकले जिनका साहित्यिक दृष्टि से विशेष महत्व है। सभी गतिविधियों का इनमें समावेश रहता था।

इस युग की साहित्यिक पत्रिकाओं में 1922 ई. में 'माधुरी', सम्पादक मुंशी प्रेमचन्द, निराला जी और शिवपूजन सहाय ने किया।

1903 ई. में 'हंस' संपादक मुंशी प्रेमचन्द। अन्य पत्र-पत्रिकाएँ चाँद, प्रभा, सुधा, विशाल भारत, मौजी, आदर्श, इन्दु श्री शारदा, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सम्मेलन पत्रिका आदि।

विशाल भारत पं. बनारसीदास चतुर्वेदी।

1923 ई. में 'मतवाला' साप्ताहिक, कलकत्ता। यह हिन्दी का पहला हास्य-व्यंग प्रधान पत्र था जिसका संपादन निराला जी ने किया।

1921 ई. में 'हिन्दी नवजीवन' अहमदाबाद, सम्पादक- महात्मा गांधी थे। यह राजनीतिक और सामाजिक पत्र था।

1921 ई. में 'देश' पटना, सम्पादक डॉ. राजेन्द्र यादव। यह राजनीतिक पत्र था।

'कर्मवीर' जबलपुर से इसके संरक्षक और सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी तथा माघवराव सप्रे थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ-साथ समाज के जागरण का सन्देश पहुँचाना, अन्धविश्वास, सड़ी-गली परम्पराओं जाति एवं धर्मगत संकीर्णताओं तथा नारी के प्रति सामन्तवादी नजरिये पर प्रहार करना आदि कार्य हिन्दी पत्रकारिता ने अपने हाथ में लिए।

इस काल की अन्य मासिक पत्रिकाएँ हैं

'महारथी' (1926), 'आशा' (1927), 'किसान', 'नवयुग', 'त्यागमूर्ति' (1928), 'रंगीला' (1932), 'विश्व भारती संग्राम' (1942), 'हिमालय' (1946)

5. स्वतन्त्र्योत्तर युग 1947 ई. में मिली आजादी के पश्चात् पत्रकारिता साहित्य में बहुत अधिक वृद्धि हुई, कुछ अंग्रेजी के पत्रों के भी हिन्दी संस्करण निकले। अनेक पत्र आगामी विचारों को लेकर सामने आए। पटना के इण्डियन नेशन से 'आर्यावर्त' और 1947 ई. में प्रदीप दैनिक पत्र बिहार जर्नल्स लि. से निकला।

हिन्दी के 'हिन्दुस्तान' साप्ताहिक 1950 ई. दिल्ली मुकुट बिहारी वर्मा द्वारा संपादन।

इसी प्रकार के अन्य पत्र भी निकले

'स्वतन्त्र भारत' दैनिक, 1947 लखनऊ श्री अशोक जी। 'नवजीवन' दैनिक, 1947 लखनऊ श्री सत्यदेव शर्मा। 'नवयुग' (बाद में नवभारत टाइम्स) दैनिक, 1947 दिल्ली श्री हरिशंकर द्विवेदी।

नि:संकोच होकर कह सकते हैं कि बावजूद अनेक कठिनाईयों के हिन्दी-पत्रकारिता का विकास-रथ प्रगति-पथ पर अग्रसर है और उसकी वर्तमान स्थिति उसके उज्ज्वल भविष्य की उद्घोषक है, साक्षी है। अब पत्रकारिता, हिन्दी में विश्वविद्यालयों का एक विषय बन चुका है जिस पर शोध हो रहे है, नित नए पाठ्यक्रम बन रहे है। इसे अपनाकर और प्रशिक्षण लेकर युवक-युवतियाँ रोजगार की दिशा में उन्मुख हो रहे हैं। वास्तव में, पत्रकारिता आधुनिक की विशिष्ट उपलब्धि है।

वेदप्रतिपादिता राष्ट्रे साम्मनस्यभावना

डॉ. दीप्ति वाजपेयी
एसो.प्रो.संस्कृत
कु.मा.रा.म.स्ना. महाविद्यालय, बादलपुर

राष्ट्रे जनानामधिकारिणां मध्ये सानुकूलता देशाभिवृद्धिकारिणी भवति। राजा प्रजानां विज्ञप्तिं सुहृद् भावेन सम्मानयेत्। प्रजा: पालयेत्। सर्वेषां जनानां विषये समचित्तेन वर्तेत। जीवनोपाधि: परिकल्प्य देशान्तरगमनं निवारयेत्। प्रजा: देशाभिवृद्ध्यर्थं पालनाविषयेषु सहकारिण: भवेयु:। एवं पस्परसहकारेण राज्ये आतंका न विद्यन्ते। शान्ति: विलसति।

सं वो मनांसि संव्रता समाकूतीर्नमामसि।
अमीये विप्रतास्थान् तान् वः संनमयामसि॥

अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनुचित्तेभिरेत मम।
वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्त्मान एत॥

अथर्व.कां.3 सू.8 मं.5, 6

एवं राजा एकमनस्का: भवेमेति, विरूद्धभावसहितैस्सह मिलित्वा गच्छाम: इति, समानमनस्का:, समानसंकल्पसहिता: चरेमेति जनान् वदति। अपि च

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञानमरणेभिः।
संज्ञानाविश्ना युवामिहास्मासु नियच्चतम्॥
संजानामहै मनसा संचिकित्वा मा युष्महि मनसा दैव्येन।
मा घोषा उत् स्थुर्बहुले विनिर्षते मेषु सप्तदिन्द्रस्याहन्यागते॥

अथर्व. कां.7 सू.52 मं.1, 2

आधुनिकसमाजे सर्वेषामनर्थानां, समुद्भवकारणानि स्वार्थ:, द्वेष:, लोभ:, अहंकार:। मनसि सुहृद्भावराहित्यमेव एतेषां अवलक्षणानामवकाश: भवति। आधुनिककाले गृहे, समाजे, राष्ट्रे साम्मनस्य: लोपत्वात् गृहव्यवस्था छिन्नाभिन्ना भवति। राष्ट्रे, समाजे च पुरोगति: न विद्यते। कश्चित् सहृदय: कदाचित् सर्वजनहितकारि चिन्तनं करोति चेत्, सर्वेषामंगीकारेणैव तदाचारार्हम्। श्रेयोदायका अपि सर्वजनामोदेन विना सफलतां यान्ति। अपि च निरर्थका:, निष्फला: भवन्ति। अत्र अहंकारममकाराणां प्राबल्यं विशदमेव। अर्थात् लक्ष्यसाधने अथवा अभिवृद्धये ऐकमत्यं, सहकार:, साम्मनस्यम् अत्यावश्यकम्।

यदा जनः सहृदयः भवति तदा सः अन्येषामभिप्रायान् सम्मानयति।

साम्मनस्यम् प्रकटीकरोति। विभेदाभावत्वात् अभिवृद्धि:, योजनानां सफलता: शीघ्रतरा: भवन्ति। सर्वेषां सुखजीवनाय, विश्वशान्तये वेदेषु साम्मनस्यस्य वर्धका: उपदेशा:, प्रार्थना: बहुप्रकारा: सन्ति।

इति विना युद्धैः वर्तेरन्निति, स्वैः, परैस्सह ऐकमत्येन वर्तेरन्निति राज्ञ उपदेशः। बहुलवधानां कारणं कलहो मा भूदिति अर्थः। यदा जनाः मिथः कलहं कुर्वन्ति, तदा राज्ञां दृष्टिः कलहनिवारणे केन्द्रीकृता भवति। तदा अभिवृद्धिः कुण्ठिता भवति। आधुनिककाले विना कारणं कलहाः संभवन्ति। एष वेदोपदेशः अद्यतनकाले सर्वैः अवश्यमनुसरणीयः। जनेषु कलहकारणं भवति ईर्ष्या।

अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहतः पृथक्।
एतामेतस्येर्ष्यामुद्याग्निमिव शमय॥

अथर्व.कां.7 सू.45 मं.2

इति उपदिशति। यथा अग्निः सर्वं दहति तथैव ईर्ष्याग्निरपि जनं दहति। यथा जलं अग्निं शमयति तथैव जनः, परस्परस्नेहभावं वर्धयितुं, ईर्ष्याग्निं शमयेत्।

साकं सजातैः पयसा सह एध्युब्ज एनां महते वीर्याय।
ऊर्ध्वो नाकस्याधिरोहविष्टपं स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति॥

अथर्व. कां.11सू.1 मं.7

सजातीयैस्सह अन्नपानादीन् संविभज्य सुखिनः भवेयुः। अनेन ईर्ष्या न समुद्भवति। अन्योन्यं उद्धारेण जनः सुखी भवति। प्रजा अपि राज्ञा साम्मनस्यं प्रकटयन्ति, राजापि जनेषु सखिभावेन, क्रोधरहितचेता भवेदिति एवं वदन्ति–

यथादित्या वसुभिः संबभूवुर्मरुद्भिरुग्रा अहृणीयमानः।
एवात्रिणामन्नहृणीयमान इमान् जनान् संमनसस्कृधीह॥

अथर्व.कां.6 सू.74 मं.3

यथा सूर्यः निष्क्रोधः सर्वैस्सह समना भवति तथैव राजा प्रजाभिस्सह वर्तेत। तथा च रक्षकं राजानं प्रति–तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम–इति स्वालम्बनं प्रकटयन्ति।

इत्यं वेदषु जनानां सुखजीवनाय साम्मनस्यावसरः। अस्मादपि साम्यवादसिद्धान्तः कः अस्ति। जनाः वदोक्तमार्गेण जीवनं यापयन्ति चेत् विश्वकल्याणं अवश्यं भवति। आधुनिककाले उग्रवादान्, आतकङ्वादान् परिहर्तुं, देशस्य सर्वतोमुखाभिवृद्धयर्थं वेदानुशासनमवश्यमाचरणीयम्।

महाकवि कालिदासः

अन्जली नागर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

"पुरा कवीनां गणनापुसंगे कनष्टिका धिष्टितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव॥"
"अस्पृष्टदोषा नलिनीव दृष्टा हारावलीव ग्रथिता गुणौघैः।
प्रियाकलावलीव विमर्द्दहृद्या न कालिदासाद परस्य वाणी ॥श्री कृष्णः।"

कालिदासः खलु विलासः कलायाः, प्रकाशः प्रतिभायाः, विकासः व्यञ्जनायाः, अवभासः भव्यभावनायाः, कल्पः कमनीयकल्पनायाः, संकल्पश्चारुचरित वर्णनायाः, तल्पः कोमल पदावल्याः, शिल्पः रमणीयशैल्याः, अवतारः वाग्देवतायाः, विस्तारः– विदग्धतायाः, अवस्तारः पुराकथायाः, संयोजकः गुणानाम्, प्रयोजकः रसानाम्, आयोजकश्च उपमाद्यलंकारणाम्।

कालिदासवृत्तम्ः– कविताकामिनीकान्तः कालिदासः स्वरचनासु क्वचिदपि आत्मवृतं न वर्णयामास अत एवासौ–

"कं कालं कं च देशं स्वजन्मना अलंचकार"

इति नाद्यावधि निर्विवादं सुनिश्चितम्।
साहित्यसमालोचकास्ताद्विषये समधिकतरम्
अनुमानमेवाश्रयन्ति। कालिदासः प्रायशः
स्वकाव्यकृतिषु उज्जयिनीनगर्यास्तत्रत्यस्य महाकालस्य च वर्णने सिप्रानद्याश्च चारूतायाश्चित्रणे विशिष्टामभिरूचिं प्रदर्शयामास एतेनानुमीयते यत्-उज्जयिनी एव कालिदासस्य जन्मभूमिः। विश्वविश्रुताभिराख्यायिकाभिः कालिदासस्य नाम शकाब्द प्रवर्तकेण उज्जयिन्यधिपतिना विक्रमादित्येन सह सम्बद्धम्। कालिदासः विक्रमादित्यवर्णने स्वकाव्यकलां कलयामास। अनेनानुमिंत यत् विक्रमनृपतिः कालिदासस्याश्रयभूतो बभूव। कालिदासस्य तस्य सभारत्नत्वेन विदिद्युते। ज्योतिर्विदाभरणस्य-

"धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंह शकुं"

इत्यादिपद्यमपीदमेव साधयति। उपर्युक्तैः प्रमाणैः ऐतिह्यविदो विद्वान्सः कालिदासकालम् ईसवीयशताब्दीतः पूर्वं प्रथमां शताब्दीं निर्णिन्युः।

कृतित्वम्ः- कालिदासस्य सप्त कृतयः संस्कृत साहित्यनिधयः।

तास्तु यथा-(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम् चेति त्रीणी नाटकानि।
(ख) रघुवंशम् , कुमारसंभवम्-इति महाकाव्यद्वयम्
(ग) मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्-इति गीतिकाव्यद्वयम्। सर्वास्वापि कृतिषु कालिदासस्य काव्यप्रतिभा साकारतां गता।

कालिदास कलाः- कालिदासस्य काव्यकला अद्वितीया। यादृशी सरसता यादृशी च कोमलकान्तपदावलिः कालिदासकाव्ये वरीवर्ति तादृशी नान्यत्र दृष्टिपथमायाति। काव्य शोभाद्यायकानि सर्वाष्येव तत्त्वानि कालिदास काव्ये सुष्ठु समाविष्टानि। श्रृङ्गारादिरसाः कालिदासकाव्यं रसाप्लावितं कुर्वन्ति माधुर्यादिगुणाः कालिदासकवितां गरिमान्वितां विदधति। उपमाद्यलंकाराः कालिदासरचनां महिमामण्डितां कुर्वन्ति। वैदर्भ्यादयश्च सर्वा रीतयः कालिदासक्रतिं कमनीयतामापादयन्ति। कालिदासः खलु शब्दरचनायां, रसव्यंजनायां, कमनीयकथावर्णनायां भव्यभावाभिव्यजनपटुतायां च सर्वानेव कवीनति शेते। वस्तुतस्तु कालिदासवाङ्मयं काव्यकलायां मूर्तरूपमेव।

कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्

यद्यपि कालिदासस्य सर्वा एव रचना रमणीयास्तथापि- ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' सर्वोत्कृष्टम्। अभिज्ञानशाकुन्तलेन कालिदासस्य यशः भारतसीमानमतिक्रम्य विदेशेष्वापि प्रसारं लेभे। अभिज्ञानशाकुन्तुलं नाटककमेव च पाठं-पाठं वैदेशिकाः संस्कृतं प्रति आकृष्टा वभूवतुः सर्वास्वापि काव्याविद्यासु नाटक स्वभावतो हृदयग्रहित्वेन चित्रपटे साक्षात् दृश्यत्वेन च रम्यामिति नात्र संदेहः। किन्तु नाटकेष्वपि कालिदासस्य ''शाकुन्तलम्'' सुन्दरमिति निर्विवादम्। शाकुन्तलेऽपि चतुर्थोऽङ्क श्रेष्ठस्तत्रापि च पद्यचतुष्टयं प्रशस्तम्। इदमेव तथ्यं प्रकाशयता निगादितं केनापि साहित्यसमालोकेन-

''काव्येषु नाटकं रम्य नाटकेषु शकुन्तला।
तत्रादि चतुथोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।''

उपमा कालिदासस्य

कवितावनिताविलासः कालिदासः सरस्वत्याः साक्षादवतारः। कालिदासकाव्य सहृदयहृदयावर्जकम् कालिदासस्यालङ्कार चातुरी सहसैव चमत्कारोति चेतः सचेतसः। तस्य कविता कामिनी विविधालङ्कारैरलङ्कृता सती रमणीवाकर्षति काव्यरसिकान्। यद्यपि कालिदासः सर्वेषामप्यलकाराणां प्रयोगे सक्षमस्तथापि उपमालङ्कार योजनायां च तस्य प्रतिभा विशेषतोविकसिता भासिता च उपमासंघटनायां कालिदासो वस्तुतः सर्वेषामेव कवीनामतिक्रमणं चकार। अतएव सुष्ठूक्तं साहित्यसमालोचकैः-

"उपमा कालिदासस्य"

कालिदासस्य उपमाः रम्याः मनोहारिण्यः, शिक्षाप्रदाः ज्ञानदायिन्यश्च सन्तीति नात्र संदेहः।

कालिदास सूक्तयः-

कालिदाससूक्तयः मौक्तिकानीव विराजन्ते। तेनोपमामाध्येमेनैव प्रायशा रम्याः सूक्तयः सन्निबद्धाः। तस्यापमागर्भिताः सूक्तयचेतोहारिण्यः, अमृतमयोपदेशदायिन्यः तथ्याद्घाटिन्यः, शाश्वतसत्यप्रकाशिन्यः भवसागर तारिण्यश्च सन्ति। कालिदासस्य मधुरासु सुधासिक्तासु च सूक्तिषु सहृदयरसिकानां स्वाभाविकी प्रीतिस्तथैव जायते यथा वृक्ष निर्गतासु मधुमयासु मादिनीषु च मञ्जरीषु कामुकानां नैसर्गिकी प्रेमदृष्टिः। अतएव कालिदास-सूक्तिप्रशस्ति गायता महाकविना बाणभट्टेनोक्तम्-

"निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु
प्रीतिमधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।।"

कालिदाससूक्तयो न केवलं रमणीया एव अपितु ताः व्यवहारज्ञानयुताः सत्यः जीवनमार्गे सततं मार्गदर्शनं कुर्वन्ति।

दीपशिखा कालिदासः-

स्वयंवरप्रसङ्ग राजकुमारी इन्दुमती कालिदासेन दीपशिखया उपमिता। अनया उपमया चमत्कृतैः सहृदयरसिकैः कालिदासः **"दीपशिखा कालिदासः"**

इत्युपाधिना विभूषितः। स्वययंवरे इन्दुमतीकामनया समुपस्थितानां राजकुमाराणां मध्ये विचरन्तीं पतिंवरां इन्दुमतीं वर्णयन व्याहरति कविः-

"संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।"
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः।।''

अत्र यूनां राजपुत्राणां पुरतो व्रजन्तो पतिकामा इन्दुमती दीपशिखा। राजानश्च राजमार्गस्थितानि भवनानि। इन्दुमति यं यं भूपतिं परित्यज्य अग्रेसरा बभूव स स राजमार्गस्थभवनमिव मालिनतां प्रभाहीनतां च प्राप।

इत्थं कालिदासस्योपमा खलु-सरसतायाः सरलतायाः, भावाभिव्यंजकतायाः, सार्थकतायाः, मधुरतायाश्च प्रमाणभूताः।

वैदिक संस्कृतिः

गुलिस्ता सैफी
बी. ए. द्वितीय वर्ष

वैदिक संस्कृतेः स्वरूपम्-मनस आत्मनो वा संस्करणं संस्कृति संस्करणस्य या वैदिकी वेदमन्त्रप्रतिपादिता वा पद्धतिः सैव वैदिक संस्कृतिः साक्षात्कृतधर्माणमन्त्रदृष्टारः ऋषयस्तपश्चर्यया सततसाधनया च मानव जीवनस्य परिष्करणार्थ संस्करणार्थ वा शाश्वतसिद्धान्तानां दर्शन चक्रुः। इत्थं वेदमन्त्रेषु परोपकारस्य औदार्यस्य विश्वबन्धुत्वस्य लोककल्याणस्य, मानवप्रेम्णः त्यागस्य च ये भव्यभावा वर्णितस्तं एक वैदिकसंस्कृतेरात्म- भूता प्रथमा संस्कृति-यथा वेदाः प्राचीनतमास्तथैव वैदिकी संस्कृतिरपि प्राचीनता। विश्वसंस्कृतेः बीजानि सर्वप्रथम वेदमन्त्रेभ्य एव समुद्भूतानि। अतो वैदिकी संस्कृतिरेव प्रथमा संस्कृति'' इति सर्वेरपि विद्दभिनिर्विवाद स्वीकृतम्। वेदमन्त्रेऽपि कथितम्-

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा।

अत्र ''विश्वाराः इतिपदेन वैदिकसंस्कृतेः सार्वभौमिकता विश्वजनीनता च प्रकाशिता भवति। वैदिक संस्कृतेरूदातभावना।''-

वैदिकसूक्तेषु विविधविधा उदातभावना विलसन्ति। तद्यथा-

''रात्रो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।''

अत्र सर्वभूतहितभावना सुरम्यतया अभिव्यक्ति गता। '' सर्वे सर्वान् प्रेमदृशा-अवलोकयन्तु सर्वेषा च प्रियमिच्छन्तु। इत्यस्याप्सस्ति मन्त्रे

उपदेशः- **''प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये।''**
विश्वमैत्रया महनीभावनापि प्रथमं वेदमन्त्रेष्वेवाविर्भूता मित्रस्य मा चक्षूषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् विश्वहितकारिणी त्यागभावना वेदेष्वेव जम लेभे-

''तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यविस्वद्धनम्।''

इत्थं सर्वथा सर्वागीणतां धारयति वैदिकसंस्कृतिः "मनुर्भव"-इत्यस्य मधुरतामयोदपदेशः संस्कृतेः सारभूतः। एवं वैदिकी संस्कृतिरेण मानव संस्कृतिः। वर्णाश्रमव्यवस्था-वैदिकसंस्कृति वर्णारमप्रधाना वरीवर्ति पुरूष-सूक्तस्य एकस्मिन्नेव मन्त्रै चतुर्णी वर्णानां वर्णन विधते-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। उरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रोऽजायत॥

अत्र चत्वारो वर्णाः पुरूषस्य प्रजापतेर्वा अंङ्गभूताशिचित्रताः। वस्तुस्तु चत्वारोऽप्येतेभगवतो विराड्रूपस्य समाजस्य-यैवाङ्गानि। "यद् ब्रह्माण्डे-तत्पिण्डे'' इति सिद्धान्तानुसार शरीरे ज्ञानोन्द्रिय सम्पत्रस्य मुखस्य यादृशी मुख्यता तादृश्येव समाजे ज्ञानविज्ञान विस्ताराकाणां ब्रह्मणां श्रेष्ठता। देह रक्षार्थं भुजयोर्यत्स्थानं तदेवं समाजे राष्ट्रेवा रक्षकत्वेन क्षत्रियाणां वैशिष्ट्रयम्। देहपुष्टयर्थं देहे उरूभागस्य या स्थिति सैव समाजसमृद्धयर्थसमाजे वैश्यानां स्थितिः। देहे गत्यर्थं पादयोर्यन्महत्वं तदेव प्रगतिशीले समाजे शूद्राणां महत्वम्। इत्थं चातुर्वर्णव्यवस्थायामेव सर्वांगपूर्ण सामाजिकं सुखमुत्थानं चावलम्बितम्। शतायुर्वे पूरूष। "इति मान्यतानुसार-ब्रह्मचर्यं गृहस्थ-वानप्रस्थ- संन्यासा" श्चत्वार आश्रमाः। तत्र-प्रथमे, ब्रह्मचर्याश्रमे तपोमयजीवनयापनेन विद्यार्जन बल संचयश्च विधीयते। द्वितीये गृहस्थाश्रमे दाम्पत्यजीवनयापनेन संतानोत्पतिः पंचमहायज्ञानुष्ठानं चानुष्ठीयते। तृतीये वानप्रस्थाश्रमे दार्शनिकचिन्तनं ईश्वराराधन च क्रियते। चतुर्थे सन्यासाश्रमे वैराग्यभावनाया योगाभ्यासः सर्वत्र धर्मप्रचारः अन्ते च योगैनैव तनुत्यागः"- इतीयं परमपावनो खलु पद्धति वैदिक संस्कृतिसमुकानामार्याणां जीवनस्य। यज्ञस्य सिद्धान्त-

वैदिकसंस्कृतौः यज्ञस्य प्राधान्यम्।
वैदिक संस्कृतेः केन्द्रभूतः खलु यज्ञः।

वेदमन्त्रष्वेक प्रश्नः प्रस्तुतः-

''पृच्छामि त्वां यत्र भुवनस्य नाभिः''

अस्योतंर ददता वैदिक कविना व्याहृतम्-

"अर्य यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः"।

यज्ञस्यायं वैदिकः सिद्धान्त शाश्वतः सार्वभौमश्च। विश्व स्मित्रमिस्मन परिलक्षिंत प्रत्येक कर्म यज्ञः। प्रकृतिरपि यज्ञपरा। ईश्वरोऽपि होता-

"अयं होता प्रथमा! पश्यतेमम्"।

सृष्टिरपि यज्ञमयी प्रकल्पिता। वैदिकपुरूषसूक्तानुसारं सृष्टीयागेसर्पात्मकः विराट् पुरूष एवं हुप्तः। भगवद्गीतायामप्ययमेव सिद्धान्तोविशदतां नीतः-

"सहयज्ञाः प्रजा सृष्टवा पुरोवाच प्रजापतिः।

अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोस्त्विष्टकामधुक्।।"

त्यागस्य भव्यभावना एवं यज्ञस्य आत्मा। यः परार्थे स्वात्मानं जुहोति स एवोतमयाज्ञिक! वस्तुतः वस्तुत। लोककल्याणर्थ-अभ्युदयनिः श्रेयसृसिद्धयर्थ च विहितं सकलमपि कृत्यजातं यज्ञ एव।

आशावादः आशावादः वैदिक संस्कृते प्राणभूतः। मन्त्रेषु सर्वथा स्वस्थम्-अदीन समृद्ध च जीवनमाशंसितम्-

"पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरद शतम्

शृणुयाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतात्।।"

"आशा एव एतादृशं ज्योतियज्जीवनं सततं प्रकाशयति- आशा हि परम ज्योति।"

आशामेवाश्रित्य जनो भीषणं दुःखपारावारं समुतीर्य जीवन पथि अग्रे सरति। वेदेषु

"वयं स्याम पतयो रयाणम्।"

मध्यं नमन्तां प्रदिशस्चतस्त्रः।

इत्यादिमन्त्रेषु आशावादस्य परमभावना सततं प्रवहति। संक्षेपतो वैदिकींसंस्कृतिश्चेतः संस्करोति, आत्मानं विमली करोति लोकमंगलभावनां विभावयति, विश्वबन्धुत्वं विकासयति जनमानसमुदबोधयति, यज्ञभाव प्रबोधयति, आशावादं चोन्मेषयति।

जननी

मोनिका सिंघल

बी.ए. तृतीय वर्ष

जननी जन्ममूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

सत्यमेव जननी स्वर्गादपि गरीयसी विद्यते। संसारेऽस्मिन् मातुरधिक न किमपि वस्तु पूजनीयं वर्तते । मातैव श्रेष्ठानापमि श्रेष्ठा, पूज्यानां च पूज्यतमा। वेदेषु ब्राह्मणेषूपनिषत्सु च मातैव सर्वत्र गरीयसी प्रतिपदिताऽसि। आचार्याद्, जनकादपि माता श्रेष्ठाऽस्ति का कथा अन्येभ्यः। तैत्तिरीयोपनिषदि समावर्तनसंस्कारसमये यदा कुलपतिः शिष्यानुपदिशति, तदा तस्य सर्वप्रथमोडयमेवोपदशः 'मातृदेवो भव' इति। 'पितृदेवो भव' आचार्यदेवो भव' इत्युपदेशस्य विधानं तु पश्चादेव कृतं दृश्यते। अत एव मातृपितृगृरूणां मध्ये मातुः श्रेष्ठता विद्यते इति तु स्पष्टम्।

पिता पुत्राणां कृते नितान्त गौरवास्पदं पदं धत्तेः गुरूरपि शिष्याणं परममाराधनपदभागिति विषये नास्ति कस्यापि सचेतसो विभातिः।

त एव हि त्रयो लोकास्त एव त्रय आश्रमाः।
त एव हि त्रयो वेदास्त एवोक्तास्त्रयोऽग्नयः।।
यं मातपितरौ क्लेशं सहेते संभवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि।।

परन्तु पितुरपि माता सहस्त्राधिकेन गौरवेणातिरिच्यते इति भगवतो मनोः शाखानुकूलम मतम्-

उपाध्यायाद् दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता।
सहस्त्र तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते।।

विश्वेऽस्मिन सर्वे पदार्थाः सुलभाः प्रयत्नशीलस्य नरस्य। अलभ्यो पदार्थः प्रयत्नबाहुल्येन लब्धुं पार्यते, परन्तु जननी, जन्मभूमिः, जनकश्चातीव दुर्लभाः। धन विनाशं प्राप्य पुनरपि आगच्छति, स्त्रियः पुनर्विवाहेन लब्धुं शक्यन्ते, गतमपि यौवनं रसायनप्रयोगेण ऋषि प्रसादेन च प्राप्तुं शक्यते, परन्तु माता पिता जन्मभूमि न केनापि कुत्रापि प्राप्यन्ते। पद्यरत्नमेतद् नितान्तं तथ्यम्-

जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनार्दनः।
जनकः पऽद्यमश्चचैव जकाराः पंच दुर्लभाः॥

कलत्राणि वान्धवाश्च पदे पदे देशे देश च यत्नशीलो नरो नियतंः प्राप्तुं प्रभवति, परन्तु कुत्रास्ति स देशः यत्र पुत्रवत्सला, सुतस्नेह परायणा, साधुस्वभावा च माता वहुनापि मूल्येन , समधिकैरपि सहसस्त्राधिकैः प्रयत्नैर्लब्धुं पार्यते? पुत्रः कुपुत्रो भवतु नाम, परन्तु माता कदाऽपि कुमाता नैव भवति श्रीदेव्या अपराधसमापनस्तोत्र यथा–

"कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति।"

सुप्रसिद्धो मातृभक्तः श्रवणकुमारो नासीत् कोऽपि विद्वान, न च प्रतिभासम्पन्नः पुरूषः, परन्तु स केवलं स्वामातृभक्या एव लोकस्मित्रमरत्वं प्राप्तवान् । निजाबन्धौ, शक्तिहीनौ, पराक्रमरहितौ पितरौ वीवर्घ मध्ये स्थापयित्वा स्थानात् स्थानान्तरमुद्वहता तेन स्वींय नाम जरामरणरहितं कृतम।

आधुनिक काले गुरूदासवन्द्योपाध्यायनामको वङ्गदेशे लब्धकीर्ति– न्यायधीस आसीत् यः स्वमातुः परमो भक्तोऽभवत् श्रूयते यत स मातुर्भोजनान्तरमेव भोजनं करोति स्म। कि बहुना वङ्गदेशाद दूरे– गतोऽपि स महानुभावः मातुर्भोजनस्य सूचनान्तरमेव भोजनम् ग्रहीत।

भारतवर्षस्य महत्वम्

कविता नागर
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारतवर्षो हि पुरा किल आर्यावर्तः कथ्यते स्म। अयं च देशः प्रकृतेः क्रीड़ा भूमिः प्रकृत्या एव च दूर्गवत् सुरक्षितो निर्मितः। उत्तरस्यां दिशि शैलराजो हिमालयः इमं रक्षति। स च गिरिराजः भारतवर्षस्य प्रहरीव वर्तते। अस्य देशस्य दक्षिणतश्च महान् जलनिधिः वर्तते एवं च शत्रभवन एनम् आक्रान्तुं प्रभवन्ति स्म। अत्र च गङ्गादयः सरितः सुधासहदृशं जल प्रवहन्ति। वसुधा चास्य सर्वेषाम् अत्रानां रत्नानां च जननी। अस्य वनानि च नन्दनकाननानीव। तस्मादेव देवाः अपि अस्य गीतं गायन्ति।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि।
धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे॥
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते।
भवन्ति भूयः पुरूषाः सुरस्वात्॥

अयं हि देशः सर्वेषां देशानां गुरूः अन्येदशवासिनश्चास्मादेव शिक्षां गृह्णन्ति स्म। उक्तञ्च मनुना–

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

यद्यपि मध्यकाले कालक्रमादयं पराधीनो जातः तथापि वर्तमानसमये पुनरपि देशोऽयं संसारे विशिष्टं स्थान लभते अयं हि 'आत्मवत् सर्वभूतेषु आत्मनः प्रति कुलानि परेषा न समाचरेत् इत्यादीन् आदर्शान् ख्यापयति! अतश्च द्वेषाग्निदग्धस्य समरज्वालासंतप्तस्य च संसारस्य मधुप्रलेपाय, कल्पते। अहिसायाः प्रचारेण अयमेव संसारे शान्ति सौख्यं च प्रसारयितु प्रवृत्तः। अस्मिन्तेव च

लोकस्य आशायाः स्थानम्। जनकल्याणस्य भावना अनेने व प्रसार्यते। तथा चाय कथं न महान् गण्येत। कि बहुना देशोऽयं शक्त्या लीलाक्षेपम् सम्पत्तीनाम् च निधानम्। अतः अयं वैज्ञानिकेऽपि युगे सर्वेषा देशानां शीर्षण्यो भविष्यति, इत्यत्र न संशयलेशोऽपि जायते।

आधुनिक संस्कृत-पठन-पाठन-प्रणाली

लक्ष्मी

बी.ए. द्वितीय वर्ष

संसारेऽस्मिन सर्वाणि वस्तुनि समये समये संस्कारमर्हन्ति सस्कारेण बिना सर्वेषां वस्तूनां विकृतं भवति। यथा कोऽपि प्रासादः संस्काराभावात् कतिपयवर्षानन्तर विकृतिं भजते, तथैव शिक्षण-प्रणाली आपि समयाचितवतनेन विना विकृता दुषिता च जायते आ ङ्गलभाषाशिक्षाप्रणाली तु समये समये समयोचितेन परिवर्तनेन परिवर्धनेन च कमपि जनानामुपकारमादधाना दृश्यते, परन्तु संस्कृतभाषायाः शिक्षणप्रणाली शोभनं परिवर्तनमत्तरेणाऽसंस्कृत संजाता अस्याः भाषाया : य पाठनप्रणाली प्राचीनकाले आसीत सैवाविच्छन रूपेणऽधुनापि वर्तते। तस्यां प्रणाल्यां किमपि परिवर्तनं न केनापि कृतम्। देशे काले च महापरिवर्तन संजातम्, परन्तु संस्कृतशिक्षण-प्रणाली साम्प्रतमपि सैव वर्तते। प्राचीनायाः प्रणाल्या औचित्यं विचिन्तयन्तो मर्यादारक्षणधुरिणा केचन पुरूषा अस्यां प्रणाल्यां न परिवर्तनं सहन्ते, परन्तु तेषां मतमिदमसमीचीनम् प्राचीनमपि वस्तु यदि दोषयुक्तं विधते तर्हि तस्याः संस्कारः त्यागो वा एव श्रेयस्करः।

तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः
क्षार जलं का पुरूषा पिवन्ति।

ईदृशानामेव प्राचीनाऽन्धपम्पराभक्तानां कारणात संस्कृतपाठन प्रणाली साम्प्रतमपि संस्काररहिता विद्यते । अस्यां शिक्षणप्रणाल्यां बहवो दोषाः समायाताः सन्ति, येषां दूरीकरणं संस्कृतभाषारक्षणायातीवाऽऽवश्यकं विद्यते।

पाठशालासु प्रथमं कोमलबुद्धिसमन्वितेभ्यों बालकेभ्यो महाकठिनो ग्रन्थः लघुकौमुदी' पाठयते। ते तु दयनीया बालका प्रतिदिनम् प्रतिमासम् प्रतिवर्षम् टिड्ढाणयन्द्वयसजदध्नयमात्रच्त्यतपठकठ कज्यक्वरुपः खफछठथः लणः नेगदनदपदः अला जश् झशि' इत्यादिनि बहूनि सूत्राणि शुकवद् घोषयन्तोऽपि न किमप्यधिगच्छन्ति- सरलस्य वाक्यस्य संस्कृते केन प्रकारेणानुवादो भविष्यति-उत्तीर्णो मध्यमापरोक्षोऽपि छात्रो व्याकरणस्य नियमान् जानत्रापि तेषां प्रंयोग न जानाति सर्वा अपि भाषा साहित्यमुखेन पाठयन्ते, अर्थात् प्रथम सरलवाक्यसमन्वितं पाठयपुस्तक पाठयंते संस्कृतशिक्षणे द्वितीयो दोषो नवीनशिक्षण-सिद्धान्तानां प्रचाराभावो वर्तते। अधुना भाषाशिक्षणपद्धतौ नवीनैः शिक्षणसिद्धान्तेमर्हत् परिवर्तनं समुपस्थपितव्यम, येषामवलम्बनं कृत्वा तेभ्यः शिक्षा प्रदीयते। तेषु डाइरेक्ट मेथड् डाल्टन प्लान, मान्टेसरी सिस्टम, वर्धास्कीम तथा किण्डर-गार्डन-प्रणाली च प्रधानाः सन्ति। अयमेवोद्देश्यः आसा प्रणालीन यद् बालकानां बुद्धिविकासनार्थ प्रचुरोऽवसरः प्रदातव्यः। क्रीडाक्षेत्रे, नदीपुलिने, वाटिकायाम् विहारस्थाने च तेभ्यो मनोरञ्जनेन समन्वित पाठनं विद्येयम्। न कदापि तेषां वृद्धिः, सुकुमार हृदयं पाठ्यग्रन्थमारेण उच्छेदपदवी नेतव्ये।

संस्कृत-शिक्षणपद्धतौ तृतीयो दोषः सामयिकविषयाणां पाठयगन्थेषु समावेशाभाव : अधुना भूगोलतिहासविज्ञानादीनां सर्वेषां विषयणां साधारणं ज्ञान अपेक्षितं विधते। कास्ते कौरवापांडवानां महतः संग्रामस्य क्रीडास्थली कुरूक्षेत्रम, कुत्रतिष्ठति

भगवता श्री कृष्णेन स्थापिता पूरी द्वारिका, का च वर्तते आहिंसासिद्धान्तप्रति-पादकस्य शाक्यमुनेर्बुद्धस्य जन्मस्थली कपिलवस्तु, कुत्र निवसन्ति स्म समरविजयिनो गुप्तराजान इति संस्कृताध्येतृणामगभ्योऽयं विषयः कि बहुना केचन संस्कृतपण्डिता इदमपि न जानन्ति यत कदोऽभत् संस्कृतव्याकरणस्य प्रतिष्ठापको महर्षिः पाणिनीः, कदाऽसीत् कविकुलकमुदकलाधरः कालिदासः कदाऽभवद् नैषधीयचरितस्य कर्ता श्रीहर्षः? विज्ञानविषये तु तेषां ज्ञानमत्यन्ताभाव इति विशेषणं लभते। ते तु विद्युतटेलीफोन वायुयानरेडियोवायरले-सेव्यादिविषयाणामाविष्कार सिद्धान्तैर्नितान्तमपारे चित्ताः सन्ति। यदि दशेयं पूज्यानां संस्कृतविदुषां वर्तते तर्हि का कथा तेषां छात्राणाम? तारस्वरेण स्टन्तास्तिष्टन्ति। तेषां छात्राणं कृते राजनीतिचर्या घृणाविषयः, समाचारपत्रपठनं निरर्थकम्, स्वेदशस्येतिवृत्तिज्ञानं विद्यते। सामाजिकविषयाणामेषा मुपेक्षाया अयं विषमः परिणामोऽमूद यत् संस्कृतपडिताः छात्राश्च लौकिकज्ञानसून्याः सञ्जाताः।

अयमप्यपरो दोषो वरीवर्ति यदेते संस्कृताध्ययनशीलाश्छात्रा अधोव्यापि व्याकरणम, पठित्वापि विविधानि काव्यनाटकादिनि नेदं जानन्ति यद् निबन्धरचनेन भाषाज्ञानं नैपुण्य भजते।

भारतीयदर्शनम्

सरिता रौशा

एम.ए., प्रथम वर्ष

भारतीयदर्शनं खलु तपः पूतमनसां विमलमतीनां ऋषीणां तत्वचिन्तनस्य मूर्तरूपम्।-"इयं सृष्टिः कुतः आयाति? कुत्र च विलीयते? किमस्या- उपादानकारणम्? किंम च निमित्तम्? का प्रकृतिः को जीवः? कश्चैतयोरधिष्ठाता? किं च मानव-जीवनस्य लक्ष्यम्?" इत्येतेषां प्रश्नानामुत्तर सर्व- प्रथमं तव्वचिन्तनपरैः भारतीयदार्शनिकैरवसम्यगाविष्कृतम्।

दर्शनशब्दार्थः-"दृश्यते अनेन-इति दर्शनम्"-

इत्यर्थे प्रेक्षणार्थकाद् "दृश" धातोः (दृशिर् प्रेक्षणे) "ल्युट" प्रत्यये कृते सति दर्शनशब्दः सिद्धयति। अर्थात-येन साधनेन चर्मचक्षुषामविषयभूतानां-"ईश्वर जीव-प्रकति-परलोक- पुनर्जन्म-कर्मफल-स्वर्ग-नरक मोझादि" नामलौकिकविषयाणां ज्ञानं भवति तदेव दर्शनम्। अनया व्यूत्पत्या दर्शनशब्दो भारतीय-दर्शनेषु चरितार्थतो याति।

भारतीय दर्शनधारा- अतिविमला पतितपावनी भवसागरतारिणी परमानन्ददायिनी च भारतीयदर्शन धारा सततं विराजतेतराम अस्या दिव्यधारायाः स्त्रोतद्वयं प्रसिद्धम् "नास्तिकदर्शनम्"- "आस्तिक-दर्शनम्'' चेति। नास्तिकदर्शनस्य पुनस्त्रीणि स्त्रोतांसि 1. चार्वाकदर्शनम्, 2, जैनदर्शनम्, 3 बौद्धदर्शनं चेति। आस्तिदर्शनस्त्रोतः षट्सूपधारासु विभक्तम् तद्यथा-1 न्यायदर्शनम् 2, वैशेषिकदर्शनम् 3, सांख्यदर्शनम् 4, योगदर्शनम् 5, मीमांसादर्शनम् 6, वेदान्तदर्शनम्'' चेति।

आस्तिक-नास्तिकभेदः-नास्तिको वेदनिन्दकः

इति मनुवचनानुसारंयानि दर्शनानि वेदानां प्रामाण्यं नैव स्वीकुर्वन्ति तानि "नास्तिकानि" यानि च वेदानां प्रमाण्यमङ्गीकुर्वन्ति तानि "आस्तिकदर्शनानोति" कथ्यन्ते। तत्रभवता पाणिनिना-" आस्तिनास्ति दिष्टं मतिः-इति सूत्रण आस्तिक-नास्तिक शब्दयोर्व्युत्पत्तिर्विहिता। तदनुसारम्-"अस्ति परलोक" इत्येवं मतियंस्य स आस्तिकः नास्ति परलोक'' इत्येवं मतिर्यस्य स नास्तिकः। इत्थं यानि वेदेषु- तप्प्रतिपादितेषु च परलोक-पुनर्जन्म- कर्मफलादिसिद्धान्तेषु श्रद्दधति तानि आस्तिकदर्शनानि। यानि च ने तेषु विश्वसन्ति तानि नास्तिकदर्शनानि।

नास्तिकदर्शनानि- (चार्वाकमतम्) नास्ति दर्शनेषु चार्वाकदर्शनमादिमम्-चार्वाकमते नास्ति कश्चिदीश्वरः न च

शरीरेन्दियादिव्यतिरिक्तआत्मा। तन्मते तु-शरीर मेवातमा। चार्वाकाः भौतिकं सुखमेव जीवनस्य चरमं लक्ष्यं स्वीकुर्वन्ति। तेषां मते न परलोकः न च पुनर्जन्म। चार्वाकानां विचित्रा खलिव्यं धारणा-

यावज्जीवेत् सुखं जीवत्े ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।

इत्थं चार्वाकदर्शनं पूर्णतया लौकिक भौतिकं च जैनमतम्-नास्तिकाः सन्तोऽपि जैनदार्शनिका आत्मवादिनः। जैनमते आत्मा मध्यमपरिमाण स्वरूपः "स्याद्वादः"- जैनदार्शनिकानां प्रमुखः सिद्धान्तः। जैनदर्शनस्या चार पद्धतिरति प्रशस्ता। **तन्मते-''अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य- अपरिग्रहः''** इत्येतानि पंचमहाव्रतानि। पंचमहाव्रतपालनेनैव सम्यक् चारित्र्यसिद्धिः।

बौद्धमतम-बौद्धाः शून्यवादिनः। बौद्धानां "शून्यम्" वेदान्तीनां मायासदृश किमप्यनिर्वचनीय तत्त्वं यस्मात्सकल जगज्जायते यस्मिश्च लोयते। बुद्धेना-विष्कृतं आर्यसत्यं सृष्टेः वास्तविकता मुद्घाटयति। तद्यथा-1 **'सर्व दुःखम्, 2, दुखसमुदयः, 3 दुःखनिरोधः, 4 दुःखनिरोधगामिनोप्रतिपत्''।** बुद्धेन निर्वाणप्राप्तये **"मध्यमप्रतिपदा"** अथवा-**''आर्य- अष्टाङ्गिक मार्गः''** आविष्कृतः। अष्टाङ्गिकमार्गस्तु-सम्यक्- ज्ञान-सम्यक् **संकल्प-सम्यक्वचन-सम्यक्कर्म- सम्यक्आजीव-सम्यक् व्यायाम-सम्यक्स्मृति- सम्यक्समाधिस्वरूपः।**

''वैभाषिक-सौत्रान्तिक-योगाचार-माध्यमिक'' भेदेन बौद्धानां चत्वारः सम्प्रदायाः।

आस्तिकदर्शनानि- वेदानुमतानि परलोकादि सिद्धान्तसमन्वितानि च आस्तिकदर्शनानि षट्संख्या कानि। तेषां नामानि तु पूर्वमेव निर्दिष्टानि।

तत्र न्यादर्शने'' प्रमाणप्रमेयादिषोडशपदार्थानां चित्रणं चमत्करोति चेतः। तेषां तत्वाज्ञानेनैव मोक्षसिद्धिः सम्भवा। नैयायिकास्त्रैतवादिनः। तत्वत्रयं तु-ईश्वर-जीव-प्रकृतिरिति। वैशेषिका परमाणुषु- 2**विशेषनामानमेकं** पदार्थविशेषमङ्गीकुर्वन्ति। वैशेषिकानां शेषमन्यत् सर्व चिन्तनं प्रायशो न्यायतुल्यमेव। सांख्या द्वैतवादिनः। तत्र-चेतनः पुरूषः जडा प्रकतिश्चेति द्वे तत्वे। एतयोः-संयोगगेन सृष्टिप्रक्रिया प्रचलति। सांख्याचार्याः प्रकृतिपुरूष तत्वज्ञानेनैव कैवल्यप्राप्तिमामनन्ति। योगदर्शनं सांख्यस्य प्रयोगशाला। तत्र कैवल्यप्राप्त्यर्थ **अष्टांग मार्ग** समुपदिष्टः। अष्टाङ्गमार्गावलम्बनेनैव साधकः सर्वार्थसिद्धि समधिगच्छति। मीमांसादर्शने कर्मणः यज्ञस्य च मीमांसा चरमसीमानमगात्। मीमांसाया द्वौ भेदौ-पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा चेति। तत्र-उत्तरमीमांसा एव वेदान्तः। वेदान्तिनोऽद्वैतवादिनः। तन्मते-सच्चिदानन्दं ब्रह्म एव एकमद्वितीयं तत्वम्। त्रिगुणात्मिका माया ब्रह्मणः अनिर्वचनीया शक्तिर्यया उपहितो बह्म स्वचैतन्यप्रधानतया जगतो निमित्त, स्वोपाधिप्राधान्येन च उपादानकारण कथ्यते। वेदान्तसिद्धान्तसरणिमनुसुत्य जीवस्तत्वज्ञानेन मायाया अज्ञानस्य वा आवरणं छित्वा आत्मनः स्वरूपं परिचिनोति। तदा स **''अहं ब्रह्मास्मि''** इत्यनुभव- वाक्यानुसारं स्वयमेव ब्रह्मत्वमापधते।

सर्वेरेवास्तिकदर्शनाचार्यैः षड्दर्शनग्रन्थेषु-कर्मवाद परलोक-पुन-जर्न्म-स्वर्ग-नरक-मोक्षादीनां सिद्धान्ताः विविधरूपेण प्रतिपादिताः। सर्वेषमास्तिक मोक्षादीनां दर्शनानामेकमेव लक्ष्यम्-**''त्रिविधदुःखानामैकान्ति की-आत्यन्तिकी च निवृतिरिति''।**

षड्दर्शनपरम्परा

न्यायदर्शनम्-भारतीयषड्दर्शनपरम्परायां न्याय दर्शनं प्रमुखम्। ''ऋषिगौतमः'' न्यायस्यादिप्रणेता। गौतमन्यायसूत्रेषु- ईश्वरो जगत्कर्त्ता, जगतपालकः तत्सहारकश्च चित्रितः। न्यायमते-ईश्वरेच्छया परमाणुसंयोगे जायते। परमाणुसंयोगे च सृष्टिरूपद्यते। इत्थं गौतम एव परमाणुवादस्याविष्कर्त्ता कथ्यते। "इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदु खज्ञानान्यात्मनोलिङ्गम्"-इति न्यायसूत्रे आत्मापि सुष्ठु परिभाषितः। "दुखत्रयपाश बद्धो जीवात्मा" **''प्रमाणप्रमेयादि''**- षोडशपदार्थानां तत्वज्ञानात् मोक्षं प्राप्नोति।
न्यायदर्शनं प्रमाणानां विवेचनं विहितम। तत्र- **"प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दा"**-इत्येतानि चत्वारि प्रमाण नि स्वीकृतानि। नैयायिकैः सवैषां पदार्थानां परीक्षणं प्रमाणनिकषोपले विधीयते। **"प्रमाणैरर्थपरीक्षणंन्यायः"**- इति व्याहरता भाषकारेण वात्स्यायनेन न्यायनये प्रमाण महात्म्यमङ्गीकृतम्। प्रमाणविवेचनप्राधान्येनैव न्यायदर्शनं **"प्रमाणशास्त्रम्" "तर्क शास्त्रम्"**

चेत्यादिनामभिर्व्यप दिश्यते।

वैशेषिकदर्शनम्-वैशेषिकसूत्रकारस्तत्रभवान् महर्षिकणादः वैशेषिक सम्प्रदायप्रवर्त्तकः। न्यायवैशोषिकयोर्नास्ति महदन्तरम्। द्वयोरेव जीवजगदीश्वरविषयिण्यो मान्यताः समतां धारयन्ति। वैशेषिकः परमाणुषु **''विशेषः''** इति नामपदार्थः स्वीकृतः। अस्मादेव कारणात् काणादं दर्शनं **''वैशेषिक''** इति नाम्ना ख्यातिं-जगाम। वैशेषिकानां मते- द्रव्यगुणकर्म-सामान्यविशेष-समवायाः इति षट्पदार्थः। तत्र-

''पृथ्वी-जल-तेज-वारव्याकाशकालादिगात्ममनांसि''- इति नवद्रव्याणि। एतेषां पदार्थनां द्रव्याणां च तत्वज्ञानमेव मोक्षसाधनम्।

सांख्यदर्शनम्- महामुनिकपिलः सांख्यदर्शनस्याद्योपदेष्टा। अस्मिन्नेव शास्त्रे प्रथमं मोक्षसाधकतत्वानां सांख्यानं परिगणनं वा कृतम्। अत एवेदं शास्त्रं सांख्यसंज्ञया प्रसिद्धम्। **''सम्यक् ख्यानं संख्या''** इति निर्वचनानुसारं यस्मिन् दर्शने जडचेतनयोः प्रकृतिपुरुषयोः सम्यक्ज्ञानं विवेकज्ञानं वा वर्णितं तद्दर्शनं सांख्यमित्याभिधीयते। सांख्यं परिभाषयता भगवता व्यासेन कथितम्-

संख्यां प्रकुर्वते चैव प्रकृतिं च प्रचक्षते।
तत्त्वानि च चतुर्विंशत् तैन सांख्याः प्रकीर्तिताः॥

सांख्यसम्मतानि तत्त्वानि यथा-प्रकृतिपुरूषौ, बुद्ध- य्महत्हंकारमंनासि, पंचज्ञानेन्द्रिययाणि, पंचमकर्मेन्द्रियाणि पंचतन्मात्राणि, पंचममहाभूतानि चेति। एतेषां तत्व-ज्ञानेमेव सांख्याचार्यः-**"व्यक्तव्यक्तज्ञविज्ञानम्", "प्रकृतिपुरूषविवेकः" "विवेकख्यातिः", "सत्वपुरूषान्यतख्याति"**-रित्यादिनामभिनिदिष्टम्। प्रकृतिपुरूष-योस्तत्वज्ञानेनैव त्रिविधदुः खात्यन्तनिवृतिरूपं मोक्षपदं लभ्यते।

सांख्याः सत्कार्यवादिनः। "सतः सज्जायते"-इति सत्कार्यवादः सत्कार्यवादस्य सिद्धिः-
"असदकरणादुपादानग्रहणात्"- इत्यादिकारिण- कायां ईश्वरकृष्णेन कमूनीयतया विहिता/गीतायामापि-**''नासतो विद्यते भावोनाभावो विद्यते सतः** इत्येवंरूपेण सत्कार्यवादो विशदतां नीतः।

योगदर्शनम्- महाभाष्यकारस्तत्रभवान् भगवान् पतञ्जलिरेव योगसूत्रकारः सांख्ययोगयोविंलक्षणं साम्यमस्ति। अत एव कथितम् भगवद्गीतायाम्-

यत्सांख्यै प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।
एकं सांख्य च योगं च यः पश्यति स पश्यति॥

सांख्यै यत्सैद्धान्तिकं ज्ञानं प्रस्तुतं-योगस्तस्य प्रयोग शाला खलु।
महर्षिणा पतञ्जलिना-योगश्चित्तवृत्तिनिरोधोपायरूपेण अष्टाङ्गयोगो वर्णितः। योगस्याष्टाङ्गानि यथा-**''यम-नियम-आसन-प्राणायाम प्रत्याहार-धारण ध्यान-समाधयः''।** पुरूषविशेषः ईश्वरः'' इत्येवंरूपेण ईश्वरलक्षणं विहितम्। अष्टाङ्गयोगाश्रयेण-ईश्वर- साक्षात्कृत्य मानवः परमानन्दमाप्नोति।
मीमांसादर्शनम्-दार्शनिक प्रवस्तत्रभवान् महामुनिजैमिनिर्मी- मांसायाः सूत्रकारः धर्मस्य विवेचन मींमासाया प्रमुखो विषयः। यथोक्तश लोकवार्तिके-

''धर्माख्यं विषयं वक्तुं मीमांसायाः प्रयोजनम्''।

मीमांसादर्शने- **''अथातो धर्मजिज्ञासा''**- इत्यस्मिन् सूत्रेऽपि इदमेव तथ्यं प्रमाणितम्। जैमिनिमुनिना- ''चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः''- इतिसूत्रे धर्मस्य लंक्षण विहितम्। अत्र क्रियायाः प्रर्वत्तकं यद्वा वेदस्य विधिवाक्यमेव ''चोदना'' या खलु भूतं भाविनं सूक्ष्मं व्यवहितं विप्रकृष्टं सकलमपि पदार्थजातं ज्ञापयितुं क्षमा।

मीमांसादर्शने कर्मणां महत्वं महनीयतया स्वीकृतम्। प्राचीनमीमांसाकास्तु कर्म एव ईश्वरस्था-नीयं स्वीचक्रुः। कर्मेति मीमांसकाः- इति वचनमस्योदाहरणभूतम। किन्तु अर्वाचीनाः कर्म-फलाध्याक्षरूपेण ईश्वरं पृथक्तयां प्रकल्पयामासुः। मीमासानुसार निष्कामभावेन ईश्वरार्पण-बुद्धया कर्माणि कुर्वन् मानवो मोक्षमाप्नोति।। वेदानामपौरूषयत्वम''- ''स्वतः प्रामाणयं''- ''संचित प्रारब्धक्रियमाणकर्मणां स्वरूप'' च यथा मींमासकै मीमांसितम् तथा नान्यैः।

मीमांसाया भागद्वयम पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा चेति। तत्र पूर्व मीमांसा एव मीमांसादर्शनम्। उत्तमीमांसा च वेदान्तः।

वेदान्तदर्शनम्- शारीरिक सूत्रकारस्तत्र-भवान् भगवान् बादरायणः वेदान्तस्यौपदेष्टा। वेदान्तानुसारं अखण्डं सच्चिदान्दं ब्रह्म एवेकमद्वितीयं तत्त्वम्। जगदिंद मिथ्या। जीवोऽपि तत्त्वतो ब्रह्म एव नान्यत्-

''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर''

मायानाम्नी ब्रह्मणो विलक्षणा अनिर्वचनीया च शक्तिया खलु-अज्ञानम्, अविद्या प्रकृतिश्चेत्याद्यभिधानैरभिधीयते। मायया अज्ञानेन वा एकस्मिन्नेव ब्रह्मणि नामरूपात्मकस्य जगतः भ्रान्तिस्तथैव जन्यते यथान्धकारे रज्जौ सर्वत्व भ्रान्तिः। इत्थं ब्रह्मणों विवर्तमेव जगत्।

वेदान्तसिद्धान्तानुसारं तत्वज्ञानेन मायाया अज्ञानस्य वा आवरणं छिन्नं जायते। तदा जीवः ''तत्वमसीति गुरूपदिष्टवाक्य-सहकृतेन आत्मनः स्वरूप परिचि-नोति। साधकः साधनापद्धतिमनुसरन् आत्मनः श्रवण मननिदिध्यासनेन अद्वैतब्रह्मणः साक्षात्कार विदधाति। ब्रह्मणि साक्षात्कृते-

''अहं ब्रह्मास्मि''।
''अयमात्मा ब्रह्म''।
''प्रज्ञान ब्रह्म''।
''विज्ञानमानन्दं ब्रह्म''।

इत्येतानि महावाक्यानि चरितार्थतां यान्ति। **''ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति''** -इत्यानुसारं ब्रह्मवेता स्वयमपि ब्रह्मात्मेव प्राप्नोति। इयं ब्रह्मत्वप्राप्तिरेव परा गतिः सैव च पराकाटष्टा।

अतीव प्रशस्ता पुण्या च खलु भारतीयषड्दर्शन परम्परा। षड्दर्शनसम्प्रदायेषु-''कैवल्यम्, स्वरूपावस्थानम, मोक्षः , दुःखत्रयनिवृत्तिः- परमानन्दावाप्तिवा जीवनस्य चरमलक्ष्यत्वेन स्वीकृता। सर्वेरेव दार्शनिकैः दुःखनिवृत्तिमार्गः स्वमनीषिकाभि सम्यक् निर्दिष्टः।

संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्

सन्जू नागर
एम. ए., द्वितीय वर्ष

"यावद भारतवर्षं स्याद् यावद् विन्ध्यहिमाचलौ।
यावद गंगा च गोदा च तावदेव हि संस्कृतम्।"
"संस्कृतिः संस्कृताश्रया"।

संस्कृतस्वरूपम्-

संस्कृता परिष्कृता व्याकरणानियमापरिशुद्धा भाषा विज्ञान निकषोपलरीक्षिता च या भाषा सैव-**''संस्कृत भाषा''**- इति नाम्ना ज्ञायते। सेयं संस्कृतभाषा (उपमाद्य-लाकरैलंकृता) उपमाद्यलंकारैरलंकृता माधुर्यादि-गुणगरिमान्विता, शृङ्गारादिरसाः

परिप्लुता च सती विश्व प्राङ्गणे विराजतेतराम्।

संस्कृतस्य प्राचीनताः- संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतम। आधुनिका भाषाशास्त्रणविचक्षणा निर्विवाद स्वाकुर्वन्ति यत्- ''भारोपीय भाषा परिवार स्यामदिमं लिखितं प्रमाण ऋग्वेद एवास्ति।'' ऋग्वेदश्च संस्कृत भाषायामेव निबद्ध इत्थं संस्कृतभाषा विश्वभाषाणाम्, विशेषतरस्तु सर्वासां भारतीय भाषाणां जननी कथ्यते। यथा जननी दुग्धादि-दानेन शिशून् संवर्धयति तथैव संस्कृतं स्वशब्दकोषदानेन सर्वाः भाषाः समृद्धयति।

संस्कृतमेव संस्कृतेः जननी। संस्कृत- गौरवभूते ऋग्वेदे कथितम्-

''सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा''

सत्य-अहिंसा-विश्वबन्धुत्वादीनि विश्वसंस्कृति तत्वानि सर्वप्रथमम् वेदभ्योऽन्येभ्यश्च संस्कृत साहित्यग्रन्थेभ्यः समुद् भुतानि। संस्कृतमेव स्रोतः ज्ञानविज्ञानयोः।

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः

सर्वथा सार्थकतां धत्ते सूक्तिरियम्। संस्कृतभाषा दिव्यगुणसम्पन्ना खलु। अनयैव भाषया देवस्तुतिः सकलं च देवकार्यं सम्पद्यते। देवाः संस्कृत- भाषायामेव व्यवहारं चक्रुः इंय देववाणी-**अमरगिरा, सुरभारती, गीर्वाणी, देवभाषा** चैत्यदि भिर्विशेषणैरल क्रियते। वेदाः वेदाङ्गानि, उपनिषदः पुराणानि सकलानि च शास्त्राणि संस्कृतभाषायामेव निबद्धानि। इयमेव खलु दिव्यता संस्कृतस्य। यथा च तासां यौवनमखण्डितं तथैव संस्कृत भाषायामपि अद्वितीयमाकर्षणं तस्याश्च यौवनं सर्वथा अक्षुण्णम् इत्थमपसरायिता खलु संस्कृत भाषा। संस्कृतस्य लिपि वैज्ञानिकी। अस्या वर्णमाला भाषावैज्ञानिकानां पथप्रदर्शिका। संस्कृत-व्याकरणं भाषाविज्ञानस्य मुलम्। एते सर्वे गुणाः संस्कृतस्य दिव्यतां पुष्णान्ति।

संस्कृत साहित्यसौन्दर्यम्- अनिर्वचनीय खलु संस्कृतसाहित्यम्। विश्वभाषाणां कलाकाराः संस्कृत् साहित्य सम्मुखं नतमस्तकाः। संस्कृतकवयः स्वप्रतिभया संस्कृतसाहित्यं भासयाञ्चक्रः। आदिकवि वाल्मीकीः संस्कृत भाषायामेव रामचरितं जगौ। कविताविलासः कालिदासः काव्यव्याजेन सुरभारतीमेव भारवि-माघ-श्री हर्ष-भवभूति शूद्रकादयः कवयोऽपि स्वकाव्याञ्जलिभिः देववाणीमेव आनर्चूः।

संस्कृतकाव्यं विलक्षणतानां जन्मभूमिः। अस्मिन् एकतः कालिदासस्य उपमासौन्दर्य चेतश्चमत्करोति। अन्यतो भारवेरर्थगौरवं काव्ये गाम्भीर्यमादधाति। अपरतो दण्डिनः श्री हर्षस्य च पदलालित्यलीला विलासमाकलयति। माघे तु उपमार्थ- गौरवपद लालित्यानां त्रयाणामपि संगमः सगमस्नान भिवानन्द यति काव्यरसिकान्। यथा चोक्तं संस्कृत साहित्य समालोचकैः

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥"

संस्कृतकाव्यं सौन्दर्यस्य प्रतिमैवास्ति उपमोत्प्रेक्षारूप- कश्लेषाद्यलंकाराः संस्कृत कविता वनितायाः श्रृंगारं कुर्वन्ति। माधुर्योजः प्रसाद गुणाः संस्कृत काव्यकारो माधुर्यश्च ओजसः प्रसादस्य च वृष्टिं कुर्वन्ति । वैदर्भी गौड़ीं पाञ्चाली रीतयः संस्कृतकाव्ये प्राणान् संचारयन्ति। श्रृङ्गारादयो रसाः संस्कृतकविता सरतसतया परिपूरयन्ति। लक्षणा व्यञ्जना च संस्कृतकवितामलौकिकताया मञ्चे संस्थापयतः। संस्कृतक वीनां वर्णनकौशलं विलक्षणम्। संस्कृतसाहित्ये समुपलब्धं

प्रकृतिवर्णनं हृदयाह्लादयति। प्रायः सर्व एव संस्कृतक वयः प्रकृत्याः सुषमां स्वलेखिन्या चित्रयामासुः। कालिदासस्तु प्रकृत्याः चतुरश्चित्रकारः। संस्कृतकविभिः कृतमादर्शप्रेमचित्रणं नितान्तं संस्कृत साहित्यरसं पायं पायं काव्यरसिकाः ब्रह्मानन्दमनुभवन्ति। इत्थं समृद्धतमं खलु संस्कृतसाहित्यम्।

भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती-

संस्कृतभाषाविषये सर्वथा चरितार्थतां याति पंक्तिरियम्। वस्तुतो यादृशी सरसता, यादृशी च कोमलकान्तपदावलिः संस्कृतकाव्ये विलसति तादृशी नान्यत्र क्वचिद्पि दृष्टि पथमायाति। गेयानि खलु संस्कृतपद्यानि। यदा संस्कृतश्लोकाः संस्कृतगतिकाश्च मधुरकण्ठैः संगीतस्वरलहरीषु गीयन्ते तदा अचेतना प्रकृतिरपि मुग्धा जायते। कालिदासूक्तिमाधुर्य विषये बाणभट्टस्येयं मुक्तिर्वस्तुतः रमणीया-

''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सुक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मंजरीरिवव जायते।।''

महाकविजयदेवस्य गीतगोविन्दस्तु रसायनम् सहृदयेभ्यो रसाननम्। यथा चोक्तं तत्पदमाधुर्य विषयीकृत्य-

''मधुर कोमल कान्तपदावलीं-
श्रृणु तथा तदा जयदेव सरस्वीतम्।''

सुरभारतीसरसतामनुभवन्तः सरविलियम-जोन्स-गेट-विलसन प्रभृत्यः पाश्चात्याविद्वान्सस्तु सर्व परित्यज्य संस्कृतस्य समुपासका बभूवुः। विलसनमहाभागस्तु संस्कृत माधुर्यमक्षि-लक्ष्यीकृत्य इत्थमुवाच-

''अमृतं मधुरं सम्यक् संस्कृतं ही ततोऽधिकम्।
देवभोग्यमिद यस्माद् देवभाषेति कथ्यते।।''

पुराणानि

गीता रौसा
एम.ए., द्वितीय वर्ष

पुराणनि भारतीयसाहित्यस्य प्राणभुतानि। भारतस्य पुरातनः इतिहासः, पुरातनः, भूगोलः, पुरातनी संस्कृतिः, पुरातन च दर्शन पुराणेषु चित्रितम्। इत्थं सर्वथा सार्थकः खलु पुराणशब्दः।

पुराणशब्दस्यार्थः- पुराणविषयमक्षिलक्ष्यी कृत्य पुराणशब्दस्य विविधानि निर्वचनानि विहितानि। तानि यथा।

1. **''पुराभवं पुराणम्''।** अनेन पुराणानां प्राचीनता प्रतिपादिता भवति।
2. **''पुराणं आख्यानं पुराणम''** इति। अनेन पुराणानां प्राचीना ख्यानरूपता प्रमाणिता।
3. **''यस्मात् पुरा हि अनति तदिदं पुराणम्।''** अनेनाती ते युगे पुराणानां सजीवता सूचिता।
4. **''पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन बै स्मृतम।''** अनेन पुराणानां प्राचीनपरम्पराप्रतिपादकता समर्थिता।
5. **''पुरार्थेषु आनयतीति पुराणम्''।** अनेन पुराणांना प्रकृति पुरूषादिपूर्वतत्वचिन्तनपरता विज्ञापिता। भगवता भाष्यकारेण सायणाचार्येण-
6. **''जगतः प्रागवस्यामनुक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम्''**- इत्येवंरूपेण पुराणशब्दो व्याकृतः।

7. मधुसूदन सरस्वतिना–**''विश्वसृष्टेरितिहासः पुराणम्''**

इत्युक्तवा पुराणशब्दः पारिभाषितः। इत्थमुपर्युक्तैः निर्वचनैः पुराणानां धार्मिकं सांस्कृतिं दार्शनिक ऐतिहासिकं च महत्वं विद्यातिंत भवति।

पुरांण पञ्चमो वेदः– विविधविज्ञानराशित्वे नैव पुराणान्यपि पञ्चमवेदत्वेनाङ्गी कृतानि। यथा च भणितं भागवते–

''इतिहासपुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते''।

चतुर्वेदविद्याविशारदो वेदाङ्गनिष्णातोऽपि यो जनः पुराण न वैत्ति स विद्वत्पदवी प्राप्तुं नार्हति। अत एव सुष्ठु भणितं वायुपुराणे–

यो विद्याच्चतुरो वेदान साङ्गोपनिषदो द्विजः।

न चेत् पुराणं से विद्यात् नैव स स्याद् विचक्षणः

धर्मार्थकाममोक्षणां चतुर्णामपि पुरूषार्थानां सिद्धिः पुराणानां स्वाध्यायेन तज्जिन्तनेन तदनुसारं च जीवनयापनेन भवति। अतः स्वतः सिद्धं खलु पुराणानां वेदत्वम। नारदीयपुराणे तु पुराणं वेदादप्यधिकं स्वीकृतम–

वेदार्थाढधिकं मन्ये पुराणार्थ वरानने।

वेदाः प्रतिष्ठिताः सर्वे पुराणे नात्र संशयः॥

वस्तुतो ये विषयाः वेदमन्त्रेषु निगूढास्त एव पुराणेषु सरलया शैल्या विशदरूपेण व्याख्याताः।

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपवृं हयेत्–

उक्तिरियं सर्वथा सार्थकतां घत्ते। प्रभुसम्मित शब्दत्वेन नीरसाः कठिनतराश्च खलु वेदाः। न ते अनायासेन सर्वेषा सामान्यजनानां बुद्धौ समायान्ति। अतस्तेषां तत्वाज्ञानाय सरलया गिरा रोचकानि आख्यानानि इतिहास पुरूषाणां च उदाहरणानि सुतरामपेक्षितानि। अनयैवापेक्षया भगवता व्यासेन प्रसिद्धं मनोरञ्जकं चेंतिहास– माश्रयता महाभारते (इतिहासे) पुराणे च सुहृत्सम्मितशब्दैः वेदाक्तं धर्मतत्वं दर्शनं च सुष्ठु व्याख्याताम। सृष्टिस्थिति– प्रलयानां, ईश्वरजीव–प्रकृतीनां, ब्रह्मविष्णुमहेशानां, माया– पुरूषब्रह्मणां च मनोरमाभिर्मधुर–सान्दाभिराख्यायिकभिः यादृशं वैज्ञानिकं दार्शनिक च चित्रणं पुराणेषु विहितं तादृशं नान्यत्र दृष्टिपथमायाति।

पौराणिकविषयाः– विषयाणां विविधता पौराणिक साहित्यस्य विलक्षणता विद्यते। प्रतिपाद्यविषयमक्षिलक्ष्यीकृत्य विष्णुपुराणे पुराणांना पञ्चलक्षणानि निर्धारितानि–

सर्गरच प्रति सर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचारितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

उक्तेषु पंचसु लक्षणेषु **''वृत्तिः रक्षा–संस्था–हेतु–उपाश्रय''** इत्येतेषां पञ्चानां सम्मिश्रणेन भागवताकृता **"दशभिर्लषणैर्युक्तं पुराणम्"**– इति विज्ञापितम्। उपर्युक्तलक्षणानुसारं पुराणेषु अधोलिखितानां विषयाणां समावेशः स्वीक्रियते–

1. सृष्टिस्थितिप्रलयवर्णनम्। 2. देवानां ऋषीणं राजांच वंशावली वर्णनम्। 3. मन्वन्तरचित्रणम्। 3. सूर्यचन्द्रादि प्रसिद्धवंशोद्भवतरणम्। 5. प्राणिनों जीविकोपार्जनोपायाः। धर्मरक्षार्थ भगवदवंतरणम्। 6. असुराणां वधः 7. चतुर्विध प्रलयचित्रम। 8. जीवब्रह्माणोः स्वरूपनिरूपणम्। 9. जपोपासना दिवर्णनम्। 10. तीर्थयात्रादिव्याजेन भौगोलिकस्थालानां चित्रणम्।

अन्येषां च धर्म–दर्शन–राजनीति–ज्योतिरायुर्वेदादीनां मानवोपयोगि विषयाणां दिग्दर्शनम्।

पुराणानां महत्वम्– पुराणविषयावगाह नेनैव तन्महत्वे स्वतः सिद्धम्। तद्यथा– पुराणेषु मूर्तिपूजायाः, अवतारखादस्थ,

ब्रह्माविष्णुशिव-गणेश सुर्यादि देवो पासना पद्धत्याश्च समीक्षणेन तेषां धार्मिक महत्त्वं विज्ञापितं भवति। तम-परीक्षित-नन्द-मौर्य-आन्ध्र-गुप्त-आभीर-गर्दभ शक- यवन-तुषार-हूणदिराजवंशाना वंशावली विलोकनेन तेषां ऐतिहासिकं राजनैतिकं च महत्वं विधोतिंत भवति। पुराणेषु चतुर्द्धोपायाः सप्तद्वीपायाश्च वसुमत्या वर्णनं, एवमेव च अष्ठादशद्वीपानां, चतुर्दशभुवनानां, तत्रस्थितानां, नदीनां, समुद्राणां, पर्वतानां च चित्रणं, पुराणानां भौगोलिकं महत्त्वमुद घोषयति। वर्णाश्रमध र्वर्णनं पुराणानां सामाजिक महत्वं प्रकाशयति। इत्थमेव विविध पुराणेषु व्याकरण काव्य-दर्शन- ज्योतिरायुर्वेदादि विषयाणा मुल्लेखस्तेषां शास्त्रीयं वैज्ञानिकं च महत्त्वं प्रख्यापयति।

पुराणानां संख्या- पुराणानि अष्टादश संख्याकानीति निर्विवादम्। तानि चैत्थं-संख्यातानि विष्णुपुराणें-

अष्टादशपुराणनि पुराणज्ञाः प्रचक्षते।
ब्राह्म पादमं वैष्णवं च शैव भागवतं तथा।
तथान्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्।
दशमं ब्रह्मवैतर्त लैङ्गमेमादशं स्मृतम्।
वाराहं द्वादशं चैव स्कन्दञ्चैव त्रयोदशम्॥
चतुर्दशं वामनं च कौर्म पञ्चदशं स्मृतम्।
मात्सस्यं च गारूडं चैव ब्रह्माण्डञ्च ततः परम्॥

एतेभ्योऽतिरिक्तं अष्टादशः- उप पुराणान्यपि सन्ति। एवं विपुलं खलु पौराणिकवाङ्.मयम्।

THE PROBLEM OF UNEMPLOYMENT

Vishakha
B.A. Ist Year

There are various problems in our country. The problem of unemployment is one of them. It is very serious problem. It is a great social evil. Both the educated and uneducated are facing it. It creates new problems in the society. It has made life miserable. It leads to starvation. It is the most pressing and widespread problem of the day. The point is that the jobs are few and claimants are many.

The first and foremost cause of this problem is alarming growth of population. Our population is increasing daily. Every year we produce over ten million young children. The number of seats to be fulfiled is limited. So it is impossible to provide jobs for everyone. Growing population has made enonomic planning meaningless. A large number of people can be employed in factories. But they are not increasing in the same proportion.

The second cause of this unemployment is the use of machines. They produce heap goods. A machine does the work of so many men and therefore men are without work. Machines have ruined cottage industries. Due to lack of cottage industries the rural folk run towards cities in the hope of getting jobs.

If we are to solve the problem of unemployment, we must solve other problem also. There should be a check on our growing population. It should be effectively controlled. If the government is unable to solve the problem of population, it can never solve the problem of unemployment.

The planners of our country should give top priority to the problem of unemployment otherwise all our schemes will fail. If this problem is left unsolved, it will produce many other problems which are more harmful to the society.

WOMEN MORE GENEROUS THAN MEN?

Deeksha
B.A. Ist Year

The decisionmaking organ striatum is more strongly activated in female brains during prosocial decisions than during selfish decisions.

Ever wondered why women are more lenient in rewarding tokens than men? It is because the female brain resaponds more strongly to the prosocial behaviour than the male brain, which responds more to the selfish behaviour. The findings showed that the striatum an active decision-maker located in the middle of the brain and responsible for the assessment of reward is more strongly activated in female brains during prosocial decisions than during selfish decisions.

"The reward and learning systems in our brains work in close cooperation. Studies show that girls are rewarded with praise for prosocial behaviour or helping behaviour instead of selfish behaviour,"said Alexander Soutschek, post-doctoral student at the university of Zurich, Switzerland.

"With this in mind, the gender differences could best be attributed to the different cultural expectations placed on men and women," Soutschek added.

The study, published in the journal Nature Human Behaviour, also revealed that when the researchers applied, medication to the participants, both the males and females behaved differently. Under these conditions, Women behaved more sefishly, while men become more prosocial.

"These results demonstrate that the brains of women and men also process generosity differently at the pharmacological level," Soutschek added.

(Taken from India today)

THE AIM AND SUCCESS

Kajol Khari
B.A. Ist Year

In my childhood, I read a story of Guru Dronacharya and his pupils. Once Dronacharya having put down a bird on the branch of a tree asked his pupils to make aim at its eye, One by one. Only Arjuna succeeded in making aim at bird's eye, while other pupils could not get success. When Guru asked the other pupils what they had seen? some said that they had seen a tree, while others saw branches and one of them saw bird and so on. When Guru asked Arjuna what he had seen. Arjuna replied that he had seen the eye of the bird and nothing else. Then Guru said to all the pupils, know your aim and concentrate at it. The reason of Arjuna's success was his concentration at the eye of the bird. This short story has a very deep and wide meaning. If we want to be want to be successful in our life, we should first try to know our aim and makes efforts to achieve it. Most of us don't know what we really want to be. Sometimes, we take admission in a course, because our friends are doing so, or due to family pressure and other reasons without listening to inner voice of our soul.

Every body has an aim after listening to inner voice that tells us what you really want to be, and what we should be. Think about the ship whose sailor does not know the last shore of his journey.

This condition is very miserable. As man is a sailor, he should know about the destination of his life. Only making aim is not enough to succeed. To achieve our aim we should have positive thinking, motiva-

tion, interest, confidence and should be hard working.

A positive thinker is always optimistic cheerful and charming. There are people who create happiness. Wherever they go, and whenever they go.

Life is a struggle so everyone should have the courage enough to challenge it. Most of the times we have to face failures in life which create an atmosphere of depression in us. Remember one thing that "Failures seldom stops you what stops you is the fear of failure. We should overcome this fear and be confident.

Failure should be taken as a motivation to success.

At the end, I want to say that a right move in a right direction is the key to success. Nothing is impossible in the world. With nothing can make you learn, unless you are interested, So one should have interest in one's aim because—

"You are what, your deep desire is, as your desire is, so is your deed, as your deed is, so is your destiny."

SYMPATHY : A SUI GENERIC ATTRIBUTE

Monisha Arya
B.A. Ist Year

As far sympathy it is an abstract and sui generic quality its impression on any person makes him outstanding and distinctive. It is natural, spirtual and universal attribute that is even treasured by the divinity. If anyone treasures, it is in his compartant and deepest core of his heart, is supposed to be the angel or apostle of God.

But this materialistic and scientific age has made the human beings self-centred and egoist. They are only engrossed in how to pamper their devilish and stupendous stomach. They are running in their fast speeding cars in the fret and fever of being parvenue and at the pinnacle of the list of the richest. They do not care for the rest who are standing on the side of the road and some of them meeting with road accident. They have no time to succour and assist the accident-Victims whereas it has been observed closely that birds flock together at the time of catastrophe or conjectured calamity. Here is a question, "Are such self conceited persons, assuming themselves superior to all other species, better than birds?" The answer is, No."

Another eye witnessed fact is that a poor patient requires an urgent operation by a prestigious doctor in a reputed hospital. He changes his sides with acute pain and agony in his belly at the ground floor. But the doctor asks for a huge amount of money from that penurious and necessitous household for operation. The family did its best to manage the money, but it was not suffice. They implored and pleaded. The doctor turned a deaf ear to their request severally and ordered his help on a mates to turn the family out of the hospital. That poor patient took his last breath that night, and the family sank into the tumultuous and roaring sea of mourning.

"What an unkindness and cruelty in anothers suffering?"

Similarly, a number of people are meeting with the tyranny and officially senior persons day to day. The higher have no mercy and milieu of the world predicts a stone's throw of the day of doom when the heinous will be accounted for their work and punished for their inhumanity. That's why his dictum stands then ten to ten. No sympathy, no humanity"

Galsworthy, a social reformer, dramatist, poet and novelist, advocated sympathy and stated firmly:

"Life is both froth and buddle, stand like a stone, Kindness in another's suffering and courage in your own".

Raja Ram Mohan Roy vouchsafed promptly in response to a woman's question, "Dam, Dan and Daya constitute the main essence of humanity."

1. Dam (Physical Power)
2. Dan (Charity)
3. Daya (Sympathy)

"LIFE IS WHAT WE MAKE OF IT"

Aanchal Nagar
B.A. Ist Year

Life is what we make of it. Our future depends totally on what we do today. Whether winning a battle or a bride, fame or fortune, power or position execution. Success does not come to us by itself but we have to encourage it to come to us. Fortune favours the brave with courage and hard work, we can conquer fate and shape our future as we wish.

How and what a man decides what he will get for being successful is essential that he must produce according to his full capacity with proper technique. The best way to look away from the world is to do everything with enthusiasm.

Put your hand to work, do not hesitate, do not doubt, do not be disappointed but keep going there is no short cut to success to reach the top, we have to climb and work hard.

A fool sees success at a distance but we the wise grows it under our feet. Nothing is impossible for the person who is confident, optimistic and full of action. Success essentially depends on the stamina of mind, will power, dedication, intensity of desire, patience and hard work. The beginning step of success is optimism, hope, positive thinking and faith in one self.

Success is not only a question of luck. It depends on hard work sustained toil and intelligent application. Above all, it depends upon our ability to face odd set backs and adverse circumstances. Remember success is not gifted by someone but we have to get it. To be successful, take reasonable risks, seek and accept responsibilities. Don't play seek and hide in crowd. Never be afraid of making mistakes. To err is human. But make sure that you learn from your mistakes and don't repeat them. Show confidence and enthusiasm. Nothing great was ever achieved without confidence and enthusiasm. I would like to end with the following lines-

Have the idea to figure sublime
Obvious outlooks always provide
Love to read and love to write
Induce in your self patience & pride
Wishing you a bight success.

HOW TO MAINTAIN CLEANLINESS IN YOUR COLLEGE?

Neelam Gautam
M.A. (English) IIIrd Sem.

Cleanliness is the hygiene that one most follow in everyday life!! cleanliness is important in order to stay healthy and away from diseases.

Students learn general hygiene at home itself but once they start staying in a hostel, cleanliness becomes mandatory to follow. Amidst numerous other students and their habits, it is too difficult to adopt

oneself and maintain personal as well as public hygiene at all times.

When many students begin college, they will be living away from home for the first time. If you are one of these students, It's likely you have a lot of thoughts about living in a college residence hall. You're probably wondering what your roomate will be like, how you will decorate your room and how you will adjust to a new environment but there is an area of residence hall living that is often overlooked : sharing kitchens, bathrooms and other common areas.

Use Tissue paper's / Disposable plates and cups in order to maintain cleanliness, students must use tissue papers to clean hands, face or any other surface to remove dirt and germs. Similarly, instead of dumping plastic plates and cups in the mess, use disposable ones to save the enviroment and keeping it clean.

Cleanliness is a clean habit which is very necessary to all of us. cleanliness is a habit of keeping ourselves physically and mentally clean including with our home, pet animals, surroundings, environment, pond, river, schools, college etc. we should keep ourselves neat, clean and well dressed all time. It helps in making good personality and impression in the society as it reflects a clean character. We should maintain the environment and natural resourses (Water, Food, Land etc) cleanliness together with body cleanlines in order to make the possibility of life existence forever on the earth.

We should take care about the wastes of our daily lives and put in only in the dustbin for proper disposal and prevent infections to get spread in the home, college or surroundings. Cleanliness is not the responsibility of only one person.

However, it is the responsibility of each and every individual living in the Home, College, Society, Community and Country. We should understand its multifarious facets to fully get benefited. We all should take a cleanliness oath that never do dirty and never see anyone doing dirty.

Tips for keeping your Classroom Tidy

1. Offer a reward (i.e. homework pass) as an incentive for keeping the inside and outside of student's desks clean.
2. Each day before school, college lets old crank up the music and have a cleaning party.
3. One of the main problems teacher's have is papers on the floor. Keep a dustbin close to each section of desks to eliminate this problem.
4. Cover desks in Newspaper if you are going to glue or paint to help eliminate a mess.
5. To avoid clutter designate certain areas of the classroom for students to keep their belonging (Lunch Box. Back Paper etc.)

SAFETY OF THE WOMEN : A CONCERN

Sakshi
B.A. IInd Year

Introduction : Personal safety has become an issue of importance for everyone, but especially for women and it is an accepted fact that brutal crimes against women are occurring in India daily. Even women are not safe in their own homes.

Condition of women in present :

In present, women education is enough propagating in India. Women are working as a Doctor, Teacher,

Civil services Officer and Business Women. They are also connected with social service. In spite of these things she is not safe in the society. Everyday we read in newspaper and watch in T.V. about the cases of harassment and rape. Not only the college and school girls but self depended women who are in services are facing this problem. They can't go outside in late night because of fear. Harassment, whistling, chasing and passing the comments is going to be a common thing on the public places and because of these things girls leave their schools, colleges and services. and because of so-called raputation of the family in society, most the family members do not support their daughters and they begin the preparations of their marriege.

Are we advising women or addressing the culprits?

Indeed, as a society if we can work together and take responsibilities for the stark we live in today, things will change. But the fact is society does not think so.

If by mistake, any girl tells about harrassment incident which she has faced, every person of her family will begin to make her understand not to tell about this any outsider otherwise it will not be good, their so-called raputation will go to the dust etc. while she is expecting support from them but she finds oppose of her expectation.

Society see a rape-victim as a culprit.

"For a long time, we are learning our daughters covers them selves up", "Stay in their limits". "Look down when you walk", "Stay home after dark", "Covered from head to toe" and most important word "ignore".

People blame the girls for every immoral incident occured with her and do you know why they are blamed for this thing and boys are not because they are girls and they have the load of reputations of two families."

How to feel safe the girls and women?

I think first thing which is essential to feel the women safe is family support. If the girls have family support they can share all their personal incidents occured to them.

Second thing is self-defence.

I think, every girl should be taught at least basic moves of self - defence.

Pepper spray, like other self-defence aids, can be useful tool.

Although the internet is educational and entertaining but it can also be full of danger. When communicating online, use a nick name and always keep your address, phone number and other personal information confidential.

Conclusion : The sad reality is that we live in an increasingly violent society in which the fear of crime is ever-present and mostly with the women. Indeed as a society if we can work together and take responsibilities for the stark reality we live in today, things will change. Acceptance is half the battle won. Raising our voice has to be the next step. Let's keep the pressure alive and let's vow to end this despairing situation so that woman can walk freely and without any fear in a civil and crime-free India.

TREATMENT OF JUVENILE CRIMINALS - AS A JUVENILE OR HARDENED CRIMINAL

Sakshi Bhati
M.A. 3rd Sem,

Juvenile crime is one of the nation's serious problems. Concern about it is widely shared by federal, state and local government officials and by the public. The often missing is from discussion of Juvenile crime today is recognition that children and adolescents are not just little adults, nor is the world in which they live the world of adults. Emotions can affect decision making for both adolescents and adults. When people are experiencing positive emotions, happiness, love they tend to understand the possibility of negative consequences to their actions. When expericing negative emotions, such as anger, jealousy, sadness, people tend to focus on the near term and lose sight of the big picture.

Even government also confused for juvenile, that what is right for juveniles.

I am not in the favour of Government and supreme court that they send juveniles in improvement homes. If under 18 childern know what is good and bad, then they have to know that things are around them they are also in a categories of good and bad.

Juvenile criminals also treated like other hardened criminals have treated.

There are some cases of rape, murder, there is the one juvenile, so now he knows the murders. If he/she pretend the murder they have to face the punishment. Court sent them in improvement homes, so, what is the guarantee they do not pretend the crime again.

Nirbhaya case, All we know about this case, there is a juvenile who is involved in Gang rape. If he knows, what is the rape and he also does it so, why the court don't punish him, while everyone wants everybody who was involved in that case should be hanged. That Juvenile was send in Improvement home.

Under 18 know everything but they just pretend that they don't know anything. If a 18 year boy or under 18 boy knows about rape, so, how he could be a small. Why doesn't supreme court give permission to send him in a jail? Why do they send him in a imporvement home?.

Here other case is about murder. As usual all we know about a boy Pradumn from Ryan International School. At the time of murder police arrested the bus conductor who was innocent and he was treated like a murderer. And Now, CBI says that Produmn was killed by a boy from XIth standard of their own school. He only wants to postpone the exam schedule. Is he right? If he thinks about murder then he also get ready for a punishment.

Juveniles to be punished like hardened criminals. Juveniles are not innocent. Supreme court or Government take a decision about this. Juveniles' parents don't loss their children but what those parents do who lost their children because of these juveniles so, they have to be punished as a hardened criminals.

THE PRESENT EDUCATION SYSTEM OF INDIA

Sakshi Bhati
M.A. 3rd sem.

The Indian Education system is producing a large number of graduates that are unemployable. They lack basic communication and problem solving skills that are needed for ever the most elementary jobs. The problem is not infrastructure or money. Indians are willing to invest in education and this investment is more than sufficient to create infrastructure for most Bachelor or Masters level courses. Except in very few technical fields such as medicine, fees paid by students are sufficient to provide good quality education. But clearly this is not what is happening. The problem in that a vast majority of Indian colleges lack the focus to create employable graduates. Their task as colleges see it, is to help students go through a curriculum and pass an exam. After that, the student is on his own.

To change the way we treat education, we need to change this focus, Institutions that are involved in education must consider gainful and appropriate employment as the primary goal of their courses. This is especially true of courses in Technology and Business Administration, where colleges need to have strong and contiuous interaction with companies that will employ their graduates, to understand what they require from their employees. Colleges must then make sure that their graduates have those skills. In today's world, even a brilliant technologist will struggle if he is not proficient in english. A talented animator is no use if he cannot understand instructions.

Most of the Indian colleges do not focus on employability and therefore are of no use to their students. Change will come to education in India, but it will take time. You, as a student, do not have the luxury to wait for education to catch up with the real world. Take your future in your hands and invest in skills that enhance you ability.

Ways to Improve India's Economy in the next ten years :

With real GDP growth down at 5.3%, the Indian economy is in poor shape. The Government has kept to its tired refrain that 5.3% is still one of the fastest growth rates in the world. But it is no relevant, because Indian per capita GDP is amongst the lowest in the world, and we have no excuse for not growing at anything but the fastest rate in the world.

If we can get things right : right policy, right politics and right training, nothing can stop India growing.

THE WATER FOOTPRINT

Dr. Meenakshi Lohani
Assistant Professor-Geography

The water footprint concept is an indicator of water use in relation to consumer goods (Hoekstra et al. 2011). The concept is an analogue to the ecological and the carbon footprint, but indicates water use instead of land or fossil energy use. The water footprint of a product is the volume of freshwater used to produce the product, measured over the various steps of the production chain. Water use is measured in terms of water volumes consumed or polluted. Water consumption refers to water evaporated or incorpo-

rated into a product.

The water footprint measures the amount of water used to produce each of the goods and services we use. It can be measured for a single process, such as growing rice, for a product, such as a pair of jeans, for the fuel we put in our car, or for an entire multinational company. The water footprint can also tell us how much water is being consumed by a particular country-or globally-in a specific river basin or from an aquifer.

A water footprint generally breaks down into three components: the blue, green and grey water footprint.

- The blue water footprint is the volume of freshwater that is evaporated from the global blue water resources (surface and graund water).
- The green water footprint is the volume of water evaporated from the global green water resources (rainwater stored in the soil).
- The grey water footprint is the volume of polluted water, which is quantified as the volume of water that is required to dilute pollutants to such an extent that the quality of the ambient water remains above agreed water quality standards (Hoekstra and Chapagain 2008).

Water is a renewable, but finite, resource. There is the same amount on earth today as there was when the dinosaurs roamed. As our poputation grows, pressure on our limited, available supply is mounting. This is exacerbated by pollution and the fact that there are seasonal and geographic differences in the amount of water available. Today in many locations, we are using more fresh water than the earth's natural limits can sustain.

Your water footprint is the amount of water you consume in your daily life, including the water used to grow the food you eat, to produce the energy you use and for all of the products in your daily life-your books, music, house, car, furniture and the clothes you wear.

Take a look at online footprint calculators to find out what in your daily life most affects your water footprint. You can do a quick calculation, extended calculator if you want to find out more. Then, takes steps to reduce your water footprint or support activities that help others make use more sustainable. Your choices can improve living conditions and protect plants and animals that depend upon water, worldwide.

Making just a few changes can significantly reduce your water footprint. For example, the water footprint of 200 grams of beef is the equivalent to 47 eight-minute showers and uses four times more water than the same amount of chicken meat. If a couple were to eat chicken instead of beef, they would reduce their water footprint by as much as 450000 litres over a year. Vegetables have an even smaller water footprint, as does tea compared to coffee. you do not necessarily need to become vegetarian - or never eat beef - yet, by varying your diet and choosing to eat food with a smaller footprint more frequently, and by choosing the products you buy wisely, you can make a large difference.

Of course it is not all in your hands. The way the products we consume are produced also affects the water footprint. Encouraging companies to disclose the water footprint and the sustainability of their products will give you more information and will encourage responsible water use. Letting your governmental representatives know that you care about water and want it to be used and managed in a sustainable way, where you live and everywhere in the world, is an important step toward being a good global water citizen.

WE CAN ALL MAKE A POSITIVE CONTRIBUTION TO SOLVING THE WATER CRISIS. MALNUTRITION IN INDIA

Shilpi

Assistant Professor-Home Science

Malnutrition refers to the situation where there is an unbalanced diet in which some nutrients are in excess, lacking or wrong proportion. Simply put, we can categorise it to be under-nutrition and over-nutrition. Despite India's 50% increase in GDP since 1991, more than one third of the world's malnourished children live in India. Among these, half of them under 3 are underweight and a third of wealthiest children are over-nutriented.

The World Bank estimates that India is one of the highest ranking countries in the world for the number of children suffering from malnutrition. The prevalence of underweight children in India is among the highest in the world, and is nearly double that of Sub Saharan Africa with dire consequences for mobility, mortality, productivity and economic growth.

The 2017 Global Hunger Index (GHI) Report ranked India 97th out of 118 countries with a serious hunger situation. Amongst south Asian nations, it ranks third behind only Afghanistan and Pakistan with a GHI score of 29.0 ("serious situation").

India is one of the fastest growing countries in terms of population and economics, sitting at a poulation of 1.342 billion and growing at 1.5%-1.7% annually (from 2001-2007). India's Gross Domestic Product growth was 9.0% from 2007 to 2008; since Independence in 1947, its economic status has been classified as a low-income country with majority of the population at or below the poverty line.

Though most of the population is still living below the National Poverty Line, its economic growth indicates new opportunities and a movement towards increase in the prevalence of chronic diseases which is observed in at high rates in developed countries such as United States, Canada and Australia. The combination of people living in poverty and the recent economic growth of India has led to the co-emergence of two types of malnutrition: undernutrition and overnutrition.

Some of the major couses for malnutrition in India are Economic inequality. Due to the low social status of some population groups, their diet often lacks in both quality and quantity. Women who suffer malnutrition are less likely to have healthy babies.

Deficiencies in nutrition inflict long-term damage to both individuals and society. Compared with their better-fed peers, nutrition-deficient individuals are more likely to have infectious diseases such as pneumonia and tuberculosis, which lead to a higher mortality rate. In addition, nutrition-deficient individuals are less productive at work. Low productivity not only gives them low pay that traps them in a vicious circle of

under-nutrition, but also brings inefficiency to the society, especially in India where labour is a major input factor for economic production. On the other hand, over-nutrition also has severe consequences. In India national obesity rates in 2010 were 14% for women and 18% for men with some urban areas having rates as high as 40%. Obesity causes several non-communicable diseases such as cardiovascular diseases, diabetes, cancers and chronic respiratory diseases.

On the Global Hunger Index India is on place 67 among the 80 nations having the worst hunger situation which is worse than nations such as North Korea or Sudan. 25% of all hungry people worldwide live in India. Since 1990 there has been some improvements for children but the proportion of hungry in the population has increased. In India 44% of children under the age of 5 are underweight. 72% of infants and 52% of married women have anaemia. Research has conclusively shown that malnutrition during pregnancy causes the child to have increased risk of future diseases, physical retardation, and reduced cognitive abilities.

The level of child undernutrition remains unacceptable throughout the world, with 90 per cent of the developing world's chronically undernourished (stunted) children living in Asia and Africa. Detrimental and often undetected until severe, undernutrition undermines the survival, growth and development of children and women, and diminishes the strength and capacity of nations. With persistently high levels of undernutrition in the developing world, vital opportunities to save millions of lives are being lost, and many more millions of children are not growing and developing to their full potential. Nutrition is a core pillar of human development and concrete, large-scale programming not only can reduce the burden of undernutrition and deprivation in countries but also can advance the progress of nations.

EASY SOLUTIONS TO STRESS FREE LIFE

Dr. Vineeta Singh
Assistant Professor-Sociology

We all stress: at work, at home, and on the road. Sometimes we can feel especially stressed becouse of a bad interaction with someone, too much work, or everyday hassles like getting stuck in traffic. Negative stress can keep you from feeling and performing your best-mentally, physically and emotionally. But no one's life is completely stress-free. It's important to know how to manage the stress in your life. Try these three simple techniques for dealing with it.

Let's be honest, we all talk to ourselves! Sometimes we talk out loud but usually we do it in our heads. self-talk can be positive ("I can do this" or" everything will be OK") or negative ("I'll never get better" or "I'm so stupid"). Negative self-talk increases stress. Positive self-talk can help you calm down and control stress. With parctice, you can learn to shift negative thoughts to positive ones.

Stress can be defined as a response of the body to any demand placed on it. stress can be influenced by both external and internal factors. Examples of external factors include work, relationships, and finances. Internal factors such as health, hunger, and amount of sleep can affect how people deal with situations in

which they might otherwise have dealt competently. Stress is a normal human experience and can be useful when dealing with demanding situations.

What are the Signs of Stress?

The body deals with acute stress by releasing chemicals that tell the body that it is in danger, and therefore activates the flight of fight response. This response is a survival mechanism that prepares the body to face danger. Changes seen during this response include increased heart rate, rapid breathing, dry mouth and sweating. This response does not have any long-term effects on the body, and often can help in dealing with stressors. Stress, in many instances, can be useful, and help the person deal with the demands placed on them, by making them more alert, energised, and attuned to external cues.

However, long term exposure to stress, and the exposure of the body to high levels of hormones, such as cortisol and adrenaline, can lead to increased vulnerability to illnesses, such as depression, obesity, heart disease, etc.

Getting rid of stress may be easier than you think. Try one of the following solutions or employ all to enjoy stress-free, or at least less-stressed, living.

- Breathe "appreciation" as you start and end your day. It's a wonderful way to flow through all your daily activities - and sleep through the night.
- For the greatest benefits of exercise, try to include at least 2 1/2 hours of moderate-intensity physical activity (e.g. brisk walking) each week, 1 1/4 hours of a vigorous-intensity activity (such as jogging or swimming laps), or a combination of the two.
- jog, walk, bike, or dance three to five times a week for 30 minutes.
- Set small daily goals and aim for daily consistency rather than perfect workouts, It's better to walk every day for 15-20 minutes than to wait until the weekend for a three-hour fitness marathon. Lots of scientific data suggests that frequency is most important.
- Find forms of exercise that are fun or enjoyable. Extroverted people often like classes and group activities. People who are more introverted often prefer solo pursuits.
- Distract yourself with a personal device to listen to audiobooks, podcasts, or music. Many people find it's more fun to exercise while listening to something they enjoy.
- Recruit an "exercise buddy." It's often easier to stick to your exercise routine when you have to stay committed to a friend, partner, or colleague.
- Be patient when you start a new exercise program. most sedentary people require about four to eight weeks to feel coordinated and sufficiently in shape so that exercise feels easier.

The key is to find your groove and make it a practice. You can't control the actions of others, but by keeping your cool, you avoid contributing to continued stressful conversations. It takes two to argue and if you're the one who starts it and you refuse to finish it, you'll likely have much less of it to experience. Remove your part in what creates stressful situations and those who have stress to share will have to go elsewhere. You'll be amazed at how quickly you may start to feel better once you disrupt the cycle of stress.

QUESTION & ANSWER

Kajal Sharma

B.A. Ist year

Q.1. Who has won the Indira Gandhi Award for National Integration for 2015-16?

Ans. T.M. Krishana

Q.2. Who has been appointed as the India's New ambassador to China?

Ans. Gautam Bambawale

Q.3. Which city to host International Puppet Festival. (IPF-2017)?

Ans. Kolkata

Q.4. Which Indian Armed force has launched an innovation mobile health App "Medwatch"?

Ans. Indian Air force

Q.5. The World's First negative emission plant that turns CO_2 into stone has opened in which country?

Ans. Iceland

Q.6 The 2017 International Day of Rural Woman is observed on which date?

Ans. 15 Oct.

Q.7. Which city is hosting the International conference on green initiatives & Railway Electrificention?

Ans. New Delhi

Q.8. Who has been honoured with the Hridaynath Mangeshkar Award 2017?

Ans. Javed Akhtar

Q.9. Which country has been named the best country to visit in 2018 according lonely plant "Best in travel 2018" list?

Ans. Chile

Q.10. The Sai Yok National Park (SYNP) located in which country?

Ans. Thailand

JOKES

Sana Parveen
B.A. II Year

1. Sardar : What is the name of your car?
   Lady : I forgot the name, but it starts with 'T'.
   Sardar : Oh, what a strange car, starts with Tea, all cars that I know start with petrol.
2. Boss : Where were you born?
   Santa : India...
   Boss : Which part?
   Santa : What which part? Whole body was born in India

3. 2 Sardar were fixing a bomb in a car.
   Santa : What would you do if the bomb explodes while fixing.
   Banta : Don't Worry, I have one more.
4. Santa joined new job. First day he worked till late evening on the computer.
   Boss was very happy and asked what you did till evening.
   Santa : Keyboard alphabets were not in order, so I made it alright.
5. At the scene of an accident a man crying : O God! I have lost my hand, oh!
   Santa : Control yourself. Don't cry. See that man. He has lost his head. Is he crying?
6. In an interview, Interviewer :- How does an electric motor run?
   Santa : Dhhuuuuurrrrrrrrrr...
   Interviewer shouts : stop it.
   Santa : Dhhuurrrrr dhup dhup dhup...

Good Quotations By Famous People

Nisha Bhati
M.A. Ist

"The full use your powers along lines of excellence."

-John F. Kennedy

"Each problem that I solved became a rule which served afterwards to solve other problems"

-Rene Descartes

"In the end, We remember not the words of our enemies, but the silence of our friends"

-Martin Luther King Jr.

"The only way to get rid of a temptation is to yield to it."

-Oscar wilde

"Maybe this word is another planet's Hell."

-Aldous Huxley

"It's kind of fun to do the impossible." **-Walt Disney**

"Glory is fleeting, but obscurity is forever."

-Napoleon Bonaparte

"Some cause happiness wherever they go; others whenever they go."

-Oscar wilde

"God is a comedian playing to an audience too afraid to laugh."

-Voltaire

काव्यांजलि

कविता

नीतू
बी.ए. प्रथम वर्ष

जलाते चलो ये दीये प्यार के
कभी तो मिटेगा ये जग का अंधेरा
युगों से तुम्हीं ने आसमाँ में
अनगिनत दीये हैं जलाये
समय गवाह है कि जलते हुए दीप
अनगिनत तुम्हारे पवन ने बुझाए
मगर बुझ स्वयं ज्योति जो दे गए वे
उसी से तिमिर को मिलेगा उजाला
जलाते चलो ये दीप प्यार के
कभी तो जग का मिटेगा अंधेरा
दीये ओर तूफान की यह कहानी
चलो आ रही है और चलती रहेगी
जली जो पहली बार बाती दीये की
तो बढ़ती रहेगी ये वाणी प्यार कि
जलाते चलो ये दीप प्यार के
कभी तो मिटेगा ये जग का अंधेरा

कविता

सना परवीन
बी.ए. द्वितीय वर्ष

जी चाहता है चुरा लूँ,
दु:ख सभी की जिन्दगी से,
की देख ना पाऊँ दु:ख,
इक पल भी किसी के चेहरे पे,
चाहत है हो दुनिया ऐसी,
जहाँ दिखे हर एक की आँखों में खुशी
रोए तो रोए, क्यों रोएँ,
ये दो पल के बंजारे
क्यों रोएँ ये दो पल के बंजारे॥

कविता

निशा राघव
बी.ए. द्वितीय वर्ष

ये पेड़ ये पत्ते ये शाखें, भी परेशान हो जाएँ।
अगर परिंदे भी हिन्दू और मुसलमान हो जाएँ।
सूखे मेवे भी ये देख कर हैरान हो गए
न जाने कब नारियल हिन्दू और खजूर मुसलमान हो गए।
न मस्जिद को जानते हैं न शिवालों को जानते हैं
जो भूखे पेट होते हैं वो सिर्फ निवालों को जानते हैं।
मेरा यही अंदाज जमाने को खलता है।
की मेरा चिराग हवा के खिलाफ क्यों जलता है...
मैं अमन पसंद हूँ मेरे शहर में दंगा रहने दो
लाल और हरे में मत बाँटो मेरी छत पर तिरंगा रहने दो

अनुशासनम्

मीनाक्षी, *संकलन कर्त्री*
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मा कुरु दर्पं, मा कुरु गर्वं
मा भव मानी, मानय सर्वम्।
मा भज दैन्यं, मा भज शोंक
मुदितमना भव, मोदय लोकम्॥

मा वद मिथ्या, मा वद व्यर्थं
न चल कुमार्गे, न कुरु अनर्थम्।
पाहि अनार्थं, पालय दीनं
लालय जननी-जनक-विहीनम्॥

तनयं पाठय, तस्यां पाठय
शिक्षय सुगुणं, दुर्गणं वारय।
कुरु उपकारं, कुरु उद्धारम्
अपनय भारं, त्यज अपकारम्॥

मा पिब मादकवस्तु अपेयम्।
मा भज दुर्व्यसनं परिहेयम्।
मा नय क्षणमपि व्यर्थं समयं
कुरु सकलं निजकार्यं सभयम्॥

चिरनवीना संस्कृत एषा

प्रीति, संकलन कर्त्री
एम.ए. तृतीय वर्ष

चिरवीना संस्कृत एषा,
गीर्वाणभाषा चिरनवीना संस्कृत एषा॥
महतो भूतस्य निः श्वसितम् अस्ति यस्याम्,
अपितुरातन- वेदसाहित्यम्
शास्त्रपूरैः स्मृतिविचारैः
वरकवीनां काव्यसारैः चित्रिता मञ्जुला मञ्जूषा
मञ्जुला भाषा॥ चिरनवीना॥

वाल्मीकि-व्यास-मुनिरचितं,
रामायणं महाकाव्य महाभारतं
क्लैव्यकिल्बिष-कलित-
पार्थं कार्यविषये योजयन्ती
अस्ति यस्यां भगवती गीता,
भगवता कथिता॥ चिरनवीना॥

मातृभाषा मातृभाषाणाम्,
भवितुमर्हा राष्ट्रभाषा भारतीयानाम्,
भवतु भाषाद्वेषनाशः सर्वथा उद्घोषयामः
भारतीय भारती एषा,
अनुपमा सरसा॥ चिरनवीना॥

भारतभक्ता

***रेशमा** संकलन कर्त्री*
बी.ए., तृतीय वर्ष

वयं बालका भारतभक्ताः
वयं बालिका भारतभक्ताः
वयं हि सर्वे भारतभक्ताः
पृथ्वीं स्वर्गं जेतु शक्ता॥वयम्॥

वयं सुधीराः वयं सुवीराः
हृष्टमानसाः पुष्टशरीराः
भूरि पठामो भूरि लिखामो
भवितास्मो जनहिते नियुक्ताः॥वयम्॥

जाति-धर्म-मद-भेदं त्यक्त्वा
भारतवर्षं पूज्यं मत्वा
भगवखावं हृदये धृत्वा
भारतसेवायामनुरक्ताः॥वयम्॥

मम माता देवता

***रितु नागर** संकलन कर्त्री*
बी.ए. प्रथम वर्ष

मम माता देवता।
मम माता देवता॥
अतिसरला, मयि मृदुला॥
गृह कुशला, सा अतुला॥ मम माता॥
पाययति दुग्धं, भोजयति भक्तं
लालयति नित्यं, तोषयति चित्तम्॥मम माता॥
सायङ्काले नीराजयति
पाठयति च मां शुभङ्करोति
शुभं कुरु त्वं कल्याणम्
आरोग्यं धनसम्पदः।
दुष्टबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥
पाठयति च मां शुभङ्करोति॥मम माता॥
रात्रौ अङ्के मा स्वापयति
मधु मधु मधुरं गींत गायति
आ आ आ आ आ ऽऽ॥मम माता॥

कृषीवलमीतम्

***शिल्पा नागर** संकलन कर्त्री*
बी.एस. प्रथम वर्ष

कृषीवलोऽहं विख्यातेऽस्मिन् मम भारतदेशे।
सर्वेषामभ्युदयं कर्तुं सततमहं प्रयते॥ ध्रु॥
इयं मदीया भारतमाता तस्याः सुसुतोऽहम्।
व्रतं गृहींत तत्सेवाया एतन्मेऽभितम्॥1॥
उटजं क्षेंत्र वृषभावेतौ कपिला धेनुरियम्।
क्षेंत्र वापी जलपरिपूर्णा सर्वं मे सुधनम्॥2॥
सर्वकार्यपरतन्त्रे नगरे सौख्यं को लभते?
स्वावलम्बनात् सर्वं मन्ये सुलभं मम हस्तें॥3॥
यत्नं कृत्वा धनं लभेऽहं सुलभा मे निद्रा।
उद्यमशीला सततं वर्ते न च कदापि तन्द्रा॥4॥
सत्यमहिंसा दीर्घोद्योगो जनसेवा सततम्।
राष्ट्रभ्युदयं कामयमाना आदिशक्तितत्त्वम्॥5॥
विद्या-संस्कृति-शास्त्रकलानां महदाद्यं स्थानम्।
सर्वाग्रसरं सदा विजयतां मम भारतराष्ट्रम्॥6॥

प्रभातवर्णनम्

प्रियंका विकल
सकंलन कर्त्री
बी.ए. तृतीय वर्ष

चन्द्रः अस्तं गच्छति सूर्यः उदयं गच्छति परितो भवति प्रकाशः
मन्दं चलति समीरः मधुपो भवति सधीरः।।

कलिकाबृन्दं विकसति लतिकाबृन्दं विलसति
निद्रा तन्द्रा भग्ना जनता कर्मणि लग्ना
सकले नव उल्लासः वदने वदने हासः।।

पथि पथि जनसञ्चारः नूपुर-रव-झङ्कारः विटपे
खगकुलरावः चरितुं चलिता गावः।।

हस्ते हस्ते पत्रम् वदने वदने स्त्रोत्रम्
खेलति बालकवृन्दं गीतं गायं गायम्।।

भवतु भारतम्

प्रिया मावी
संकलन कर्त्री
बी.ए. तृतीय वर्ष

शक्तिसम्भृतं युक्तिसम्भृतं
शक्तियुक्तिसम्भृतं भवतु भारतम्।।

शस्त्रधारकं शास्त्रधारकं
शस्त्रशास्त्रधारकं भवतु भारतम्।।

रीतिसंस्कृतं नीतिसंस्कृतं
रीतिनीतिसंस्कृतं भवतु भारतम्।।

कर्मनैष्टिकं धर्मनैष्टिकं
कर्मधर्मनैष्ठिकं भवतु भारतम्।।

भक्तिसाधकं मुक्तिसाधकं
भक्तिमुक्तिसाधकं भवतु भारतम्।।

वृक्षात रक्षतः

अर्चना शर्मा
(संकलन कर्त्री)
एम.ए. प्रथम वर्ष

रक्षत वृक्षानस्मान्
भवता रक्षां कर्तुम्।
गोसम्पतिं काननवृद्धिं
प्राप्तुं परिसरशुद्धिम्।।

फलपुष्पाणां समर्पणेन
प्रकृतिमातरं पूजयामः।
दारुदलैः गृहनिर्माणेन
वसतिमभीति कल्पयामः।।1।।

भवता सृष्टं मालिन्यं
निधाय हृदयेऽशेषनम्।
निर्मलसर्गं रचयितत्वा
विदधामो बहु सन्तोषम्।।2।।

जलमूलं परिपालयामः
वायुमण्डलं पावयामः
सदोपकारं वितरामो
न ह्यपकारं चिन्तयामः।।3।।

आसूँ

डॉ कनकलता
असि प्रो, संस्कृत विभाग

आँसओं का कोई हिसाब नहीं
कब नेत्र पटल पर आते हैं
कभी दु:ख के लिए कभी सुख के लिए
बस रोम-रोम जगाते हैं।
आँसू तो वो दर्पण है
जो दिल का हाल बताते हैं
कितना भी छिपाये अपनो से
मन की पीड़ा बलताते हैं।
खुशियों का समुन्दर मिल जाये
प्रस्फुटित हो छलक जाते हैं
दु:ख का पहाड़ अगर टूट जाये
तो फूट-फूट बिखर जाते है।
आँसुओं का कोई हिसाब नहीं
कब नेत्र पटल पर आते है।
आसूँ के रुप अनेका हैं,
झूठे आंसू भी बहते है,
कलयुग की आबो-हवा मैं,
आँसू इतिहास भी रचते हैं।
आसूँ नहीं तो दिल पत्थर हैं,
ऐसा जन-जन कहते है,
कभी नमक कभी गम के
ये आसुँ झलक दिखाते है,
आसुँओ का कोई हिसाब नहीं
कब नेत्र पटल पर आते है।
रिश्तों में अगर विश्वास मिटे,
तो हृदय को फुसलाते है,
दिल पर पड़ा मर्म प्रहार पर
आँसू मरहम लगाते है।
अपना कोई गर विछुड़ जाये
फफक-फफक कर गिरते हैं
बिछुडा गर मिल जाये
तो अश्रु ढुलक आते हैं।
आँसू कवि की ऐसी कविता
जिस रुप नया सब देते है
मेरे आँसू विश्वास के है
जो जीवने-दर्पण दिखाते हैं
आसूंओं का कोई हिसाब नहीं
कब नेत्र-पटल पर आते हैं।

जलचक्रम्

पूजा
संकलन कर्त्री
बी.एस. प्रथम वर्ष

महासागरे विपुलं सलिलं
परन्तु सकलं क्षारं क्षारम्।
तपन् सर्वदा गगने तीव्रम्
ओषति भानुस्तोयमिदम्।।
मिलितं वाष्पं गगनं रोहति
जुनन्ति मेघा वायुबलात्।
पर्वतशिखरे तटन्ति जलदा:
भवन्ति शीता वर्षन्ति।।
नदीप्रवाहा वहन्त्योऽधो
नयन्ति तोयं पयोनिधिम्।
सागरसलिलं सागरमेति
चलत्यखण्डं जलचक्रम्।।

Energy Conversation

Sweta Baisla
B.A. Ist

Energy, energy, energy!
We must think over it eagerly.
Without 'It' we are crippled,
If saved, we can do trippled.
Sources of 'It' are limited,
Don't waste then unlimited,
As man is incomplete without wife,
So, energy is a great factor of life,
Energy is money, energy is wealth,
'It' improves our financial health.

"Be faithful in small things because it is in them that your strength lies"
-Mother Teresa

Easy and Difficult

Monika Kumar
B.A. Ist Year

Destroying something is very easy
But creating is difficult.
Telling lie is very easy
But telling truth is very difficult.
Destroying something is very easy,
But obeying some one is very difficult.
To kill some one is very easy.
But to save some one is very difficultt.
To be failure is very easy.
But to be topper is very difficult
No achieving something is very easy.
But achieving something is very difficult,
Admiring something is very easy.
But doing hardwork to achieve.
is very difficult.

Faithful Friends

Soniya Nagar
B.A. Ist Year

Everyone that flatters thee
Is one friend in misery.
Words are easy like the wind
Faithful friends are hard to find,
Every man will be thy friend.
Whilst thou hast where with to spend;
But if store of crowns be scant
No man will supply thy want.
He that is thy friend indeed.
He will help thee in thy need
If thou sorrow he will weep
If you wake, he cannot sleep
Thus of every grief in heart
He will thee doth bear a part
These are certain signs to know
Faithful friends from flattering fee.

Sympathy

Pooja Sharma
B.A. Ist Year

I lay sorrow, deep distressed,
my grief a proud man heard,
His looks were cold, he gave me gold,
But not a kindly word.

My sorrow passed I paid him back
The gold he gave to me,
Then stood erect and spoke my
Thank and blessed his charity.

I lay in want and grief and pain,
A poor man passed my way,
He bound my head, he gave me bread,
He watched me night and day.

How shall I pay him back a gain
For all he did to me
Oh gold is great but greater for
Is heavenly sympathy.

Tree

Ankita
B.A. Ist year

I think that I shall never see
A poem lovely as a tree
A tree whose hungry mouth is prest
Against the earth's sweet flowing breast
A tree that looks at God all day
And lifts her leafy arms to pray
A tree that may in summer wear
A nest of robins in her hair
Upon whose bosom snow has lain
Who intinaly lives with rain
Poem are made by fools like me
But only God can make a tree

We are the world

Shiksha Sharma
B.A. Ist Year

There comes a time when we heed a call
When the world must come together as one
There are people dying
And it's time to land a hand to life
The greatest gift of all.

We can't go on pretending day by day
That someone, somewhere will soon
make a change
We are all a part of God's great big family
And the truth you know.

Love is all we need
We are the world, we are the children
We are the ones who make a brighter day
So let's start giving
There's a choice we are making
We are saving our own lives
Its true we'll make a better day
Just you and me.

Send them your heart so they'll know
someone cares
And their lives will be stronger and free
As god has shown us by torning stones to bread
So we all must lend a helping hand.

When you're down and out, there seems no
hopes
But if you just believe there's no way we can fall
Let's realize that a change can only come
When we stand together as one.

On Killing a Tree

(By : Gieve Patel)

Pallavi Gautam
B.A. Ist year

It takes much time to kill a tree
Not a simple job of the knife
Will do it. It has grown Slowely
consuming the earth,
Rising out of it feeding
upon its crust, absorbing
years of sunlight, air, water, and out of its
leperous hide sprouting leaves
So hack and chop
But this alone won't do it
Not so much pain will do it
The bleeding bark will heal
and from close to the ground will rise
curled green twigs Miniature boughs
Which if unchecked will expand again
To former size No The root is to be pulled
out- out af the anchoring earth,
It is to be roped, tied and pulled out-
snapped out or pulled out-entirely
Out form the earth-cave
and the strength of the tree exposed
The source white and wet
The most sensitive hidden for years Inside
the earth Then the matter of scorching
and choking In sun and air, Browing,
hardening Thisting,
withering and then it is done

What is Life?

Vishakha
B.A. Ist Year

A richman burst into laughter said
"Life is Money"
A poor man trembling with cold said
"Life is a struggle"
A lazy man dreaming in is sleep said
"Life is a bed of roses"
A saint in his speech said
"Life is only a way to reach God"
A wise man thought and said
"Life is an unsolved mystery"
A student passing his time in studying said
"Life is a way to acquire the knowledge"

We are Indians

Nisha Bhati
M.A. Ist Year

We love western culture
But respect our tradition.
We have stepped into the 21st century
But still believe in astrology
We love pizza
But still our first foods are from our
mother's kitchen We can touch the sky
But still love fairy tales
The world can't change us
But we can change the world
We are the rarest of and
The best on earth Meet us
"We are Indians"

The Fountain

(Jamas Russell Lowell)

Km. Meenu
B.A. IInd Year

Into the sunshine,
Full of the light,
Leaping and flashing
From morn till night

Into the moonlight,
Whiter than snow
Waving so flower- like
When the winds blow!

Into the starlight,
Rushing in spray
Happy at midnight
Happy by day!

Ever in motion
Blithesome and cheery
Still climbing heavenward,
Never a weary,

Glad of all weathers,
Still seeming best,
Upward or downword
Motion the rest,

Full of a nature
Nothing can tame,
Changed every moment
Ever the same

Ceaseless aspiring
Ceaseless content
Darkness or sunshine
Thy element

Glorious fountain
Let my heart be
Fresh, changeful, constant
Upword like thee!

Nature

Vishakha
B.A. Ist Year

When I gaze upon this lovely nature
One thing always strikes me
That is this the very nature which
Swallowed so many innocent people
in its stomach
and has created pain and suffer-
ing so much,
Which deported children from parents,
Brothers from sisters, beloved from
lovers
and so many hands from hands
Whenever I try to fill the beauty of
nature
I ponder that would it remain
same in future
or would it create another sunami
Earthquake or destructive flood
That has taken so many flesh and
blood
Whenever I desire to console my
aching heart
In the lap of nature.
It whispers in my ear that nature
is also like us full of so many faces,
Sometimes seems cursing and others
full of blessings
And this is also the law of life,
That nothing remains same
either it is name or fame
so change is a part of nature
and it makes me forget all those
horrible pictures.

The Beauty of Friendship

Shama Parveen
B.A. IInd Year

friendship is a priceless gift,
It can not be bought or sold,
But its value is far greater,
Than a mountain made of Gold.
For gold is cold and lifeless,
It can neither see nor heard,
And in the time of trouble,
It is powerless to cheer,
It has no ears to listen,
Nor heart to understand.
It can not being your comfort,
Or reach out a helping hand.
So when you ask God for a gift,
Be thankful if he sends...
Not diamonds, pearls or riches,
But the love of Real True friends.

It Is Upto You

Shama Parveen
B.A. IInd Year

One song can spark a moment.
One flower can wake the dream.
One tree can start the forest,
One bird can herald spring,
One smile promotes a friendship,
One word flames the gold.
One sun beam lights a room,
One candle wipes out darkness,
One laugh conquer gloom,
One world makes a prayer,
One hope will raise our spirits,
One heart can know what is true,
One life can make the difference,
Now, It is upto you

The Perfect Life
(Ben Jonsen)

Kanchan Nagar
B.A. Ist Year

It is not growing like a tree.
In bulk. Doth make man better be.
On standing as a Oak, three hundred year,
To fall a log at last, dry bold and sere;
A lily of a day
Is fairer far in May,
Although it fall and die that night.
It was the plant and flower O' light.
In small proportions we just beauces see.
And in short measures life may perfect be.

विविधाञ्जलि

वार्षिक आख्या

डॉ.निधि रायजादा
एसोसिएट प्रोफेसर - इतिहास

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्राम बादलपुर में इस उद्देश्य से स्थापित किया गया ताकि ग्रामीण परिवेश में पली-बड़ी बालाओं को शिक्षा के वे सभी अवसर प्राप्त हो सकें जो शहरों में निवास करने वाली महिलाओं को आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। ये महाविद्यालय ग्रामीण अंचल की छात्राओं को गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान कर महिला सशक्तिकरण की दिशा में निरन्तर प्रगृति के पथ पर अग्रसर है। अपनी शैशवावस्था को पार कर आज महाविद्यालय अपनी युवावस्था को प्राप्त है, जहां वर्तमान में तेरह विषयों में स्नातक की कक्षायें, बी.एस.सी., बी.कॉम. तथा नौ विषयों में स्नातकोत्तर की कक्षायें, बी.एड. पाठ्यक्रम सहित संचालित हैं।

किसी भी महाविद्यालय की प्रगति, विकास, समृद्धि, प्रसिद्धि वहाँ पर अध्ययनरत छात्राओं पर निर्भर है। यह महाविद्यालय के लिये अत्यन्त हर्ष का विषय है कि यहाँ पर अध्ययन करने वाली छात्राओं की संख्या में निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है। न केवल ग्राम बादलपुर अपितु आसपास के ग्रामों से भी छात्रायें यहाँ अध्ययन करने आती हैं। प्राध्यापकों का भी निरन्तर यह प्रयास रहता है कि वह अपने ज्ञान और अनुभव से छात्राओं को अधिकाधिक लाभान्वित कर सकें। शिक्षक शिक्षण, कार्य के अतिरिक्त, छात्राओं के सर्वागींण यथा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास हेतु कृत संकल्प है।

महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र का प्रारम्भ जुलाई 2017 में स्नातक व स्नातकोत्तर की कक्षाओं के साथ हुआ। साथ ही महाविद्यालय में संचालित प्रत्येक विभाग में सत्र 2017-18 हेतु विभागीय परिषदों का गठन किया गया। सत्तारम्भ में ही परिषदों के गठन का उद्देश्य छात्राओं के अन्तः करण में व्याप्त खूबियों को विकसित करना होता है। इसी क्रम में सभी विभागीय परिषदों द्वारा-विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा-वाद-विवाद, निबन्ध, भाषण, पोस्टर, मेंहदी, कलश सज्जा, प्रश्नोत्तरी आदि का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक छात्राओं ने सहभागिता की। प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को उत्साहित करने हेतु 5.2.2018 को विभागीय परिषद् के तत्वावधान् में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार वितरित किये गये।

इसके अतिरिक्त इस सत्र में लगभग सभी विभागों के अन्तर्गत शैक्षणिक परिभ्रमणों का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों पर ले जाया गया, जिससे उनके चिंतन का विस्तार हो सके।

महाविद्यालय की साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद् के अन्तर्गत, मेहंदी, रंगोली, कहानी लेखन, आशु भाषण, लघु नाटिका आदि कुल मिलाकर नौ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। महिलाओं के उत्थान व समान अधिकारों के प्रति सचेत करने हेतु महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ का भी गठन किया गया है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को दैवीय स्थान प्राप्त है परन्तु यथार्थ में भारतीय समाज में महिलाओं को दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता है। आदर्श और यथार्थ के इस व्यापक अन्तर को दूर करने के लिये शासन व समाज के स्तरों पर विभिन्न कार्य किये जा रहे हैं। महाविद्यालय में भी छात्राओं को शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने व अपने मूलभूत अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 13.02.2017 को डॉ. दीपक शर्मा, Scientific Officer के एक व्याख्यान का आयोजन किया गया,

जिसमें डॉ. शर्मा व सुश्री रोहणी द्वारा विभिन्न वैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया गया।

राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित करने एवं युवा विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा छात्राओं में सहयोग, समानता व सद्भावना विकसित करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में N.C.C, N.S.S. तथा रेंजर्स तीनों इकाई संगठित हैं। महाविद्यालय की रेंजर्स इकाई भारत स्काउट एवं गाईड उत्तर प्रदेश मुख्यालय लखनऊ से अहिल्याबाई टीम के नाम से पंजीकृत हैं। महाविद्यालय की रेंजर्स इकाई के तत्वावधान में 19.9.2017 को अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साथ ही महाविद्यालय की रेंजर्स प्रभारी डा. सुशीला द्वारा महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा निर्देशित पत्र के क्रम में दो सुन्दर दीर्घाओं का निर्माण किया गया, जिन्हें walls of Indian heros का नाम दिया गया। इसके अतिरिक्त रेंजर्स इकाई के अन्तर्गत 'महिला सुरक्षा सप्ताह' का भी आयोजन किया गया। नवम्बर 2017 माह में रेंजर्स हेतु त्रिद्विवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को अनेक प्रकार के प्रशिक्षण दिये गये। 1.12.2017 को रेंजर्स इकाई के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय एड्स दिवस के अवसर पर मानव श्रृंखला एड्स प्रतीक चिन्ह के माध्यम से बनाई गई।

20 जनवरी से 25 जनवरी 2018 तक रेंजर्स इकाई के तत्वावधान में ही मतदाता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें गाँव बादलपुर और सादोपुर के ग्रामवासियों को मतदान हेतु जागरूक करने के उद्देश्य से मतदान जागरूकता रैली निकाली गई।

महाविद्यालय की एन.एस.एस. इकाई की एक उपलब्धि यह रही कि एन.एस.एस. की एक इकाई से इस वर्ष राष्ट्रीय सेवा योजना की दो इकाईयां हो गई। पहली इकाई का प्रभार डॉ. शिल्पी तथा दूसरी इकाई का प्रभार डॉ. नेहा त्रिपाठी बखूबी सभाल रही है। दोनों ही इकाईयों के द्वारा दिनांक 6 फरवरी से 12 फरवरी 2018 के मध्य साप्ताहिक शिविरों का आयोजन क्रमशः गांव बादलपुर एवं सादोपुर में किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के इन सात दिवसीय गतिविधियों में छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा शिविर के अंतिम दिन समापन समारोह में शिविर की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुति की गई।

महाविद्यालय की एन.सी.सी. इकाई की प्रभारी प्राध्यापक, डॉ. मीनाक्षी लोहनी हैं। महाविद्यालय के लिये यह अत्यन्त हर्ष व गौरव का विषय है कि इस वर्ष महाविद्यालय की छात्रा सुश्री नेहा रौसा ने इस वर्ष गणतन्त्र दिवस के अवसर पर सहभागिता की। महाविद्यालय परिवार उन्हें इस उपलब्धि के लिये हार्दिक बधाई देता है।

छात्राओं के शारीरिक विकास के दृष्टिगत महाविद्यालय का शारीरिक शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयत्नशील है। शारीरिक शिक्षा विभाग के प्राध्यापक डॉ. सत्यन्त कुमार एवं डॉ. धीरज के निर्देशन में 15 व 16 दिसम्बर 2017 को वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें दौड़, कूद, व प्रक्षेपण प्रतियोगिताओं का आयोजन छात्राओं हेतु किया गया। प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को प्राचार्य डॉ. करूणा सिंह के करकमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये।

बौद्धिक प्रसार समिति के अन्तर्गत 16 नवम्बर 2017 को 'अन्तर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस' के अवसर पर समिति की संयोजक डा. सीमा के तत्वावधान् में छात्राओं द्वारा अत्यन्त मोहक एवं सुन्दर मानव श्रृंखला बनवाई गई।

छात्राओं को रोजगारपरक जानकारी देने के उद्देश्य से महाविद्यालय में रोजगार प्रकोष्ठ संचालित हैं, जिसके अन्तर्गत

समय समय पर अनेक व्याख्यानों का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को विभिन्न विषयों की उपयोगिता एवं उनसे संबंधित रोजगार की संभावनाओं के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से भी सभी विभागों में रोजगारपरक जानकारी हेतु छात्राओं के लिये व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

उत्तर प्रदेश शासन के निर्देशानुसार इस सत्र में अनेक महापुरुषों की जयंतियों को उत्सव के रूप में मनाया गया। इस क्रम में अग्रसेन जयंती, वाल्मीकि जयंती, पं. दीनदयाल उपाध्यायं जयंती, परशुराम जयंती, सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती, स्वामी नरेन्द्र देव जयंती इत्यादि के अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया तथा इन महापुरूषों के कृत्यों से छात्राओं को अवगत कराया गया।

इसके अतिरिक्त महाविद्यालय की संस्कृत विभाग की प्राध्यापिका डॉ. दीप्ति वाजपेयी के संयोजकत्व में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित "वैश्वीकरण एवं भारतीय संस्कृति तथा सामाजिक मूल्यों पर इसका प्रभाव" विषय पर 20 जनवरी को एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

इसके अतिरिक्त आई.क्यू.ए.सी. के अन्तर्गत डॉ. डी.सी. शर्मा व डॉ. अनीता सिंह के द्वारा कार्यशालायें भी महाविद्यालय में आयोजित की गई।

महाविद्यालय की इन उपलब्धियों के क्रम में कुछ एकेडमिक उपलब्धियाँ यहाँ के प्राध्यापकों की भी रहीं, जिसमें डॉ. किशोर कुमार, एसो. प्रो. इतिहास को इ.एस.डी.ए. नेशनल ग्रीन अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा इसी सत्र में उनकी एक पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक के अन्तर्गत प्रकाशित हुई। महाविद्यालय की संस्कृत विभाग की प्राध्यापिका डॉ. दीप्ति वाजपेयी की भी एक पुस्तक इस वर्ष प्रकाशित हुई तथा इसी विभाग की असि. प्रो. डॉ. कनकलता यादव को पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई।

साथ ही महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय के असि. प्रो. डॉ. अरविन्द यादव एवं गृहविज्ञान विभाग की प्राध्यापिका डॉ. शिवानी वर्मा ने अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में क्रमशः लन्दन और दुबई में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये।

महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव दिनांक 22 फरवरी 2018 को सम्पन्न हुआ, जिसमें छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये। प्राचार्या महोदया डॉ. करूणा सिंह जी के कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन में ग्रामीण अंचल में स्थापित यह महाविद्यालय निरन्तर सफलता के नये आयाम स्थापित कर रहा है।

हिन्दी साहित्य परिषद्

डॉ. मिन्तु

सहायक आचार्य हिन्दी

महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं के विकास व उनके व्यक्तिगत निर्माण में शिक्षा के महत्व के साथ-साथ शिक्षणेत्तर गतिविधियों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। महाविद्यालय में विभागीय परिषद इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हुई सतत् प्रयास रत रहती हैं। हिन्दी साहित्य परिषद् के तत्वावधान में समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती रही हैं जो कि छात्राओं को एक दिशा देने के साथ-साथ ही उनके मनोबल को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। सत्र 2017-18 में हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत भव्य कवि सममेलन का आयोजन किया गया। इसी क्रम में हिन्दी साहित्य परिषद् में सत्र 2017-18 में विभागीय परिषद का गठन कर अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई जिसमें छात्राओं ने

उत्साहपूर्वक भाग लिया। कविता लेखन प्रतियोगिता में कु. निशा राघव (B.A. II) प्रथम स्थान प्राप्त किया नेहा राघव (B.A. I) तथा सना परवीन (B.A. I) द्वितीय स्थान तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में कोमल नागर (M.A. I) प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा रूबी विकल (M.A. II) द्वितीय स्थान तथा विशाखा (B.A. I) तृतीय स्थान प्राप्त किया। कहानी लेखन प्रतियोगिता में अंशु शर्मा (B.Com. III) प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा काजल शर्मा (B.A. II) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया और निशा राघव (B.A. I) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समस्त विजेता छात्राओं को विभागीय परिषद समारोह में पुरस्कृत किया गया।

संस्कृत परिषद्

डॉ. कनकलता

असि. प्रो. संस्कृत

सरस सुबोधा विश्वमनोज्ञा ललिताहृद्या रमणीया।
अमृतवाणी संस्कृत भाषा नैव क्लिष्टा न च कठिना॥

मानव संस्कृति के प्राचीनतम रूप तथा विकास को समझने के लिए संस्कृत भाषा का परिशीलन अपरिहार्य है। संसार में भारत को जो प्राथमिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई वह संस्कृत साहित्य व संस्कृत के वैज्ञानिक व्याकरण के माध्यम से है। यह भाषा इतनी सरल, सुबोध एवं हृदयहारिणी कि अल्प परिश्रम में ही स्पष्ट हो जाती है। संस्कृत भाषा के संरक्षण-संवर्धन हेतु विगत वर्षों की भाँति सत्र 2017-18 में भी संस्कृत परिषद् का निम्नवत् गठन किया गया

अध्यक्ष	प्राचार्या
परिषद् प्रभारी	डॉ. दीप्ति वाजपेयी
सह-प्रभारी	डॉ. नीलम शर्मा, डॉ. कनकलता
उपाध्यक्ष	कु. संजू नागर, M.A. III सेमेस्टर
सचिव	कु. सरिता, M.A. I सेमेस्टर
सह-सचिव	कु. प्रियंका, विकल, M.A. III
कक्षा प्रतिनिधि	कु. काजल, M.A. II
	कु. रितु नागर, M.A. I

संस्कृत परिषद् के तत्त्वावधान में विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन छात्राओं के व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु सत्र के आदि से सत्र के समापन तक किया जाता रहा है।

इस दिशा में निबन्ध प्रतियोगिता एवं संस्कृत सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके परिणाम निम्नवत् रहे

निबन्ध प्रतियोगिता

1. कु. सरिता रौसा	एम.ए. I सेमेस्टर	प्रथम
2. कु. सन्जू नागर	एम.ए. III सेमेस्टर	द्वितीय
3. कु. गीता रौसा	एम.ए. III सेमेस्टर	तृतीय

संस्कृत सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

1. कु. रितु नागर	बी.ए. I	प्रथम
2. कु. मीनाक्षी	बी.ए. II	द्वितीय
3. कु. दिव्या बंसल	बी.ए. II	तृतीय

पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त छात्राओं में व्यापक दृष्टिकोण उत्पन्न करने हेतु उन्हें शैक्षिक भ्रमण हेतु दिल्ली के विभिन्न स्थलों पर भ्रमण हेतु ले जाया गया। वर्तमान युवा पीढ़ी रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम की ओर तेजी से बढ़ रही है। इस दृष्टि से संस्कृत विषय को रोजगारोन्मुख बनाने हेतु विभाग की छात्राओं को संस्कृत वाङ्गमय के विभिन्न अध्ययनों, शोध-कार्यों, संस्कृत के नवीन उपागमों एवं करियर से सम्बन्धित विभिन्न लाभप्रद जानकारियाँ समय-समय पर विभाग प्राध्यापकों द्वारा दी जाती रही है। इस क्रम में विभाग की छात्रा कु. संजू नागर एम.ए. III सेमेस्टर ने राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) उत्तीर्ण कर अन्य छात्राओं के लिए अभिप्रेरणा का कार्य किया है। संस्कृत परिषद् छात्राओं के सर्वांगीण विकास व उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु सतत् प्रयत्नशील है।

संस्कृतस्य रक्षणाय बद्धपरिकरा वयम्।
संस्कृते प्रवर्धनाय दृढ़निधिर्भवेदिदम्।

अंग्रेजी परिषद्

श्रीमती जूही विरला
असि. प्रो. अंग्रेजी

अंग्रेजी परिषद् के तत्वावधान में वर्ष 2017-18 में विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें बी.ए. एवं एम.ए. की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विभाग में निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसके परिणाम निम्नवत हैं

(1) वाद-विवाद प्रतियोगिता

1. सिमरन यादव, एम.ए. I सेम. - प्रथम
2. साक्षी भाटी, एम.ए. III सेम. - द्वितीय
3. दिव्या शर्मा, एम.ए. III सेम. - तृतीय
4. सोनाली मावी, एम.ए. I सेम. - तृतीय

(2) निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

1. साक्षी, बी.ए. II प्रथम
2. तनु, बी.ए. III द्वितीय
3. तरूणा टोंगर, बी.ए. II तृतीय
4. कनीज़ सय्यदा, बी.ए. II सांत्वना

विजयी छात्राओं को विभागीय परिषद पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया। दिनांक 19.09.2017 को विभागीय छात्र-परिषद का गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से कु. साक्षी भाटी, एम.ए. III सेम. को अध्यक्ष पद के लिए चयनित किया गया। विभाग द्वारा दि. 25.10.2017 को कैरियर काउंसिलिंग प्रोग्राम के अन्तर्गत एक व्याख्यान आयोजित

किया गया जिसमें छात्राओं को अंग्रेजी विषय में रोजगार सम्बन्धी विभिन्न विकल्पों एवं सम्भावनाओं से अवगत कराया गया। दिनांक 01.12.2017 को विभाग में अध्ययनरत् छात्राओं को भारत की औपनिवेशिक साहित्य एवं सांस्कृतिक विरासत की महत्ता अवगत कराने हेतु इण्डिया गेट एवं राष्ट्रपति भवन का शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया।

संगीत परिषद्

डॉ. बबली अरूण

परिषद् प्रभारी

संगीत ब्रह्माण्ड में उपस्थित वह दिव्य शक्ति है जिसके अधीन सम्पूर्ण सृष्टि जगत् की सम्पूर्ण क्रियायें पल्लवित् होती हैं। संगीत न केवल मन को आनन्दित करता है, यह भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक सुन्दर साधन है। वर्तमान समय में युवा वर्ग बड़ी संख्या में संगीत को जीविकोपार्जन के रूप में अपना रहे हैं। संगीत साधना है। संगीत की सुन्दरता, गम्भीरता को संगीत प्रेमी ही अनुभव कर सकता है। इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2014-15 में संगीत को विषय के रूप में मान्यता प्राप्त हुई और आज यहाँ स्नातक स्तर पर अनेक छात्रायें अध्ययनरत् हैं।

सत्र के प्रारम्भ में ही संगीत परिषद् का गठन किया गया, जिसके अन्तर्गत सत्र पर्यन्त अनेक गतिविधियाँ हुई।

स्नातक स्तर पर विभागीय परिषद् के तत्वावधान् में इस वर्ष एक शास्त्रीय संगीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक छात्राओं द्वारा सहभागिता की गई। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत् रहे

क्र.सं.	**छात्रा का नाम**	**पिता का नाम**	**स्थान**	
1	सोनम देवी	श्री प्रकाश	B.A. III	प्रथम
2	आरती रानी	श्री सोराम सिंह	B.A. II	द्वितीय
3	नेहा	श्री विनोद	B.A. I	तृतीय

विजयी छात्राओं को पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार वितरित किया गया। विभागीय परिषद् प्रतियोगिता के अतिरिक्त महाविद्यालय में राष्ट्रीय पर्वो यथा 26 जनवरी, 15 अगस्त व 2 अक्टूबर पर आयोजित कार्यक्रमों में छात्रों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई। वार्षिकोत्सव पर भी महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसके उत्साहवर्धन स्वरूप समस्त प्रतिभागी छात्राओं को प्रशास्ति पत्र दिये गए।

राजनीति विज्ञान परिषद्

डॉ. आभा सिंह

विभाग प्रभारी

शासन से प्रबन्धन की ओर अग्रसर विश्व-समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता आज नागरिकों के सर्वागीण विकास की है ताकि प्रत्येक नागरिक का मानवीय, सामाजिक, भौतिक, राजनीतिक दृष्टिकोण विस्तृत हो सके तथा वह अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। बच्चे की प्रथम शिक्षिका उसकी अपनी माता होती है जो मातृत्व भाव से उस बच्चे रूपी नन्हें पौधे को पोषित करती है जहाँ उसका सर्वागीण विकास प्रत्येक विषयों के माध्यम से किया जाना सम्भव होता है। इन्हीं सब विषयों में एक महत्वपूर्ण विषय राजनीति विज्ञान है जो समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्रीय की भावनाओं का समावेश सहज ही रूप में करता है।

महाविद्यालय की युवा छात्राओं के उक्त विकास एवं चरित्र-निर्माण हेतु राजनीति-विज्ञान परिषद् का गठन सत्र 2017-18 में किया गया। सत्र 2017-18 में परिषद् की अध्यक्षता प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह द्वारा की गई व परिषद् की प्रभारी के रूप में मेरे द्वारा अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ जिसमें डॉ. ममता उपाध्याय, डॉ. सीमा देवी, एवं डॉ. पंकज चौधरी द्वारा वर्ष पर्यन्त विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गये है। छात्रा प्रतिनिधि के रूप में कु. काजल एम.ए. द्वितीय वर्ष, कु. गरिमा एम.ए. प्रथम वर्ष, मनीषा एवं मीनू नागर बी.ए. द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष रूबी नागर एवं टीना बी.ए. प्रथम वर्ष पूर्ण रूप से सक्रिय रही है।

इस वर्ष एक नवीन पहल राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा की गई है। जिसमें छात्राओं सार्वजनिक महत्व के मुद्दों जैसे स्वच्छता अभियान, मतदाता जागरूकता, वर्षा जल का संरक्षण, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, महिला सशक्तिकरण आदि विषयों पर क्षेत्रीय अध्ययन हेतु राजदूतों की नियुक्ति डॉ. ममता उपाध्याय द्वारा की गई। राजदूत के रूप में युवा छात्राओं में कु. काजल, कु. तन्नू नागर तथा कु. टीना द्वारा आकड़े संगठित कर रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. सीमा देवी द्वारा विभाग का परीक्षाफल तैयार किया गया। डॉ. पंकज चौधरी द्वारा विभागीय भ्रमण की रूपरेखा तैयार की गई।

मानवीय गुणों से ओतप्रोत हमारे पाठ्य विषय के अन्तर्गत कर्त्तव्य एवं अधिकारों के प्रति सजगता तथा उ.प्र. शासन के निर्देशानुसार 10 दिसम्बर 2017 को विश्व मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य पर विभाग द्वारा एक शपथ-ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्राचार्या, प्राध्यापकगण एवं छात्राओं द्वारा मानव शृंखला बनाकर मानवाधिकारों की रक्षा की शपथ ली गई। दिनांक 13.10.17 को विभाग द्वारा छात्राओं के लिए एक कैरियर काउंसिलिंग कार्यक्रम का आयोजन डॉ. आभा सिंह व समस्त विभाग के शिक्षकों द्वारा किया गया। डॉ. श्रीमती राजश्री चतुर्वेदी, एसो. प्रो., रा.वि. एम.एल. जी. कॉलेज, गा.बाद को आमंत्रित किया था जिससे वे छात्राओं को कैरियर बनाने हेतु उनका मार्ग प्रशस्त कर सके।

15.9.17 को विभाग की छात्राओं द्वारा रयान इण्टरनेशनल स्कूल के छात्र प्रद्युम्न को श्रद्धांजलि दी गई तथा 18.9.17 को एयर मार्शल अर्जन सिंह के प्रति भी श्रद्धांजलि दी गई। 28.10.17 को शासकीय निर्देश के अनुपालन के विभाग द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया। 4.12.17 को शैक्षणिक भ्रमण हेतु छात्राओं को इण्डिया गेट तथा राष्ट्रपति भवन का अवलोकन कराया गया।

दि. 8.12.17 को छात्राओं हेतु कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन डॉ. ममता उपाध्याय तथा सभी विभाग के शिक्षकों द्वारा किया गया। 6.12.17 को एक क्विज प्रतियोगिता तथा आशु भाषण प्रतियोगिता कराई गई।

इन सब के साथ विभाग निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो।

चित्रकला परिषद्

श्रीमती शालिनी सिंह

परिषद् प्रभारी

कलानां प्रवरं चित्रं धर्मार्थकाम मोक्षदं।

मंगल्यं प्रथमं चैतद्गृहे यत्र प्रतिष्ठितम्॥

कला कल्याण की जननी है, इस प्राचीन महत्व के साथ-साथ समसामयिक युग में चित्रकला का महत्व अत्यन्त बढ़ गया है। आज चित्रकला केवल शौक का नहीं अपितु जीविकोपार्जन का साधन बन गयी है। इसी महत्व को देखते हुए महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर चित्रकला विषय की शुरूआत हुई।

छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु चित्रकला परिषद् का गठन किया गया जो कि निम्नवत् है

संरक्षक	-	डॉ. करूणा सिंह
अध्यक्ष	-	श्रीमती शालिनी सिंह
उपाध्यक्ष	-	मेघा वर्मा, बी.ए. III
सचिव	-	करिश्मा, बी.ए. II
उपसचिव	-	मोनिका कुमारी, बी.ए. I

चित्रकला परिषद् के तत्वावधान में "ग्रीटिंग कार्ड प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसके परिणाम निम्नवत् है

प्रथम स्थान	काजल भाटी (पुत्री श्री संजय भाटी) बी.ए. II
द्वितीय स्थान	शमा परवीन (पुत्री श्री उमर मोहम्मद) बी.ए. I
तृतीय स्थान	निकिता गौतम (पुत्री श्री चमन सिंह) बी.ए. I
सांत्वना पुरस्कार	अवनीशा नगर (पुत्री श्री नरेश नागर) बी.ए. I

उक्त छात्राओं को दिनांक 05.02.18 को विभागीय परिषद् के तत्वावधान् में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया।

समाजशास्त्र-परिषद्

डॉ. सुशीला

परिषद् प्रभारी

समाजशास्त्र मानव व्यवहार व्यक्तियों और समूहों के बीच और समूहों का सामाजिक संबंधों हेतु एक अध्ययन है। यह मूल संगठनों, संस्थाओं और मानव समाज के विकास का अध्ययन है। अगर हमारी रूचि मानव की सामाजिक गतिविधियों और संबंधों को ज्ञात करने में है तो समाजशास्त्र कैरियर के रूप में एक अच्छा विकल्प हो सकता है। कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर में समाजशास्त्र विषय का शुभारम्भ वर्ष 1997 से स्नातक स्तर पर हुआ तथा वर्ष 2007 से स्नातकोत्तर स्तर पर छात्राओं को अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ। समाजशास्त्रीय परिषद् के द्वारा महाविद्यालय में प्रत्येक सत्र में स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर अनेक गतिविधियाँ आयोजित की जाती है। इस वर्ष (सत्र 2017-18) में परिषद् द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसका विवरण निम्नवत् है:

- दिनांक 23-08-2017 को समाजशास्त्र परिषद् का विधिवत् रूप से गठन किया गया।
- दिनांक 14-10-2017 को समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत अध्ययनरत् स्नातक व स्नातकोत्तर छात्राओं हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम एवं कैरियर काउन्सलिंग का आयोजन किया गया।
- दिनांक 02-11-2017 को विभागीय स्तर पर स्नातकोत्तर छात्राओं हेतु समसामायिक समाजशास्त्रीय मुद्दों पर सेमिनार का आयोजन किया गया।
- दिनांक 01-12-2017 को अन्तर्राष्ट्रीय एड्स दिवस का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत अर्न्तसंकाय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विज्ञान संकाय की टीम विजय रही।
- दिनांक 04-12-2017 को स्नातकोत्तर समाजशास्त्र की छात्राओं को शैक्षणिक भ्रमण हेतु दिल्ली ले जाया गया।
- दिनांक 18-12-2017 को विभागीय प्रतियोगिताओं का आयोजन समसमायिक मुद्दों पर किया गया जिसके अन्तर्गत निबन्ध एवं पोस्टर प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई।

- महाविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग द्वारा दिनांक 25-01-2018 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन निम्नलिखित कार्यक्रमों के माध्यम से किया गया जिसमें पोस्टर, निबन्ध, जागरूकता रैली इत्यादि का आयोजन किया गया तथा दिनांक 20 जनवरी 2018 से हस्ताक्षर अभियान (जागो मतदाता) का आयोजन महाविद्यालय से लेकर गाँव बादलपुर व सादोपुर के ग्रामीणों में जागरूक मतदान के उद्देश्य से किया गया।
- समाजशास्त्र परिषद् द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्नवत् रहा
- **निबन्ध प्रतियोगता परिणाम**

प्रथम स्थान	कु. भावना	पुत्री श्री लालाराम नागर	B.A. III
द्वितीय स्थान	कु. शिल्पा नागर	पुत्री श्री सतीश नागर	B.A. I
तृतीय स्थान	कु. कौशल	पुत्री श्री यतीन्द्र सिंह	B.A. II

- **पोस्टर प्रतियोगिता परिणाम**

प्रथम स्थान	कु. नेहा	पुत्री श्री रामकिशन	M.A. I (समाजशास्त्र)
द्वितीय स्थान	कु. अर्चना	पुत्री श्री मुकेश कुमार	M.A. I (समाजशास्त्र)
तृतीय स्थान	कु. सोनिया	पुत्री श्री रनवीर	M.A. I

- शैक्षणिक सत्र 2016-17 के अन्तर्गत एम.ए. समाजशास्त्र में सर्वाधिक अंक प्राप्त छात्रा का विवरण निम्नवत है

कु. मनीषा भाटी पुत्री श्री धर्मपाल सिंह
कक्षा - एम.ए. समाजशास्त्र, पूर्णांक 2000
प्राप्तांक 1335
प्रतिशत 66.75

विज्ञान संकाय परिषद्

गत वर्षों से भिन्न वर्ष 2017-18 में विज्ञान सकांय के विभिन्न विभागों (जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान व भौतिक विज्ञान) द्वारा सम्मिलित रूप से एक परिषद्-विज्ञान सकांय परिषद् का गठन किया गया। परिषद् के विभिन्न पदों का विवरण इस प्रकार है

संरक्षक - प्राचार्य

उपाध्यक्ष - डॉ. डी.सी. शर्मा (जन्तु विज्ञान विभाग) नेहा त्रिपाठी (रसायन विज्ञान विभाग)
डॉ. प्रतिभा तोमर (वनस्पति विज्ञान विभाग)
डॉ. ऋचा (भौतिक विज्ञान विभाग)

महासचिव - कु. ज्योति पुत्री श्री सुशील कुमार गौतम (B.Sc. III. Biogp.)

सचिव - कु. वैशाली गोटवाल पुत्री श्री रवि कुमार (B.Sc. III. Math)

कोषाध्यक्ष - (1) कु. सविता तोंगर पुत्री श्री करतार सिंह (B.Sc. III. Biogp.)
(2) कु. पूजा नागर पुत्री सतेन्द्र नागर (B.Sc. III. Math)

कक्षा प्रतिनिधि के रूप में प्रत्येक कक्षा से दो प्रतिनिधि (एक Bio group + एक गणित वर्ग) से चयनित किया

गया, जिनका विवरण निम्न हैं

B.Sc. I

बायो वर्ग – कु. शिवानी पुत्री श्री रमेश कुमार

गणित वर्ग – कु. साक्षी वर्मा पुत्री श्री अशोक वर्मा

B.Sc. II

बायो वर्ग – कु. मीनल शिशोदिया पुत्री श्री सुदेश कुमार शिशोदिया

गणित वर्ग – कु. सोनम तेवतिया पुत्री श्री सुरेन्द्र सिंह

B.Sc. III

बायो वर्ग – कु. ज्योति पुत्री श्री सुरेन्द्र सिंह

गणित वर्ग – कु. आँचल पुत्री श्री जसराम नागर

परिषद् के तत्वावधान में समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित कराई गई यथा-आशुभाषण प्रतियोगिता, लेख प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता तथा विभिन्न विषयों से सम्बन्धित एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता दो चरणों में आयोजित की गई तथा द्वितीय चरण में परिणाम घोषित किये गए। विभिन्न प्रतियोगिताओं में निम्न परिणाम प्राप्त हुए

आशुभाषण प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	कु. साक्षी वर्मा	पुत्री श्री अशोक वर्मा	(B.Sc. I)
द्वितीय पुरस्कार	कु. ज्योति पुत्री	श्री सुशील कुमार गौतम	(B.Sc. II)
तृतीय पुरस्कार	कु. कोमल शर्मा	पुत्री श्री उमेश शर्मा	(B.Sc. I)

पोस्टर प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	कु. संगम नागर	पुत्री श्री लोकेश कुमार	(B.Sc. I)
द्वितीय पुरस्कार	कु. सचिंता चौहान	पुत्री श्री लोकेश चौहान	(B.Sc. I)
तृतीय पुरस्कार	1. कु.मानसी नागर	पुत्री श्री परमवीर नागर	(B.Sc. I)
	2. कु.साक्षी वर्मा	पुत्री श्री अशोक वर्मा	(B.Sc. I)

लेख प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	कु. प्रिया	पुत्री श्री लोकेश सिंह	(B.Sc. I)
द्वितीय पुरस्कार	कु. प्रिया नागर	पुत्री श्री अजय नागर	(B.Sc. I)
तृतीय पुरस्कार	कु. गीता शर्मा	पुत्री श्री मंगल चन्द शर्मा	(B.Sc. II)

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	कु. साक्षी वर्मा	पुत्री श्री अशोक वर्मा	(B.Sc. I)
द्वितीय पुरस्कार	कु. अंकिता शर्मा	पुत्री प्रदीप कुमार शर्मा	(B.Sc. III)
तृतीय पुरस्कार	कु. मानसी नागर	पुत्री परमवीर नागर	(B.Sc. I)

सभी प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह में पुरस्कृत किया गया। विज्ञान संकाय के तत्वावधान में सत्र 2017-18 के नवम्बर माह में एक शैक्षणिक टूर का भी आयोजन किया

गया था। टूर में विज्ञान संकाय की B.Sc. तृतीय वर्ष की छात्राओं ने प्रतियोगिता की। यह शैक्षणिक टूर पर छात्राओं को बोटेनिकल गार्डन, नोएडा व वर्ल्डस ऑफ वन्डर ले जाया गया।

शिक्षाशास्त्र परिषद्

डॉ. सोनम शर्मा

परिषद् प्रभारी

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। शिक्षा मानव के अन्तर्निहित दिव्य गुणों को प्रस्फुटित करती है, उसे सत्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करती है ताकि वह ज्ञान की अज्ञान पर, प्रकाशन की तमस पर तथा विद्या की अविद्या पर विजय का माध्यम बन सके। शिक्षा के द्वारा ही मानव जीवन में उदारता, उच्चता, उत्कृष्टता और पवित्रता आती है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण करती है, किसी भी विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण में पाठ्यक्रम के साथ ही पाठ्य सहगामी क्रियाएँ भी अत्यन्त आवश्यक होती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षाशास्त्र विभाग के अन्तर्गत महाविद्यालय में शिक्षाशास्त्र परिषद् का गठन निम्नवत् किया गया

संरक्षक – डॉ. करूणा सिंह, प्राचार्या
अध्यक्ष – डॉ. सोनम शर्मा
उपाध्यक्ष – रूपल, बी.ए. III
सचिव – निशा, बी.ए. II
उपसचिव – विशाखा, बी.ए. I

इस परिषद् के अन्तर्गत निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका परिणाम निम्नवत् हैं

प्रथम स्थान	रूपल नागर बी.ए. III
द्वितीय स्थान	निशा राघव बी.ए. II
तृतीय स्थान	शीतल बी.ए. I
सांत्वना पुरस्कार	प्रियंका बी.ए. III

उक्त छात्राओं को दिनांक 05.02.18 को विभागीय परिषद् के तत्वावधान में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया।

भूगोल परिषद्

डॉ. मीनाक्षी लोहानी

प्रभारी भूगोल परिषद्

छात्राओं के सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से भूगोल परिषद् का गठन किया गया। सत्र 2017–2018 की विभागीय परिषद् की गतिविधियों का आरम्भ भूजल सप्ताह के आयोजन से हुआ। भूजल की सुरक्षा, संरक्षण एवं उसके विवेकपूर्ण उपयोग एवं दोहन हेतु जन जागरूकता सृजित करने के उद्देश्य से 'भूजल जीवन की आस–संरक्षण का करो प्रयास' पर दिनांक 16 से 22 जुलाई 2017 के मध्य 'भूजल सप्ताह' का आयोजन किया गया।

विषय को ध्यान में रखकर महाविद्यालय में भूगोल विभाग के तत्वावधान में दिनांक 19.07.2017 को एक आशु

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 22.07.2017 को महाविद्यालय में वृक्षारोपण तथा पोस्टर प्रतियोगिता सम्पन्न करायी गयी। साथ ही भूगोल विभाग एवं अन्य विभागों के प्रवक्ताओं द्वारा उक्त विषय पर परिचर्चा तथा संवाद, किया गया।

प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नवत् रहे

आशु भाषण प्रतियोगिता

प्रथम स्थान, नेहा नागर, एम.ए. भूगोल द्वितीय वर्ष
द्वितीय स्थान, बबीता, एम.ए. भूगोल द्वितीय वर्ष
तृतीय स्थान, ज्योति जोशी, एम.ए. भूगोल द्वितीय वर्ष

पोस्टर प्रतियोगिता

प्रथम स्थान, काजल शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष
द्वितीय स्थान, निशा राघव, बी.ए. द्वितीय वर्ष
तृतीय स्थान, अंजली शर्मा, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

महाविद्यालय की समस्त छात्राओं ने भूजल संरक्षण करने की तथा इस अनमोल संपदा के उचित प्रयोग करने की शपथ ली।

इसी क्रम में एंटी प्लास्टिक तथा पर्यावरण बचाओ जैसे विषयों पर पोस्टर प्रतियोगिताओं, क्विज प्रतियोगिता, सर्वश्रेष्ठ विषय प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिनके परिणाम निम्नवत रहे।

पोस्टर प्रतियोगिता

प्रथम स्थान, कोमल, बी.ए. प्रथम वर्ष
द्वितीय स्थान, जनवि बैसोया, बी.कॉम. प्रथम वर्ष
तृतीय स्थान, मेघा, बी.ए. प्रथम वर्ष

क्विज प्रतियोगिता

प्रथम स्थान, आचल, बी.ए. तृतीय वर्ष
द्वितीय स्थान, देविका बैसोया बी.ए. तृतीय वर्ष
तृतीय स्थान, प्रियंका, बी.कॉम. तृतीय वर्ष

सर्वश्रेष्ठ विषय प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता

प्रथम स्थान, विशाखा, एम.ए. भूगोल प्रथम वर्ष
द्वितीय स्थान, निधि, एम.ए. भूगोल प्रथम वर्ष
तृतीय स्थान, भावना, एम.ए. भूगोल द्वितीय वर्ष

विजयी छात्राओं को विभागीय परिषद् ने पुरस्कृत किया तथा उनका उत्साह वर्धन किया जिससे की वे पर्यावरण के सतत विकास में योगदान दें।

इतिहास परिषद्

डॉ. निधि रायजादा

मानव सभ्यता के प्रारम्भिक काल से लेकर आधुनिक समय की अद्भुत उपलब्धियों तक के मनुष्य के बदुआयामी जीवन के क्षेत्रों में उन्नति तथा अवनति का अध्ययन इतिहास का कार्यक्षेत्र है। अतीत में घटित घटनाओं का अध्ययन इतिहास विषय के अन्तर्गत इस उद्देश्य से किया जाता है जिससे हम अपने वर्तमान को संवार सकें। इतिहास समाज को, मनुष्य जीवन को सुन्दर, मानवीय गुणों से भरपूर बनाने में एक कुशल शिक्षक की भूमिका निभाता है। यह मानवीय दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि हम इतिहास अध्ययन से कितनी सारगर्भित व महत्वपूर्ण वस्तुऐं ग्रहण करते हैं।

छात्राओं की इतिहास विषय के प्रति जागरूकता, उत्सुकता और उनमें सुन्दर, सरल, मृदुल, सद्भावनापूर्ण, सांस्कृतिक आचरणयुक्त मानवीय गुणों का प्रचार और प्रसार करने सदृश्य महाविद्यालय का इतिहास विभाग सदैव प्रयत्नशील है। शिक्षण कार्यो के अतिरिक्त छात्राओं में निहित गुप्त प्रतिभाओं को विकसित, पुष्पित करने हेतु इतिहास विभाग के अन्तर्गत 4.9.2017 को परिषद् का गठन किया गया, जो निम्नवत् है–

संरक्षक – डॉ. करूणा सिंह, प्राचार्या
अध्यक्ष – डॉ. आशा रानी, विभाग प्रभारी
उपाध्यक्ष – डॉ. किशोर कुमार, एसो. प्रो.
सचिव – डॉ. निधि रायजादा, परिषद् प्रभारी
सह–सचिव – डॉ. अनीता सिंह, एसो. प्रो.
कोषाध्यक्ष – डॉ. अरविन्द सिंह, असि. प्रो.

स्नातक और स्नातकोत्तर की प्रत्येक कक्षा से दो–दो प्रतिनिधि छात्राओं का चयन किया गया। प्रतिनिधि छात्राओं के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं–

(1) कु. नीशू भाटी, बी.ए.प्रथम वर्ष
(2) कु. काजल कुमारी, बी.ए. प्रथम वर्ष
(3) काजल बसौया, बी.ए. द्वितीय वर्ष
(4) चेतना भाटी, बी.ए. द्वितीय वर्ष
(5) निशा, बी.ए. तृतीय वर्ष
(6) आँचल नागर, बी.ए. तृतीय वर्ष
(7) अनीशा, एम.ए. प्रथम वर्ष
(8) अंजलि नागर, एम.ए. प्रथम वर्ष
(9) कोमल नागर, एम.ए. द्वितीय वर्ष
(10) अनुराधा, एम.ए. द्वितीय वर्ष

छात्राओं के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु सत्र 2017–2018 में इतिहास विभागीय परिषद् के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सत्र के आरम्भ में स्नातकोत्तर की छात्राओं हेतु कैरियर की विभिन्न सम्भावनाओं के विषय पर शम्भू दयाल पी.जी. कालिज, गाजियाबाद में कार्यरत् असि.प्रो.डॉ. भूकन सिंह के व्याख्यान का आयोजन विभाग में किया गया। साथ ही महाविद्यालय की समाजशास्त्र विभाग की असि.प्रो. डॉ. सुशीला के द्वारा शोध प्रविधि पर एक सारगर्भित व्याख्यान दिया गया। इसके अतिरिक्त समय–समय पर छात्राओं हेतु विभागीय स्तर पर अनेक सेमिनार आयोजित की गई तथा अन्तर्राष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

28 नवम्बर 2017 को छात्राओं हेतु एक 'ऐतिहासिक परिभ्रमण' का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं को दिल्ली के अनेक ऐतिहासिक स्थल दिखाये गये।

इस सत्र में विभाग में दो प्रतियोगितायें भी सम्पन्न कराई गयी, जिसके परिणाम् निम्नवत रहे–

1. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता–

1. कु. साक्षी, श्री जितेन्द्र कुमार, बी.ए. II प्रथम
2. कु. निधि कुमारी, श्री रमेश सिंह, बी.ए. II द्वितीय
3. कु. कोमल नागर, श्री विनोद नागर, एम.ए. II तृतीय

निबंध प्रतियोगिता–

1. कु. मनीषा, श्री नेत्रपाल सिंह, बी.ए. II प्रथम
2. कु. कोमल, श्री ताराचन्द, बी.ए. III द्वितीय
3. कु. सीमा कुमारी, श्री छोटे लाल, एम.ए. I तृतीय

उपर्युक्त सभी छात्राओं को विभागीय परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

वाणिज्य परिषद्

डॉ. अरविन्द कु. यादव

परिषद् प्रभारी

छात्राओं के सर्वांगीण विकास एवं व्यावसायिक ज्ञान में वृद्धि हेतु दिनांक 19/09/17 को सभी छात्राओं की उपस्थिति में वाणिज्य परिषद् का गठन किया गया। परिषद् में सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये

संरक्षक	: डॉ. करूणा सिंह	
प्रभारी	: डॉ. अरविन्द कुमार यादव	
समन्वयक	: डॉ. मणि अरोड़ा	
उपाध्यक्ष	: शिवानी चौधरी	बी.कॉम. III
सह उपाध्यक्ष	: नेहा रानी	बी.कॉम. III
सचिव	: विमलेश रावल	बी.कॉम. III
सह सचिव	: सोनम	बी.कॉम. III
कोषाध्यक्ष	: सोनम शर्मा	बी.कॉम. III
प्रचार मंत्री	: हिना	बी.कॉम. III

विभागीय परिषद् के तत्वावधान् में इस वर्ष नवम्बर माह में शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से विपणन के विभिन्न सिद्धान्तों की जानकारी दी गई एवं उस पर आधारित एक प्रोजेक्ट भी करवाया गया।

सत्र 2017–18 में दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विमुद्रीकरण के बाद समाज के हर वर्ग पर इसका प्रभाव पड़ा है। "विमुद्रीकरण के एक वर्ष बाद भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव" विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसके परिणाम निम्नवत् हैं

प्रथम पुरस्कार : अंशु शर्मा (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार : काजल नागर (द्वितीय वर्ष)
तृतीय पुरस्कार : विमलेश रावल (तृतीय पुरस्कार)
सांत्वना पुरस्कार : कु. आँचल (प्रथम वर्ष) कु. महिमा (तृतीय वर्ष)

पुस्तकीय ज्ञान का वास्तविक जीवन में उपयोग ही शिक्षा का लक्ष्य है। "वाणिज्य का दैनिक जीवन में उपयोग" विषय पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसके परिणाम निम्नवत् हैं

प्रथम पुरस्कार : स्वाति शर्मा (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार : अंजली नागर (तृतीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार : रेनू नागर (तृतीय वर्ष)

सांत्वना पुरस्कार : शिवानी राघव (द्वितीय वर्ष)

दीपाली गोयल (द्वितीय वर्ष)

हिना (द्वितीय वर्ष)

सभी विजयी छात्राओं को परिषद् की ओर से पुरस्कार वितरित किए गए।

गृह विज्ञान परिषद्

डॉ. शिवानी वर्मा

परिषद प्रभारी, गृह विज्ञान

परिवार सामाजिक जीवन की मूल इकाई है और परिवार के स्वास्थ्य, साज-सज्जा, बच्चों की व्यवस्थित देख-भाल, घर का प्रबन्ध एवं घर को व्यवस्थित ढंग से संचालित करने में गृह विज्ञान जैसे विषय का महत्वपूर्ण योगदान है। छात्राओं की सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं उनके सर्वांगीण विकास हेतु विषय की महत्ता को अनुभव करते हुए एवं छात्राओं को इसके प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से सत्र 2017-18 में गृह विज्ञान परिषद का गठन किया गया। जीवन में सफलता के शिखर पर पहुँचने के लिए विद्यार्थी का पठन-पाठन के अलावा शिक्षणेत्तर गतिविधियों में भी सहभागिता अति आवश्यक है। छात्राएं विभाग की गतिविधियों में भी रूचि लेते हुए गृह विज्ञान विषय का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु शिक्षणेत्तर कार्यक्रमों में भी उत्साहपूर्ण भाग लेती हैं। इस सत्र 2017-18 के आरम्भ में दिनांक 02.09.17 को "अभिविन्यास कार्यक्रम" का आयोजन किया गया, जिसमें गृहविज्ञान विषय की स्नातक एवं स्नात्कोत्तर की छात्राओं को गृहविज्ञान सम्बन्धी विषयों एवं क्रियाकलापों की जानकारी दी गयी। अभिविन्यास कार्यक्रम में परीक्षा प्रणाली के बारे में भी व्याख्या की गयी एवं आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा व प्रयोगात्मक परीक्षाओं सम्बन्धी जानकारी दी गई। विभाग द्वारा भी "अन्तर्राष्ट्रीय पोषण सप्ताह 2017" का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिदिन छात्राओं को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा पोषण सम्बन्धी जानकारी दी गई एवं छात्राओं द्वारा इसका प्रसार किया गया। स्नातकोत्तर की छात्राओं ने सम्बन्धित विषय पर प्रतिदिन "पोस्टर प्रस्तुतिकरण", नारा लेखन, क्विज (+), प्रोटीन प्रधान खाद्य रेसिपी की प्रतियोगिता, निबंध लेखन, नुक्कड़-नाटक एवं 'पोषण' विषय पर व्याख्यान आयोजित किये गये। इसके साथ ही छात्राओं द्वारा ग्राम बादलपुर में पोषण सम्बन्धी सर्वेक्षण किया गया। सप्ताह के अन्त में दिनांक 07.09.17 को डॉ. अमित मिश्रा, मैनेजर, एस.टी. माइक्रो इलेक्ट्रानिक्स कम्पनी, ग्रेटर नोएडा द्वारा "अद्भुत स्वास्थ्य यंत्र" का Demonstration (प्रदर्शन) किया गया। यह यंत्र डॉ. मिश्रा द्वारा स्वयं ही डिजाइन एवं निर्मित किया गया था।

विभाग की छात्राओं को गृह विज्ञान के विभिन्न रोजगार सम्भावनाओं की व्याख्या हेतु कैरियर काउन्सलिंग व्याख्यान

का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. शिल्पी द्वारा रोजगार के विभिन्न आयाम बताते हुए सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों के कार्य रूपरेखा का वर्णन किया गया।

गृह विज्ञान विषय के स्नात्कोत्तर पाठ्यक्रम के अन्तर्गत "फैशन शो" का आयोजन किया गया। छात्राओं द्वारा विभिन्न प्रदेशों की पारम्परिक वेशभूषा एवं परिधान का प्रदर्शन किया गया। यह फैशन शो दिनांक 28.10.17 को डॉ. शिवानी वर्मा के संरक्षण में आयोजित किया गया।

विभाग की सीनियर छात्राओं द्वारा नवीन छात्राओं के स्वागत हेतु दिनांक 24.11.17 को "फ्रेशर्स पार्टी" का आयोजन किया गया।

सत्र 2017-18 में गृह विज्ञान परिषद द्वारा दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें विजयी छात्राएँ निम्नवत् हैं:

कलश सज्जा प्रतियोगिता (दिनांक 08 नवम्बर 2017)

प्रथम पुरस्कार कु. प्रियंका (M.A. IInd Year)

द्वितीय पुरस्कार कु. शैली भाटी (M.A. IInd Year)

तृतीय पुरस्कार कु. सिफाली (M.A. IInd Year)

हैंडीक्राफ्ट प्रतियोगिता (दिनांक 15 नवम्बर 2017)

प्रथम पुरस्कार कु. निशा (M.A. IInd Year)

द्वितीय पुरस्कार कु. प्रियंका (M.A. IInd Year)

तृतीय पुरस्कार कु. सिफाली (M.A. IInd Year)

गृह विज्ञान विभाग की छात्राओं भ्रमण हेतु दिनांक 04 दिसम्बर 2017 को फील्ड ट्रिप पर भी ले जाया गया जिसमें दिल्ली के इस्कॉन मंदिर के साथ-साथ "दिल्ली हाट" में छात्राओं का सर्वेक्षण किया जाता है। छात्राओं ने प्रदर्शनी का लाभ उठाते हुए विभिन्न प्रदेशों के खाद्य व्यंजनों का स्वाद लिया।

महिला उद्यमिता विषय पर प्रोजेक्ट कार्य कर रहीं छात्राओं द्वारा हस्तनिर्मित वस्तुओं की "प्रदर्शनी एवं सेल" का आयोजन किया गया। स्वनिर्मित वस्तुओं में हैंडीक्राफ्ट की सजावटी वस्तुओं सहित विभिन्न प्रकार के जैम, आचार, मुरब्बों, लड्डू, पापड़, नमकीन, चिप्स भी शामिल थे। प्रदर्शनी का उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह के कर कमलों द्वारा किया गया।

अर्थशास्त्र परिषद्

श्रीमती भावना यादव

परिषद् प्रभारी

छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं को विकसित करने हेतु पाठ्येतर गतिविधियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सह पाठ्यक्रम गतिविधियों द्वारा छात्राओं को व्यवहारिक ज्ञान का अनुभव हो पाता है एवं इनसे छात्राओं में भागीदारी, समनव्य, सामाजीकरण, समायोजन, भाषण प्रवाह आदि विकसित करने में मदद मिलती है। इसी ध्येय को पूर्ण करने हेतु विभागीय परिषद् का गठन किया जाता है। सत्र 2017-18 में अर्थशास्त्र विभागीय परिषद् का गठन किया गया एवं विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएँ कराई गईं।

सत्र 2017-18 में अर्थशास्त्र परिषद् के तत्वावधान में छात्राओं को विचारों की अभिव्यक्ति करने में समक्ष बनाने हेतु एवं वर्तमान आर्थिक परिवर्तनों के प्रति जागरूक करने के लिए "GST" का "भातरीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव" विषय पर विभागीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आने वाली छात्राएँ निम्नवत रही।

प्रथम स्थान कु. नेहा M.A. III Sem

द्वितीय स्थान कु. सरिता M.A. III Sem

तृतीय स्थान कु. मनीषा B.A. I Sem

अर्थशास्त्र परिषद् द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें स्थान प्राप्त छात्राएँ निम्नवत रही।

प्रथम स्थान कु. सरिता नागर M.A. III Sem

द्वितीय स्थान कु. रीना B.A. II

तृतीय स्थान कु. महिमा M.A. I Sem

इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र विभाग की छात्राओं द्वारा 'Digital India Program' के प्रति पोस्टर द्वारा जागरूकता अभियान चलाया गया।

सत्र 2017-18 में अर्थशास्त्र विभाग द्वारा शैक्षणिक भ्रमण का भी आयोजन किया गया, जिसमें स्नातकोत्तर छात्राओं को दिल्ली हाट एवं इंडिया गेट का भ्रमण कराया गया। जहाँ बिक्री करने वाले छोटे-छोटे विक्रेता एवं हस्तशिल्प से जुड़े लोगों की समस्याएं एवं उनकी आर्थिक स्थिति के विषय में छात्राओं में जानकारी प्राप्त की।

बौद्धिक प्रसार

डॉ. सीमा देवी

प्रभारी

महाविद्यालय में बौद्धिक प्रसार कार्यक्रम का संचालन सत्र 2013-14 से किया जा रहा है उक्त कार्यक्रम का उद्देश्य है कि महाविद्यालय की छात्राओं को विविध विषयों पर व्याख्यानों व अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से बौद्धिक ज्ञान प्रदान किया जाये। साथ ही जागरूक व जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास किया जायें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु बौद्धिक प्रसार कार्यक्रम के तत्वाधान में विभिन्न व्याख्यानों व कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

16 नवम्बर को प्रत्येक वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस विश्व के कोने-कोने में मनाया जाता है। अत: हमारे महाविद्यालय में भी 16 नवम्बर 2018 को अन्तर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस के रूप में मनाया गया। उक्त कार्यक्रम में लैगिग समानता को दर्शाते हुए अत्यन्त सुन्दर मानव श्रृंखला महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा बनाई। पोस्टर व स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें लगभग 65 छात्राओं ने प्रतिभाग किया जिसमें

प्रथम स्थान-कु. नेहा नागर - एम.ए.द्वितीय वर्ष

द्वितीय स्थान - कु. साक्षी वर्मा - बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

तृतीय स्थान - कु. सना - बी.ए.प्रथम वर्ष ने प्राप्त किया है।

दिनांक 13.12.18 को दीपक शर्मा जी व उनकी टीम द्वारा जन जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्राओं को व्याख्यान दिया तत्पश्चात उनकी टीम द्वारा वैज्ञानिक विधियों व विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से अंधविश्वास पर कुठाराघाट किया। छात्राओं की कार्यक्रम में उत्साह वर्धक सहभागिता रही।

समस्त कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह के कुशल निर्देशन में सम्भव हो सका। बौद्धिक प्रसार समिति के सदस्य श्री कनक कुमार डॉ. पंकज चौधरी, डॉ. ऋचा, श्रीमती दीक्षा, व डा. अरविन्द सिंह का भी कार्यक्रमों के आयोजन में अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ।

शारीरिक शिक्षा परिषद्

श्री धीरज कुमार
असि.प्रो.
शारीरिक शिक्षा

शिक्षा के सर्वागीण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास के लिए तथा सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँचने के लिए विषय सम्बन्धी ज्ञान ही नहीं अपितु अन्य शिक्षणेत्तर कार्यकलापों में सहभागिता करना आवश्यक है। जिसके लिए महाविद्यालय में अलग से शारीरिक शिक्षा एवं क्रीडा विभाग का संचालन पिछले 6 वर्षा से हो रहा है। प्रत्येक वर्षो महाविद्यालय में क्रीडा गतिविधियाँ सत्र के प्रारम्भ से ही आरम्भ हो जाती है।

महाविद्यालय का 18वाँ वार्षिक क्रीडा समारोह दिनांक 15-16 दिसम्बर 2017 को सम्पन्न हुआ जिसके मुख्य अतिथि भारतीय जिमनास्टिक टीम कोच मधुकर श्याम जी थे।

छात्राओं द्वारा मार्च पास्ट तथा मुख्य अतिथि को सलामी दी गयी तत्पश्चात् गतवर्ष की चैम्पियन छात्रा द्वारा प्रज्जवलित मशाल लेकर क्रीडा प्रांगण की परिक्रमा लगायी गई।

मुख्य अतिथि ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि नकारात्मक ऊर्जा अपने अन्दर उत्पन्न न होने दें,

सकारात्मक ऊर्जा आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी जीवन का लक्ष्य बनाएं एंव उसे पूरा करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें तथा अपने स्वास्थ्य के लिए सचेत रहें।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ करूणा सिंह ने छात्राओं को उद्बोधित करते हुए कहा कि महिला महाविद्यालय में प्रेरणा दायिनी व्यक्तित्व की उपस्थिति से उत्साह का संचार होता है। महोदया ने कहा कि प्रत्येक छात्रा में प्रतिभा होती है, आवश्यकता होती है उसे उभारने की, जो कि शारीरिक-शिक्षा विभाग बखुबी कर रहा है। उन्होंने कहा कि खेल में भाग लेने का महत्व होता है। सकारात्मक भाव से जय-पराजय को स्वीकार करें। क्रीडा प्रभारी डॉ. सत्यन्त कुमार ने वार्षिक क्रीडा आख्या प्रस्तुत की। क्रीडा सचिव श्री धीरज कुमार ने अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताऐं जैसे 100 मी. दौड़, 200, 400 मी. दौड़, गोला प्रक्षेपण चक्का एव भाला प्रक्षेपण, ऊँची कूद, लम्बी कूद म्युजिकल चेयर, स्कीपिंग रोप आदि का आयोजन किया गया एवमं अन्तर संकाय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इस वर्ष की क्रीडा चैम्पियन कु. मंजू नागर पुत्री श्री महेन्द्र नागर बी.ए.-द्वितीय वर्ष रही इस वर्ष महाविद्यालय में प्राध्यापकों के बीच रस्सा-कसी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस वर्ष प्राचार्या महोदया के दिशा-निर्देशन में-

1. महाविद्यालय प्रांगण का क्रीडा मैदान का समतलीकरण एवमं सौन्दर्यीकरण किया गया जिसके लिए घास काटने वाली बिजली की मशीन का क्रय किया गया।
2. महाविद्यालय प्रांगण में छात्राओं के लिए Tennis खेलने के तथा बास्केट बॉल खेलने के लिए Tennis ball तैयार की गई।
3. विभाग के सहयोग से प्रगति मैदान में दिनांक 4-6 मई 2018 को अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया

जा रहा है विषय "Health and Wellness".

4. प्राचार्या और विभाग के तालमेल से क्रीडा विभाग में सौहार्द एवं समृद्धि रही।

महिला प्रकोष्ठ

डॉ. अर्चना सिंह

प्रभारी समान अवसर केन्द्र

भारतीय संस्कृति व साहित्य में स्त्री को दैवीय स्थान प्राप्त है परन्तु यथार्थ में भारतीय समाज में महिलाओं को दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता है। स्त्री आज भी परिवार, समाज व अपने कार्यक्षेत्र में अपनी अस्मिता की रक्षा व अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्षरत है। आदर्श और यथार्थ के इस व्यापक अन्तर को दूर करने के लिए शासन व समाज के विभिन्न स्तरों अनेक कार्य किए जा रहे हैं जिससे महिलाओं को हाशिए से उठा कर मुख्य धारा में लाया जा सके। महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति सचेत करने व कार्यक्षेत्र में उनके उत्पीड़न व शोषण को रोकने के उद्देश्य से प्रत्येक कार्यालय में 'महिला प्रकोष्ठ' की स्थापना का प्रावधान किया गया है। कु. मायावती महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर (गौ. बु. नगर) में छात्राओं को शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने व मूलभूत अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से वर्ष 2009 से 'महिला प्रकोष्ठ' की स्थापना की गई। विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 'महिला प्रकोष्ठ' का गठन किया गया जो निम्नवत् है

संयोजक : डॉ. अर्चना सिंह

सह संयोजक : डॉ. दीप्ति वाजपेयी

सदस्य : डॉ. सुशीला चौधरी, डॉ. प्रतिभा तोमर, डॉ. नीलम शर्मा, डॉ. रमाकान्ति, डॉ. विनीता सिंह

छात्रा प्रतिनिधि प्रत्येक संकाय से 2-2 छात्राएं प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित की गई।

दिनांक 27.11.2017 को महिला प्रकोष्ठ के अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. अर्चना सिंह ने छात्राओं को महिला प्रकोष्ठ का परिचय देते हुए छात्राओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया तथा पॉवर एंजिल व 1090 (महिला हेल्प लाइन नम्बर) के विषय में भी व्यापक जानकारी दी। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. रश्मि कुमारी ने अपने ओजस्वी व विद्वतापूर्ण व्याख्यान से छात्राओं को उनके अधिकारों के प्रति सचेत किया। महिला प्रकोष्ठ के समस्त सदस्यों का परिचय भी छात्राओं से कराया गया व छात्रा प्रतिनिधियों का चुनाव किया गया।

दिनांक 18.12.2017 को 'रचनात्मक क्रान्तिकारी एवं नेतृत्व की भूमिका में महिला विषय पर डॉ. नीलम शर्मा द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके परिणाम निम्नवत् है

प्रथम स्थान	आरती रानी बी.ए. द्वितीय वर्ष
द्वितीय स्थान	मुशर्रत जहाँ बी.एड. प्रथम वर्ष
तृतीय स्थान	अंजली नागर बलराम सिंह नागर

दिनांक 30.1.2018 को वैश्वीकरण और महिलाएँ : क्या खोया क्या पाया विषय पर डॉ. रमाकान्ति द्वारा वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें क्रमशः प्रथम स्थान कु. यामा शर्मा बी.एड. प्रथम वर्ष, कु. राखी बी.ए. प्रथम वर्ष द्वितीय स्थान कु. भावना पाण्डेय बी.एड. प्रथम वर्ष, तृतीय स्थान कु. दिव्या शर्मा एम.ए. तृतीय सत्र (अंग्रेजी)

ने प्राप्त किया।

दिनांक 8 मार्च 2018 विश्व महिला दिवस पर महिला प्रकोष्ठ सदस्या डॉ. दीप्ति वाजपेयी ने छात्राओं को महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूक किया। डॉ. विनीता सिंह द्वारा छात्राओं को महिला हेल्प लाइन नं. की जानकारी दी गई।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह प्रकोष्ठ की बैठक कर ने छात्राओं की समस्याओं को ज्ञात करके उनके निराकरण का प्रयास किया।

नेचर क्लब

डॉ. डी.सी. शर्मा

प्रभारी, नेचर क्लब

महाविद्यालय में पर्यावरण के संरक्षण एवं छात्राओं को इसके प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से नेचर क्लब का गठन वर्ष 2008 में किया गया। तभी से पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए यह क्लब निरन्तर प्रयत्नशील है। वर्ष 2017-18 में भी उपरोक्त बैनर के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रयास किये गये

1. महाविद्यालय के समस्त बल्वो को एल.ई.डी. लाइट से बदलने की प्रक्रिया प्रारम्भ की जा चुकी है।
2. महाविद्यालय प्रांगण का Green Audit करने हेतु समिति गठित की गई है जिसके द्वारा महाविद्यालय के समस्त Flora & Fauna की गिनती कर उनके संरक्षण हेतु सुझाव दिये जा रहे हैं।
3. महाविद्यालय की विभिन्न प्रयोगशालाओं एवं कार्यालय की समस्त रद्दी को जलाने या फेंकने की बजाय उन्हें "जागृति" नामक संस्था को देकर बदले में पेपर रिम, फोल्डर इत्यादि लेने हेतु MOU हस्ताक्षर करने पर विचार किया गया है।
4. महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक गण को सप्ताह में कम से कम एक दिन 'कार पूल' करके आने हेतु प्रेरित किया गया है। कई शिक्षकों ने 'कार पूल' प्रारम्भ भी कर दिया है।
5. महाविद्यालय में संचालित रेंजर इकाई के साथ संयुक्त तत्वाधान में अमरूद के 29 पौधे लगाकर 'के.एम.जी.सी. ग्वावा पार्क' विकसित किया गया है।
6. समय समय पर 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत मिशन' को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से 'राष्ट्रीय सेवा योजना' के साथ संयुक्त तत्वाधान में महाविद्यालय के प्रांगण एवं आस-पास के गाँव की साफ-सफाई एवं पौधारोपण कर छात्राओं द्वारा ग्राम बादलपुर एवं सादोपुर में जागरूकता कार्यक्रम चलाये गये।
7. महाविद्यालय प्रांगण को 'प्लास्टिक फ्री' करने पर जोर दिया गया है तथा एंटी प्लास्टिक रैली के द्वारा जागरूकता फैलाई गई।
8. विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधों से सम्बधी ज्ञानवर्धन के लिये महाविधालय के बी.एस.सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं को 'रॉयल बॉटनिकल गार्डन' नोयडा भ्रमण हेतु ले जाया गया।

बी.एड. संकाय

श्री बलराम सिंह

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर) के शिक्षक-शिक्षा विभाग के लिए शैक्षणिक सत्र 2016-17 विशेष अवसरों तक उपलब्धियों से भरा हुआ रहा।

सत्र के प्रारम्भ में ही पूर्णतः परिपक्व प्राचार्या के नेतृत्व में शिक्षक-शिक्षा विभाग को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से स्थायी मान्यता प्राप्त हुई।

शैक्षणिक सत्र 2016-17 में राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा के परिणाम के आधार पर काऊसलिंग के द्वारा विभाग में 85 छात्राओं ने प्रवेश लिया। व्यवस्थित एवं नियोजित रूप से दाखिले की प्रक्रिया पूर्ण होने के उपरान्त दिनांक 10/07/2017 को विभाग का शैक्षणिक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। दिनांक 11/07/2017 को विभाग में नवीन छात्राओं का स्वागत समारोह के द्वारा अभिनन्दन किया गया जिसके अंतर्गत उनको आगामी वर्ष की समस्त शैक्षणिक गतिविधियों से परिचित कराया गया।

पूर्व नियोजित शैक्षणिक-कलैण्डर के आधार पर विभाग में नियमित सैद्धान्तिक कक्षायें संचालित की गई तथा प्रत्येक माह प्रमुख दिवसों एवं जयंतियों को भी उत्साह के साथ मनाया गया जैसे शिक्षक दिवस समारोह, ओजोन दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, गांधी जयंती आदि।

इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक पर्वों के आयोजन के साथ-साथ छात्राओं को सामाजिक संदेश भी दिए गए। दीपावली के पावन पर्व के अवसर पर विभाग में व्यापक रूप से स्वच्छता एवं सौन्दर्यीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जहाँ छात्राओं ने इस बात की शपथ ली कि यह दीवाली 'पटाका रहित' मनायी जाएगी।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के मानकानुसार कु. मायावती राजकीय इण्टर कॉलेज में छात्राओं ने शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त किया। शैक्षणिक सत्र 2016-17 की विशेष उपलब्धि यह भी रही कि माननीय प्राचार्या के कुशल व सफल नेतृत्व निर्देशन में महाविद्यालय ने कु. मायावती राजकीय इण्टर कॉलेज के शैक्षणिक उन्नयन हेतु उसे गोद लिया।

इसी सत्र में बी.एड. द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने उपलब्धि परिक्षाओं में 100% प्रथम श्रेणी प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया जिसके अंतर्गत राशिदी रूकईया ने सर्वश्रेष्ठ व सर्वोत्तम अंकों से बी.एड. मे सर्वोत्तम अंक प्रापत किया।

बी.एड. प्रथम वर्ष की छात्रा कु. मुसर्रत ने शिक्षा शास्त्र में नेट परीक्षा तथा कु. प्रीति मिश्रा ने संस्कृत विषय में जे.आर.एफ परीक्षा उतीर्ण कर विभाग का गौरव बढ़ाया तथा 12 छात्राओं ने UPTET परीक्षा उतीर्ण कर सफल भविष्य में अपना कदम रखा।

शैक्षणिक सत्र 2016-17 में दिनांक 07, 08 तथा 09 फरवरी '2017 को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के नियमानुसार "शैक्षणिक भ्रमण" का सफल आयोजन किया गया, जिसके तहत छात्राओं को राजस्थानी संस्कृति व संस्कारों से परिचित कराने के लिए तीन दिवसीय जयपुर-भ्रमण का आयोजन डॉ. रमाकान्ति जी के नेतृत्व में किया गया।

समान अवसर केन्द्र

डॉ. अर्चना सिंह

प्रभारी, समान अवसर केन्द्र

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध में 2011 में समान अवसर केन्द्र की स्थापना निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई

1. महाविद्यालय की छात्राओं को विभिन्न योजनाओं में समान अवसर प्रदान करना व समाज की मुख्य धारा से जोड़ना।
2. महाविद्यालय की छात्राओं, अध्यापकों और शिक्षणेतर कर्मचारियों के मध्य बेहतर तालमेल बनाने व भेदभावपूर्ण व्यवहार व विचारों को हतोत्साहित करना।
3. छात्राओं के मध्य भेदभाव पूर्ण समस्याओं का प्रभावकारी समाधान करना।
4. समाज के कमजोर वर्गों के लिए समय-समय पर जारी सरकारी आदेशों एवं विभिन्न सम्बन्धित संस्थाओं और एजेन्सियों की सूचनाओं को प्रचारित व प्रसारित करना।
5. समाज के कमजोर वर्गो से आने वाली छात्राओं को सुनना व उनकी समस्याओं का समाधान करना।
6. उनकी प्रवेश व पंजीकरण की प्रक्रिया को आसान बनाना।
7. विद्वसमाज को, समाज के हाशिये पर जीवन जी रहे व्यक्तियों की समस्याओं एवं उनकी आकांक्षाओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाना।

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय की छात्राओं को केन्द्र सरकार व राज्य सरकार तथा अन्य संस्थाओं की लाभकारी योजनाओं के बारे में समय-समय पर सूचित किया जाता रहा है।

इन योजनाओं का लाभ वे किस प्रकार उठा सकती है इस हेतु समान अवसर केन्द्र समिति के सदस्य डॉ. ममता उपाध्याय, डॉ. शिल्पी, डॉ. ऋचा, डॉ. संजीव कुमार द्वारा छात्राओं का यथोचित-मार्गदर्शन किया जाता रहा है।

दिनांक 13-12-2017 को डॉ. दीपक शर्मा Scientific officer के 'जनजागरूकता' व्याख्यान में छात्राओं को अंधविश्वास के प्रति जागरूक करने का कार्य किया। विज्ञान आओं करके सीखे चैनल एवं विज्ञान समिति मेरठ के समन्व्यक डॉ. दीपक शर्मा एवं सुश्री रोहणी द्वारा विभिन्न वैज्ञानिक परीक्षणों व माध्यमों से छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया। इस कार्यक्रम के आयोजन में महाविद्यालय परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

रेंजर

डॉ. सुशीला

प्रभारी रेंजर

राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित करने एवं युवा विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले सहयोगपूर्ण वातावरण का निर्माण करने व परिश्रम, अनुशासन, समर्पण एवं दृढ़ संकल्प और युवा वर्ग के मन में सम्यक् मूल्यों का संचार करना तथा उनके व्यक्तित्व को मानसिक-शारीरिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं से निखारना तथा एक आदर्श लोकतन्त्र आर्थिक शक्ति और एक प्रगतिशील समाज बनाने में आज भारत स्काउट एवं गाइड अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

भारत की 54% जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला 25 वर्ष की आयु से कम आयु वर्ग का युवा है, राष्ट्रीय एकता एवं युवा वर्ग की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्काउटिंग एवं गाइडिंग भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित है, सौहार्द एवं सहिष्णुता की भावना को अपने प्रत्येक ताने-बाने को मजबूत करने में भी युवा रेंजर्स अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर में रेंजर इकाई का संचालन वर्ष 2001 से किया जा रहा है महाविद्यालय की रेंजर इकाई भारत स्काउट एवं गाइड उत्तर प्रदेश मुख्यालय लखनऊ से अहिल्याबाई टीम के नाम से पंजीकृत है।

रेंजर इकाई के अन्तर्गत यह प्रयत्न किया जाता है कि एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में रेंजर्स के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास हो सके इस इकाई के माध्यम से रेंजर्स को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने एवं उनमें सेवा, सौहार्द, सहयोग, स्वावलम्बन स्वदेश प्रेम और विश्वबन्धुत्व की भावनाओं का विकास करना, के माध्यम से रेंजर्स इकाई के अन्तर्गत संचालित कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य है।

रेजर्स इकाई सत्र 2017-18 की प्रमुख गतिविधियाँ

महाविद्यालय की रेंजर इकाई के तत्वाधान में 19 सितम्बर 2017 को अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका प्रमुख उद्देश्य रेंजर में यह जागरूकता उत्पन्न करना था कि किस प्रकार स्काउट गाइड के माध्यम से वह अपनी कैरियर मेकिंग कर सकती है, और इसमें उनके लिए सरकारी व गैर-सरकारी क्षेत्र में क्या सम्भावनाएँ है इत्यादि की जानकारी रेंजर प्रभारी डॉ. सुशीला के द्वारा प्रदान की गई।

दिनांक 15 अगस्त 2017 को उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्राप्त पत्र को माध्यम बनाकर परमवीर चक्र विजेताओं की का संग्रह Wall of Hero तस्वीरों व योगदान नाम से किया गया।

सितम्बर माह के अन्तर्गत महाविद्यालय में स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत अभियान एवं पर्यावरण संरक्षण अभियान के अन्तर्गत KMGC Guava Park का निर्माण किया गया।

अक्टूबर माह के अन्तर्गत महिला सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया गया।

दिनांक 18 नवम्बर 2017 को समसमायिक विषय भ्रष्टाचार का चयन लॉटरी सिस्टम के माध्यम से कर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 21 नवम्बर 2017 को समसमायिक सामाजिक मुद्दों जैसे कन्या भ्रूण हत्या, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण इत्यादि पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 22 नवम्बर 2017 को रेंजर्स में हस्तशिल्प कला कौशल को बढ़ावा देने एवं इनकी इस प्रतिभा को परखने हेतु एक हस्तशिल्प कला कौशल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत रेंजर्स ने घरेलू अनुपयोगी वस्तुओं को पुनः प्रयोग में लाकर अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया।

दिनांक 28 नवम्बर 2017 को Eco-Restoration प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 25 नवम्बर 2017 से 30 नवम्बर 2017 तक महाविद्यालय प्रांगण में त्रिदिवसीय रेंजर मूल्यांकन शिविर व बी.एड. स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ.

करूणा सिंह जी के कर-कमलों के माध्यम से हुआ तथा इस अवसर पर उद्घाटन सत्र की विशिष्ट अतिथि डॉ. अनीता रानी राठौर, प्राचार्या राजकीय महाविद्यालय अलीगढ़ गवाना रही। प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत रेंजर्स को गाँठे, बन्धन, पुल-निर्माण, प्राथमिक चिकित्सा, गैजेट्स व तम्बू निर्माण सम्बन्धी प्रशिक्षण रेंजर प्रभारी डॉ. सुशीला द्वारा प्रदान किया गया तथा बी.एड. स्काउट प्रशिक्षण डी-ओ-सी सुश्री शैफाली गौतम द्वारा प्रदान किया गया। प्रशिक्षण शिविर महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह जी के संरक्षण में सफलतापूर्वक संचालित हुआ।

01 दिसम्बर 2017 को रेंजर इकाई के माध्यम से महाविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय एड्स दिवस का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत एड्स मानव श्रृंखला प्रतीक चिह्न छात्राओं के माध्यम से बनाई गई एवं अर्न्तसंकाय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन विषयः एड्स जागरूकता युवा पीढ़ी से सीधा संवाद विषय पर आयोजित की गई उक्त प्रतियोगिता में विज्ञान संकाय की टीम विजयी रही।

26 जनवरी 2018 को महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्राप्त पत्र के आधार पर स्वतंत्रता संग्राम-संग्रहालय दीवार के रूप में तैयार किया गया।

दिनांक 20 जनवरी 2018 से दिनांक 25 जनवरी 2018 तक महाविद्यालय में रेंजर इकाई के माध्यम से मतदाता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत मतदाता जागरूकता पोस्टर प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक एवं हस्ताक्षर अभियान का आयोजन कर गाँव बादलपुर व सादोपुर में एक मतदाता जागरूकता रैली आयोजित की गई।

कैरियर काउन्सलिंग सेल एवं रोजगार प्रकोष्ठ

श्रीमती भावना यादव

संयोजिका

महाविद्यालय में रोजगार के विभिन्न आयामों की जानकारी देने हेतु एवं छात्राओं में विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के विकल्पों से अवगत कराने हेतु कॅरियर काउन्सलिंग सेल एवं रोजगार प्रकोष्ठ के तत्वावधान में सत्र 2017-18 में निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दिनांक 29-08-17 को डॉ. किशोर कुमार द्वारा प्रबन्धन की क्षमता जागरूक करने एवं छात्राओं को प्रबन्धन के क्षेत्र में विभिन्न आयामों की जानकारी देने हेतु व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसी श्रृंखला में श्रीमती दीक्षा द्वारा वाक क्षमता के विकास हेतु व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम में 112 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

दिनांक 31-08-17 को जिला रोज़गार अधिकारी श्री पद्मवीर कृष्ण द्वारा छात्राओं को रोज़गार सम्बन्धित विभिन्न जानकारियाँ दी गई। एवं छात्राओं को प्रश्न के उत्तर दिए गए। उक्त कार्यक्रम में 130 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

सभी स्नातकोत्तर विभागों में रोजगार सम्बन्धी जानकारी देने के सम्बन्ध में ''अभिविन्यास और रोज़गार कार्यक्रम'' आयोजित किए गए।

दिनांक 29-01-18 को "Northern India Textile Research Association (NITRA)" के प्रतिनिधि द्वारा छात्राओं में कौशल विकास हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विषय में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में NITRA। द्वारा

संचालित विभिन्न नि:शुल्क कार्यक्रमों की जानकारी दी गई एवं 'Textite' के क्षेत्र में स्वरोजगार के विभिन्न अवसरों के विषय में भी बताया गया। उक्त कार्यक्रम में 125 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

इसके अतिरिक्त महाविद्यालय की रोजगार प्राप्त भूतपूर्व छात्राओं से भी समय-समय पर जानकारी ली जाती हैं

उक्त सभी कार्यक्रम समिति समन्वयक श्रीमती शिल्पी एवं समस्त समिति सदस्यों के सहयोग से सम्पन्न कराए गए।

राष्ट्रीय सेमिनार
वैश्वीकरण एवं
भारतीय संस्कृति तथा सामाजिक मूल्यों पर इसका प्रभाव

डॉ. दीप्ति वाजपेयी

सेमिनार संयोजक

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर में दिनांक 20 जनवरी 2018 को उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा अनुदानित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

सेमिनार का मुख्य बिन्दु "वैश्वीकरण" एक व्यापक सम्प्रत्यय है। इसके कदमों की आहट जीवन के प्रत्येक पक्ष पर सुनाई देती है। भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में सुदूर देशों से आने वाले विचारों, संस्कृति एवं जीवन कला के सम्मिश्रण ने लागों की वैचारिक एवं सामाजिक संस्कृति में व्यापक परिर्वतन किया है। भारत के सन्दर्भ में तो इस बदलाव की बयार स्पष्टत: दिखाई दे रही है।

भारत अपने उच्चादर्शो एवं सास्कृतिक विरासत के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है। हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान है किन्तु वैश्वीकरण की आँधी ने हमारी इस पहचान को ही हिला दिया है। हम जाने-अनजाने अपनी जड़ो को खोते जा रहे है। वैश्वीकरण का सम्प्रत्यय सर्वप्रथम विकासशील देशों द्वारा अपने संसाधन एवं उत्पादन को विश्व बाजार में स्थापित करने के उद्देश्य से लाया गया था किन्तु वैश्वीकरण की अविवेकपूर्ण दौड़ ने हमारी दृष्टि को बाहरी चकाचौध से इतना भर दिया कि हमें अपनी संस्कृति एवं मूल्य धुधलें नजर आने लगे। वैश्वीकरण ने सर्व के बोध को समाप्त कर वैयक्तिकता को प्रबल कर दिया, सन्तोष के स्थान पर असीमित व अतृप्त भूख, सात्विक आनन्द के स्थान पर राजसिक व तामसिक भोगेच्छा को इतना उद्दीप्त कर दिया कि आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक उन्नति ही जीवन का लक्ष्य बन गये है।

सिक्के के दूसरे पहलू में नि:संदेह वैश्वीकरण ने हमारे जीवन स्तर, मानव अधिकारों आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में हमारे जीवन को उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विचरण करने हेतु खुला आसमान तथा असीमित संभावनाओं के द्वार हमारे सम्मुख खोल दिए है किन्तु कही न कही इसकी कीमत हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक एवं आशावादी चिन्तन तथा पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों को खोकर चुकानी पड़ रही है। भारतीय संस्कृति के आशावादी चिन्तन के स्थान पर अन्तहीन प्रतिस्पर्धा और लक्ष्यहीन प्रगति की कामना ने मानव की चेतना को खण्डित कर उसे दु:ख, निराशा व अंसतोष के भँवर में उलझा दिया है यही वैश्वीकरण का स्याह पक्ष है। अत: वैश्वीकरण से उत्पन्न

चुनौतियों का सामना कर पाने की दिशा में संगोष्ठी के माध्यम से समसामायिक प्रयास किया गया।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. कमल टावरी सेवानिवृत आई.ए.एस ने यथार्थ को स्वाकारते हुए कहा कि हमें अतीत से निकलकर वर्तमान में जीना है और अपने भविष्य को उज्जवल बनाना है। नि:संदेह भारत उच्च सांस्कृतिक विरासत सम्पन्न देश है किन्तु मात्र अतीत के गौरवशाली होने से कुछ नहीं होगा। हमें वर्तमान में गिरते मानव मूल्यों एवं पतनोन्मुख सामाजिक संरचना को स्वाकारते हुए स्वयं का विश्लेषण करना है। सम्प्रति सैद्धान्तिक ही नहीं वरन् व्यवहारिक रूप में ऐसे कार्य किए जाने की आवश्यकता है, जिससे भारत का भविष्य उज्जवल बन सके। साथ ही हमारे मूल्य भी संरक्षित रहे।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो. अनिल शुक्ला एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली ने अपने उद्‌बोधन में वैश्वीकरण से उत्पन्न प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि धीरे-धीरे हमारी संस्कृति एवं मानव मूल्यों का क्षरण होता जा रहा है। वैश्वीकरण ने विश्व के समस्त देशों के मध्य भौगोलिक दूरी को अवश्य कम कर दिया है किन्तु बाजारवाद के कारण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आघात पहुँचा है। वैश्वीकरण का उजला पक्ष तब होगा कि सभी देशो को समान अवसर मिले, समस्त देशों के मध्य सामञ्जस्य हो तथा सभी देश अपने मूलभूत आदर्शो से जुड़े रहे। विभिन्न संस्कृतियों के सम्मिश्रण से व्यक्ति व समाज अपनी पहचान खो ना दे।

विशिष्ट अतिथि प्रो. जे. के. पुण्डीर, सेवानिवृत्त प्रो.वी.सी. मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ ने वैश्वीकरण के प्रभाव से होने वाले सकारात्मक पक्ष की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि वैश्वीकरण ने व्यक्ति को सम्पूर्ण विश्व से जोड़ दिया है। विकास के नए-नए मार्ग खोल दिये है। नई तकनीकी व चिकित्सा विज्ञान ने सामाजिक स्तर को बढ़ाया है। मानव के रहन-सहन के स्तर में वृद्धि की है। हमें वैश्वीकरण को सकारात्मक सोच से स्वीकार करना चाहिए किंतु साथ ही अपने मूल्यों को अवश्य बनाये रखना है।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करूणां सिंह ने कहा कि वैश्वीकरण के साथ नारी सशक्तिकरण को मजबूत आधार मिला है किंतु सशक्तिकरण एवं विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के साथ-साथ हमारा गुरुतर दायित्व है कि हम अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं मूलभूंत मूल्यों से जुड़े रहे। संगोष्ठी सचिव डॉ. किशोर कुमार ने कहा कि वैश्वीकरण, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, स्थानीय घटनाओं की विश्व स्तर पर रूपान्तरण की प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत विश्व के समस्त लोग मिलकर एक समाज का निर्माण करते है। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र से आगे विस्तारित है। इसमें बदलाव की प्रक्रिया बहुत तीव्र है। इन सभी प्रक्रियाओं में यह महत्वपूर्ण है कि हमें अपनी पहचान बचाए रखनी है, साथ ही विकास की अनंत सम्भावनाओं का स्वागत भी करना है।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. शिव शंकर सिंह, सेवा निवृत आई.ए.एस. ने वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों पर बल देते हुए कहा कि पर्यावरण परिर्वतन से उत्पन्न खतरों, ओजोन परत का क्षरण इत्यादि के विषय में उत्पन्न चेतना वैश्वीकरण का ही परिणाम है। वैश्वीकरण के कारण व्यक्ति संकुचित स्तर से उठकर वैश्विक स्तर तक पहुँच गया है।

किन्तु साथ ही साथ व्यक्तिनिष्ठ होता जा रहा है। हमें दोनों में सामञ्जस्य बनाये रखने की आवश्यकता है।

समापन सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. एन.सी. लोहानी ने अपने वक्तव्य में कहा कि वैश्वीकरण से विभिन्न संस्कृतियों

का सम्मिश्रण हुआ है। विश्व के विभिन्न देशों ने भारत के आदर्शो एवं मूल्यों को स्वीकार करना प्रारम्भ कर दिया है। हमारी संस्कृति व मूल्य अन्य देशों में शोध का विषय है। भारत के योग को वैश्विक मान्यता प्राप्त हो रही है किन्तु हम स्वयं अपने मूल्यों को भूलते जा रहे है, यह चिन्ताजनक विषय है और इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

विषय विशेषज्ञ सत्र में डॉ. कुमार रत्नम सदस्य, आई.सी.एच.आर, नई दिल्ली, डॉ. पी.के. सारस्वत चेयर सी.आई. सी. ग्लोबल, लंदन यू.के., डॉ. गगन कुकरेजा एसो.प्रो. एवं डायरेक्टर बहरीन, डॉ. प्रभात मित्तल एसो. प्रो. दिल्ली वि. वि.दिल्ली ने वैश्वीकरण तथा उसके प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. के. के. शर्मा, एसो. प्रो. एम.एम. कॉलेज मोदीनगर, द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. संजय सिंह, एसो.प्रो., एम.एम.एच. कॉलेज गाजियाबाद एवं तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. संदीप शांडिल्य, एसो.प्रो., आई.बी.एम., मंगलायतन यूनीवर्सिटी, अलीगढ़ द्वारा की गई।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. रश्मि कुमारी, तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. अचर्ना सिंह एवं श्रीमती नेहा त्रिपाठी तथा समापन सत्र का संचालन डॉ. सुशीला चौधरी ने किया। संगोष्ठी सचिव डॉ. दिनेश चन्द शर्मा ने सेमिनार की आख्या प्रस्तुत की तथा सेमिनार ने संयोजिका डॉ. दीप्ति वाजपेयी द्वारा सभी का आभार ज्ञापन किया गया।

सेमिनार का आयोजन महाविद्यालय के लिए मधुर एवं अविस्मरणीय अनुभव है। आगामी वर्षों में भी महाविद्यालय इस प्रकार के अकादमिक कार्यक्रमों के आयोजन हेतु कृतसंकल्प है।

ACTIVITY REPORT OF IQAC

Dr. D.C. Sharma
Convenar

IQAC organized three workshop during this year for the development and welfare of staff and faculty.

One Day Capacity Building Workshop was held On "Intellectual property rights" on 25-01-2018.

Also One Day Capacity Building Workshop On "e-Content Development : Elements and Proccess" was argarimed on 12-12-2017

One Day Capacity Building Workshop on "Tax Planning" on 12-02-2018 also too place.

Principal of the college accepted a proposal of IQAC to provide seed money of Rs. 5000 to each department to organise seminar workshop conference etc at dept. level for the overall development of staff and students.

In addition to that routine meetings are organised time to time by IQAC and a chart is prepared by IQAC for the meeting of faculty members as per the criterion of SSR of NAAC and faculty member meet IQAC on every Saturday as per allocation to discuss the various issues related with criterion of SSR and development of student and college.

IQAC issues various suggestion to the department of college time to time to adopt different types of best practices such as development of class wise Subject wise WhatsApp group, Implementation of Morning prayer, Project at UG level, Record of lecture and upload them on You Tube etc.

Sent AQAR to NAAC

IQAC has apptied for NIRF ranking of college for 2018.

NATIONAL CADET CORPS

Dr. Meenakshi Lohani
N.C.C. Care Taker

NCC aims at developing discipline, character, brotherhood, the spirit of adventure and ideals of selfless service amongst young citizens. Not only these, it also aims to enlighten leadership qualities among the youth who will serve the Nation regardless of which career they choose. It also motivates they young to choose a career in armed forces. In living up to its motto "Unity and Discipline", the NCC strives to be and is one of the greatest cohesive forces of the nation, bringing together the youth hailing from different parts of the country and moulding them into united, secular and disciplined citizens of the nation.

With respect to the aim and motto of NCC, on 08th August the registration enrollment process started with tree plantation symbolizing that the NCC will flourish with the floura and fauna of college. 53 (A:11; B:12; C:30=53) cadets were enrolled and 40 parades were conducted with the help of GCI's and staff of 13 UP Girls Battalion in the college, Throughout the year varrious Camps were attended by the cadets like: Yoga day camp, IGC, CATC, and last and the most important Republic Cay Parade Camp.

Neha Rousa was selected to be a part of the prestigious NCC contingent to march on Rajpath for the Republic Day Parade in New Delhi this year. She has been selected after a rigorous and tough competition among cadets form all over the country. It was her ambition to make her parents feel proud that it was an individual's ability and not the gender that matters. She finds NCC as an instrument of women empowerment. She wants join Indian Army and serve the Nation.

By the unflinching will, determination, untiring efforts and hard work by the cadets. Serveral activities like slogan and paining competition tree plantation, AIDS awareness camp, Anti plastic rally, voter awareness rally were organized int he college.

I welcome all the student of K.M.G.G.P.G. College Badalpur to get enrolled in NCC and explore the untouched aspects of life with unity and discipline.

ESPD CLUB

Ms. Diksha
Convenar

Among nearly 6900 living languages in the world, English is the most popular language. English is dominant international language in science, business, aviation, communication, mass media, and diplomacy. It is spoken as a first language by more than 330 million people throughout the world. It is most often taught as a second language around the world. A working knowledge of English has become a requirement in a number of fields, occupations and professions such as medicine and computing, as a conse-

quence about one in five of the world's population speaks english with a good level of competence.

So, this club "ESPD CLUB", has a vision to polish the qualities of the students that they already possess. It helps the students to make them confident, lively personlality holder and expressive. under this club, the students are encouraged to participate in various competitions. This year, (2017-18), Jumble, word Competition was organized on 12.12.2017 and the following students were rewarded during the annual function.

1. Km.	Bhawna Sharma	D/o Mr. Manoj Sharma	B.Sc. I Ist
2. Km.	Alpana	D/o Mr. Ramchandra Singh	B.Ed. I IInd
3. Km.	Sanchita Chauhan	D/o Lokesh Chauhan	B.Sc. I IIIrd

RASHTRIYA UCHCHATAR SHIKSHA ABHIYAN (RUSA)

Dr. Meenakshi Lohani
Rusa: co-ordinator

Rusa ia a centrally sponsored scheme, launched in 2013 aims at providing strategic funding to eligible state higher education institutions. The central funding (in the ratiob of 60:40) for general category states, 90:10 for special category states and 100% for union terriories would be norm based and outocome dendendent. The funding would flow from the central ministry through the state government union terrototies to the state higher eduction coucils before reaching the indentified institutions.

Rusa was born out of a dream and a passion to allow state to thrive in an ecosytem that isn,t stuck in time . in experts. vice chancellors. professors and industry. had often derided higher education is not being wothwhile. lofty promies of an edication that would work had crumbled. the archaic systems and regulations that govern universities hence needed to be redrawn . without bringing about reforms in the existing goverance and regulatory syatem. it was not be plssible to unleash the potentioal of state universtities. the reforms initiated under the rusa aim to build a self-sustaining monentum that will push for greater accoutability and autonomy of state institutions and impress upon them the need to improve the quality of education adn infrastucture. Rusa follows the given monitorng ways:

Gis is portal which displays entire india's map showing various instutions that are centerally sponsored under the rusa scheme.

Pfms initially stated as a plan scheme named cpsms of the planning commission in 2008-09 as a pilot in four states of madhaya pradesh, bihar, punjab and mizoram for four flagship schemes e.g MGNREGS, NRHM, SSA and PMGSY. Aftere the intial phase of estabilshing a network across Ministres èk departmetnts, it has been decided to undertake Nationonal rolluout os CPAMS (PFMS) to lind the finacial networks of Central , state Governments and the agencies of state govermets.

Bhuvan Rusa app isro is location based solution to montior activities of rusa Rusa found tracker.

Km. Mayawati government girls P.G. Colleges recieved a grant of Rupees 84 lakh in the session 2016-

17 out of the total senctioned 2 crore rupes. under the able guidance of principal ma, am Rusa committee layed the foundation of Msc Zoology lab. classroom and toilet block (New comstruction) and mane around 99% paymenat of the total project cost through PFMS Transactions to Rajkiy Nirman Nigam. noida unit the construction work is in final stage and the building will be handed over by end of february 2018. the board of governers and the project monitoring units keep an eye on the construction. Regular monitoring is done by the Rusa Directorate. the Rusa committee keep furnishing information on all onling portals and apps as and when required . the said new construction project will be completed in this financial year and the girsl of badalpur and nearby rural areas will get an opoortunity to enroll in M.sc Zoology from academic session 2018-19

राष्ट्रीय सेवा योजना

(प्रथम इकाई)

श्रीमती शिल्पी

कार्यक्रम अधिकारी, एनएसएस

राष्ट्रीय सेवा योजना युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित एक केन्द्रीय योजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य समाजसेवा के माध्यम से विद्यार्थियों में व्यक्तित्व एवं समाज के प्रति कर्तव्यता का विकास कराना है। राष्ट्रीय सेवा योजना, महात्मा गाँधी के जन्म शताब्दी वर्ष 1969 में शुरू की गई थी। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है "मुझको नहीं तुमको"। इसी भावना से ओत-प्रोत राष्ट्रीय सेवा योजना शैक्षिक वातावरण में युवा वर्ग को समाज सेवा के लिए प्रेरित कर रहा है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना जागृत करना है। छात्राओं में साम्प्रदायिक सौहार्द सामाजिक चेतना, व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास, दायित्वबोध कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन एवं एकता की भावना विकसित होती है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक स्वयंसेवी छात्राओं को दो वर्षों की अवधि में 240 घंटों का सामुदायिक विकास कार्य करना होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कु. मायावती रा. महिला स्नातकोत्तर महा., बादलपुर की सभी छात्राएँ पूर्ण तत्परता एवं मनोयोग से सभी एक दिवसीय एवं सात दिवसीय विशेष शिविरों में श्रमदान दे रही हैं।

वर्तमान सत्र 2017-18 में भी राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत चार एकदिवसीय शिविर एवं एक सात दिवसीय विशेष शिविर आयोजित किए गए। इन शिविरों के माध्यम से अधिकृत ग्राम बादलपुर में श्रमदान, स्वच्छता, वृक्षारोपण, मतदान हेतु जागरूकता महिला सशक्तिकरण, पोषण सम्बन्धी जानकारी, पल्स-पोलियों एवं टीकाकरण आदि अभियानों में सक्रिय योगदान एवं परिचर्चा कार्यक्रमों के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया गया। छात्राओं में सृजनात्मक एवं रचनात्मक विकास हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई।

दिनांक 18.01.18 को प्रथम एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में चयनित छात्राओं के लिए अभिविन्यास, कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कार्यक्रम अधिकारी डॉ. दीप्ति वाजपेई द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्य

एवं लक्ष्य की जानकारी दी गई। इस शिविर में स्वच्छता अभियान के प्रचार-प्रसार हेतु रैली का आयोजन किया गया। शिविरार्थियों ने गाँव की ओर जाने वाली सड़क की सफाई की। बौद्धिक सत्र में डॉ. मीनाक्षी लोहानी द्वारा "स्वच्छ भारत अभियान एवं हमारे दायित्व" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

दिनांक 05.01.18 को तृतीय एकदिवसीय शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य "बेटी बचाव-बेटी पढ़ाओ" था। इस शिविर के द्वारा ग्रामवासियों में बेटी की सुरक्षा, लिंगभेद, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अधिकार हेतु उन्हें जागरूक एवं प्रेरित करना था। बौद्धिक सत्र में डॉ. नीलम शर्मा द्वारा "वर्तमान में बालिका शिक्षा एवं सुरक्षा की आवश्यकता" पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

दिनांक 27.01.18 को द्वितीय दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य ''मतदाता हेतु जागरूकता फैलाना'' था। बौद्धिक सत्र में डॉ. विनीता सिंह द्वारा ''मतदान प्रक्रिया एवं लोकतंत्र में मतदान का महत्व'' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान आयोजित किया गया।

सत्र 2017-18 में 50 स्वयंसेविकाओं का सात दिवसीय विशेष शिविर दिनांक 06.02.18 से 12.02.18 तक ग्राम बादलपुर में आयोजित किया गया। शिविर के कार्य योजना के अनुरूप सभी शिविरार्थियों ने राष्ट्रीय सेवा योजना के मूल उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य किया गया। शिविर को प्रतिदिन तीन सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम सत्र में शिविरार्थियों द्वारा ग्राम बादलपुर में स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, शिक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, सामुदायिक विकास आदि विषय पर कार्य किए गए। तत्पश्चात् भोजनावकाश के उपरान्त, बौद्धिक सत्र में आपदा प्रबन्धन, स्वास्थ्य एवं पोषण, सूचना एवं संप्रेषण, गैरसरकारी संस्थानों की भूमिका इत्यादि विषयों पर विषय-विशेषज्ञों को आमंत्रित कर परिचर्चा एवं गोष्ठी का आयोजन किया गया। तृतीय सत्र में विभिन्न प्रतियोगिताएँ का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताएँ का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में हस्तकौशल, कल्पनात्मक शक्ति, मानसिक विकास आदि क्षमताओं को विकसित करना था।

शिविर के प्रथम दिवस दिनांक 06.02.17 को प्रातः सर्वधर्म प्रार्थना के पश्चात् शिविर का उद्घाटन श्री कुमार विनीत, अपर जिलाधिकारी, गौ.बु. नगर एवं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह द्वारा रिबन काटकर एवं दीपप्रज्जवल द्वारा किया गया। द्वितीय सत्र में श्रीमती शिल्पी द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य-उद्देश्यों एवं शिविरार्थियों के आचार संहिता पर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। तत्पश्चात् डॉ. अरविन्द कुमार यादव द्वारा "GST एक परिचय" पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

शिविर के दूसरे दिन दिनांक 07.02.18 को सर्वधर्म प्रार्थना एवं शिविर गीत के पश्चात् शिविरार्थियों द्वारा बादलपुर में स्थित विद्यालय एवं सार्वजनिक स्थानों पर "स्वच्छता अभियान" चलाया गया, जिसके अन्तर्गत ग्रामवासियों को स्वच्छता का महत्व बताते हुए अपने आस-पास के परिसर को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया गया। स्वयंसेवी छात्राएँ ने पॉलीथीन उपयोग न करना, कूड़े का उचित निस्तारण, शौचालय का उपयोग इत्यादि विषयों की जानकारी ग्रामवासियों को दी गई। मध्यान उपरान्त, बौद्धिक सत्र में श्रीमती आकांक्षा, जी.बी.आई. 13 UP बटालियन, गाजियाबाद द्वारा "आपदा-प्रबंधन" पर व्याख्यान दिया गया। उन्होंने प्राकृतिक आपदाओं के कारण एवं निवारण के बारे में छात्राओं को

जानकारी दी। तृतीय सत्र में शिविरार्थियों के भावना अभिव्यक्ति हेतु "स्वच्छ भारत एवं स्वस्थ्य भारत" विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

शिविर के तृतीय दिवस दिनांक 08.02.18 को सर्वधर्म प्रार्थना उपरान्त ग्राम बादलपुर में ग्रामवासियों को ''महिलाओं के अधिकार एवं महिला सशक्तिकरण'' विषय पर जागरूक करने हेतु रैली का आयोजन किया गया। साथ ही ग्राम बादलपुर में महिलाओं एवं किशोरियों में उद्यमिता कौशल वृद्धि हेतु ''राजस्थानी कला-बंधेज" एवं ''ब्लॉक प्रिंटिंग'' का प्रशिक्षण डॉ. शिवानी वर्मा, गृहविज्ञान विभाग द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण से लगभग 100 महिलाएँ लाभान्वित हुई। तत्पश्चात् डॉ. शाब्बीटा, राजकीय चिकित्सालय बादलपुर द्वारा महिलाओं की "स्वास्थ्य एवं पोषण समस्या" पर व्याख्यान आयोजित किया गया। उन्होंने सभी शिविरार्थियों को मुफ्त परामर्श भी दी और छात्राओं को संतुलित आहार लेने हेतु प्रेरित भी किया।

तृतीय सत्र में "कुष्ठ रोग : भ्रम एवं वास्तविकता" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई।

शिविर के चतुर्थ दिवस दिनांक 09.02.18 को SRL डाइगनोस्टिक एवं राजकीय चिकित्सालय, बादलपुर के सहयोग से "हैल्थ कैम्प" आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 150 महिलाएँ एवं पुरुषों ने लाभ उठाया। इस कैम्प में ग्रामवासियों के लिए खून की जाँच एवं मानवमितयी परीक्षण की व्यवस्था कराई गई। साथ ही राजकीय चिकित्सालय से आई चिकित्सक द्वारा मुफ्त परामर्श एवं दवाई भी दी गई। दूसरे सत्र में श्रीमती बरखा गुप्ता द्वारा "सूचना एवं संप्रेषण तकनीक" द्वारा व्याख्यान आयोजित किया गया। साथ ही डॉ. अरविन्द यादव द्वारा समूह-परिचर्चा आयोजित की गई, जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात् छात्राओं की सांस्कृतिक अभिरूचियाँ के दृष्टिगत लोक-नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

शिविर के पंचम दिवस 10.20.18 को शिविरार्थियों द्वारा ग्रामवासियों के साथ "मतदान एक महत्वपूर्ण कार्य" विषय पर चर्चा की गई। शिविरार्थियों द्वारा ग्राम बादलपुर में मतदान पहचान-पत्र सम्बन्धी सर्वेक्षण कार्य किए गए। साथ ही नवीन मतदान पहचान पत्र बनवाने हेतु फार्म 6 एवं संशोधन हेतु फार्म 7 भी भरवाये गए। शिविरार्थियों ने गाँव में रैली निकालकर, सभी ग्रामवासियों को मताधिकार हेतु जागरूक किया। द्वितीय सत्र में श्री मुकेश कुमार, प्रभारी निरीक्षक, बादलपुर द्वारा "आधुनिक समाज में महिलाओं की सुरक्षा" विषय पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र में हस्तशिल्प एवं हस्तकौशल विकसित करने की दृष्टि से अनुपयोगी वस्तुओं द्वारा हैन्डीक्राफ्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

शिविर के छठे दिवस दिनांक 11.02.18 को "कुष्ठ रोग जागरूकता : रैली का आयोजन किया गया।" इस रैली का आयोजन किया गया। इस रैली के माध्यम से ग्रामवासियों में कुष्ठ रोग सम्बन्धित विषय पर जागरूकता फैलाना था। साथ ही शिविरार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया गया। द्वितीय सत्र में रितेश कुमार, उपाध्याय, स्नेह छाँव फाउन्डेशन द्वारा "भारत के स्वास्थ्य सेवाओं की स्थति", विशेष संदर्भ-कुष्ठ रोग विषय पर जानकारी शिवरार्थियों को दिया। तृतीय सत्र में "आशु-भाषण प्रतियोगिता" आयोजित की गई, जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

शिविर के अन्तिम दिवस, दिनांक 12.02.18 को पूर्वाह्न में ग्राम बादलपुर की महिलाओं एवं किशोरियों का आहार

सर्वेक्षण किया गया तथा उन्हें संतुलित आहार सम्बन्धित जानकारी दी गई। अपराह्न में समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि एवं सभी आगन्तुकों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् शिविरार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस कार्यक्रम उपरान्त, कार्यक्रम अधिकारी द्वारा आख्या प्रस्तुत की गई तथा शिविरार्थी छात्राओं ने अपने अनुभवों पर वक्तव्य दिया। शिविरार्थियों को महाविद्यालय प्राचार्या द्वारा पुरस्कृत किया गया। प्राचार्या द्वारा छात्राओं के आशीर्वचन के उपरान्त, कार्यक्रम अधिकारी शिल्पी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के साथ दिवसीय विशेष शिविर के संचालन में विश्वविद्यालय प्रसाशन, ग्राम बादलपुर निवासियों एवं राजकीय पॉलीटेक्नीक का विशेष सहयोग मिला।

राष्ट्रीय सेवा योजना

(द्वितीय इकाई)

श्रीमती नेहा त्रिपाठी

कार्यक्रम अधिकारी

दिनांक 06.02.18 से 12.02.18

राष्ट्रीय सेवा योजना देश सेवा एवं समाज सेवा की भावना से ओत-प्रोत एक ऐसा कार्यक्रम है जो हमें सिखाता है कि स्वयं के हित से पहले दूसरों का हित देखो एवं स्वयं के कल्याण से पहले दूसरों का कल्याण करो। यही निहित भावना रा.से.यो. के लोगो में भी अवलोकित होती है कि "Not me but you" (मुझको नहीं तुमको) अर्थात् स्वयं का कल्याण अन्तिम रूप से समाज के कल्याण के बिना संभव नहीं है।

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना की दो इकाइयों संचालित है। जिनके अन्तर्गत 100-100 स्वयंसेवक दो वर्ष की अवधि में 240 घंटे का सामुदायिक कार्य करना सुनिश्चित करते हैं।

महाविद्यालय की द्वितीय इकाई के अन्तर्गत इस वर्ष भी 120 घंटे के सामुदायिक कार्य के अर्न्तगत छात्राओं द्वारा समाज सेवा के विभिन्न आयामों को अपनाने का प्रयास किया गया। छात्राओं द्वारा शिक्षा, स्वच्छता, अंधविश्वास दूर करने, मतदान करने को प्रेरित करने, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, महिलाओं में आहार एवं पोषण, बालकों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा, टीकाकरण एवं वृक्षारोपण इत्यादि से सम्बन्धित क्षेत्रों में प्रयास किये गए। साथ ही समय-समय पर छात्राओं के सर्वागींण विकास को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे डस्टबिन निर्माण, भाषण, लोकगीत, हैण्डीक्राफ्ट, लघुनाटिका एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। एवं छात्राओं में तर्क शक्ति एवं नेतृत्व क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से समूह चर्चा भी आयोजित की गई।

सत्र 2017-18 में द्वितीय इकाई के अर्न्तगत चार एकदिवसीय शिविर एवं एक विशेष (सात दिवसीय शिविर) शिविर आयोजित किया गया।

विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 06/02/2018 से 12/02/2018 तक अधिगृहीत ग्राम सादोपुर के प्राथमिक

विद्यालय में किया गया। शिविर में समस्त 50 स्वयं सेवी छात्रायें उपस्थित रहीं व उन्होंने समस्त गतिविधियों को पूरी कर्त्तव्य निष्ठा से पूर्ण किया।

विशेष शिविर का उद्घाटन दिनांक 06/02/2018 को मुख्य अतिथि कुमार विनीत, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) गौतमबुद्धनगर तथा महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह द्वारा रिबन काटकर एवं माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। मुख्य अतिथि तथा प्राचार्या महोदया का स्वागत पूर्व कार्यक्रम अधिकारी क्रमशः डॉ. दीप्ति वाजपेयी एवं डॉ. अर्चना सिंह द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में बताया कि प्रशासन में भी समाज सेवक बनकर ही कार्य किया जाता है जो छात्राएँ अच्छी समाज सेवा कर सकती है वही अच्छी प्रशासक भी बन सकती है उन्होंने प्रेरित किया कि छात्राएं पूरी कर्त्तव्य निष्ठा से कार्य करें एवं इसी तरीके से वह सबका कल्याण करने के साथ स्वयं के कल्याण के लिए भी मार्ग प्रशस्त करती है। मुख्य अतिथि महोदय ने छात्राओं को बताया कि मुश्किल से मुश्किल कार्य को भी दृढ़ इच्छाशक्ति एवं मनोबल से किया जा सकता है तथा इसके सम्बन्ध में छात्राओं से अपने व्यक्तिगत एवं व्यवसायिक अनुभव भी बाँटे। मुख्य अतिथि महोदय के उद्बोधन के उपरान्त महाविद्यालय की प्राचार्या महोदया ने भी छात्राओं को ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना से परिचित कराते हुए सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अधिकारों का स्थान सदैव कर्तव्य के बाद आता है एवं यदि हम अपने कर्तव्य का सही ढंग से पालन करते है तो हमें अपने अधिकार स्वयं ही प्राप्त हो जाते है। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रथम इकाई की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमति शिल्पी द्वारा पढ़ी गई जबकि कार्यक्रम का संचालन द्वितीय इकाई के कार्यक्रम अधिकारी श्रीमति शिल्पी द्वारा पढ़ी गई जबकि कार्यक्रम का संचालन द्वितीय इकाई की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती नेहा त्रिपाठी द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के इस शिविर को भी, विशेष शिविर कार्ययोजना के अनुरूप प्रतिदिन तीन सत्रों में विभक्त किया गया। इसी के अनुपालन में प्रथम दिवस में भी प्रथम सत्र के उद्घाटन सत्र् के उपरान्त, द्वितीय सत्र् में कार्यक्रम अधिकारी के द्वारा छात्राओं को विशेष शिविर के उद्देश्य एवं आचार संहिता से परिचित कराने हेतु व्याख्यान दिया गया। तदुपरान्त समस्त छात्राओं ने अल्पाहार किया। अल्पाहार के उपरान्त डॉ. अरविन्द कुमार यादव द्वारा छात्राओं को जी. एस.टी. के सम्बन्ध में ज्ञानवर्धन किया गया। तत्पश्चात शिविरार्थी छात्रायें अधिगृहीत ग्रामी सादोपुर के प्राथमिक विद्यालय पहुँची।

यहाँ टोली बनाकर उन्होंने ग्रामवासियों की विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सर्वेक्षण कार्य किया। सर्वेक्षण में पाया गया कि सादोपुर में रहने वाली बालिकायें अभी भी उच्च शिक्षा से वंचित हैं जिसका कारण कहीं आर्थिक सीमा तो कहीं कहीं संकुचित मानसिकता बताया गया। स्वयं सेवी छात्राओं द्वारा इस संबंध में ग्रामवासियों को बताया गया कि राजकीय महाविद्यालयों में अत्यन्त ही नाममात्र शुल्क पर प्रवेश संभव है साथ ही बेटियों एवं बेटों में कोई अन्तर ना होने के प्रति ग्रामवासियों को जागरूक किया गया। इसी के साथ भारत सरकार की ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' योजना के अन्तर्गत विभिन्न सुविधाओं के विषय में भी ग्रामवासियों को अवगत कराया गया।

शिविर के दूसरे दिन छात्राओं ने स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य बनाते हुए स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के लिए रैली निकाली तथा ग्राम वासियों को स्वच्छता के महत्व एवं तरीकों के विषय में जानकारी दी। स्वच्छता अभियान

के अन्तर्गत ही छात्राओं द्वारा ग्राम सादोपुर के प्राथमिक विद्यालय के परिसर एवं आसपास के क्षेत्र में साफ सफाई के कार्य करते हुए परिसर में पौधारोपण किया गया।

साथ ही प्राथमिक विद्यालय के बालकों को भी पौधारोपण करने एवं लगाये गये पौधों का वर्ष पर्यन्त ध्यान रखने हेतु प्रेरणा दी गई। बौद्धिक सत्र् में डॉ. बरखा गुप्ता, विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला पॉलीटेक्निक, बादलपुर गौतमबुद्धनगर द्वारा आधुनिक युग में तकनीकी की विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगिता के विषय में छात्राओं को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गयी। इसी सत्र् में डॉ. स्वाति कु. मायावती राजकीय महिला पॉलीटेक्निक, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर द्वारा छात्राओं को ऑनलाइन शॉपिंग एवं ई-बैकिंग के विषय में जानकारी प्रदान की गयी। तृतीय सत्र् में अत्यन्त मनोरम लोकगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने उत्साह पूर्वक हिस्सा लिया एवं सबने मिलकर उसका आनन्द उठाया।

शिविर के तृतीय दिवस पर, 2019 लोकसभा निर्वाचन में, 100 प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई एवं ग्रामवासियों से निश्चित रूप से मतदान करने का आहवाहन किया गया। छात्राओं ने घर-घर जाकर मतदाता पहचान पत्र सर्वेक्षण किया एवं मतदान के महत्व पर प्रकाश डाला। इसी सत्र् में प्राथमिक विद्यालय सादोपुर में एस.आर.एल.

डायग्नोस्टिक द्वारा ग्रामीण महिलाओं के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाकर उनका चेकअप कराया गया एवं उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान कराया गया। द्वितीय सत्र् में डॉ. ऋचा, असिस्टेंट प्रोफेसर कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं ग्लोबल वार्मिंग के विषय में व्याख्यान दिया गया। तृतीय सत्र् में 'प्राकृतिक संसाधनों का दुरूपयोग: अनभिज्ञता अथवा उपेक्षा' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिससे छात्राओं में प्राकृतिक संसाधनों का मितव्ययिता पूर्वक उपयोग करने की भावना का विकास हो सके।

शिविर के चौथे दिन शिविरार्थी छात्राओं द्वारा 100 प्रतिशत साक्षरता का उद्देश्य रखते हुए ग्राम सादोपुर से बादलपुर तक साक्षरता रैली निकाली गई तथा साक्षरता के प्रति ग्रामवासियों को जागरूक किया गया। साथ ही कु. मायावती राजकीय महिला पॉलीटेक्निक बादलपुर जाकर छात्राओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास किया गया। ज्ञातव्य है कि कु. मायावती राजकीय महिला पॉलीटक्निक बादलपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों ही इकाइयों का संयुक्त कार्यक्रम कर वरिष्ठ चिकित्सक राजकीय चिकित्सालय बादलपुर, गौतमबुद्धनगर द्वारा दवाइयों का नि:शुल्क वितरण किया गया एवं छात्राओं को ''स्वस्थ शरीर'' के महत्व एवं उपाय के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। इसी दिवस पर द्वितीय सत्र् में छात्राओं द्वारा प्राथमिक विद्यालय सादोपुर के बालको/विद्यार्थियों का पठन पाठन कराया गया तथा टॉफी बिस्कुट इत्यादि का वितरण किया गया। तृतीय सत्र में अनुपयोग्य वस्तुओं द्वारा हैन्डीक्राफ्ट प्रतियोगिता के आयोजन किया गया।

शिविर के पाँचवें दिन प्रात: काल में डॉ. सत्यन्त, असिस्टेंट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर द्वारा छात्राओं को योगाभ्यास कराया गया। तथा छात्राओं को मेडिटेशन (ध्यान) के विभिन्न लाभ एवं तरीकों से अवगत कराया गया। तदुपरान्त छात्राओं द्वारा ग्राम सादोपुर में पर्यावरण संरक्षण एवं जल

संरक्षण के लिए अभियान चलाया गया। कुछ शिविरार्थी छात्राओं ने नुक्कड नाटक के माध्यम से ''बेटी के महत्व के बारे में भी ग्रामवासियों में जागरूकता फैलाने का प्रयास किया। बौद्धिक सत्र् में श्री विनय कुमार, बेसिक शिक्षा अधिकारी, गाजियाबाद द्वारा छात्राओं को प्राथमिक शिक्षा एवं समाज के प्रति एक शिक्षित व्यक्ति के कर्त्तव्यों के विषय में व्याख्यान दिया गया। साथ ही डॉ. बलराम, असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा संकाय, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर द्वारा भी इस संबंध में अपने अनुभव साझा किये गए। तृतीय सत्र् में डॉ. शिवानी, असि. प्रो. गृहविज्ञान, कु. मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर द्वारा प्राथमिक चिकित्सा के विषय में छात्राओं को बताया गया एवं डॉ. शिवानी, डॉ. सुशीला, डॉ. श्वेता सिंह द्वारा लघु नाटिका प्रतियोगिता का निर्णय सुनाया गया।

शिविर के छठे दिवस पर स्वयं सेवकों द्वारा महिला आहार एवं पोषण तथा टीकाकरण के प्रति जागरूकता का अभियान चलाते हुए ग्रामीण महिलाओं को इसके महत्व के बारे में बताया गया साथ ही 13 यूपी बटालियन से आये श्री पाटिल ने आपदा प्रबन्धन के विषय में शिविरार्थियों को जानकारी प्रदान की।

इसके पश्चात् स्नेह छाँव फाउन्डेशन (NGO) से आये श्री प्रकाश एवं श्री रितेश ने छात्राओं को माता-पिता, वृद्धजनों गरीबों एवं व्यक्त लोगों के प्रति करूणा एवं सम्मान रखने के प्रति प्रेरित किया। तदुपरान्त डॉ. डी.सी. शर्मा, एसो. प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर द्वारा पी.आर.एस. के माध्यम से छात्राओं की सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई गई। साथ ही तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। इसके उपरान्त श्री (मास्टर) कुमार चन्द आर्य, संस्कार एवं नैतिक शिक्षा उपदेशक, द्वारा छात्राओं को नैतिक मूल्यों के विषय में बताते हुए सद्कर्म की ओर अग्रसर करने का प्रयास किया गया। तदुपरान्त डॉ. एस.एस. यादव, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय गोंडा कलास, द्वारा छात्राओं को नैतिक मूल्यों एवं कर्तव्यों का स्मरण कराकर आर्शीवचन एवं शुभकामनाये दी गई। तृतीय सत्र् में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका निर्णय डॉ. एस.एस. यादव एवं डॉ. अरविन्द कुमार यादव द्वारा दिया गया।

शिविर के सातवें दिन छात्राओं द्वारा ग्रामीण महिलाओं को घरेलू हिंसा से बचाव से सम्बन्धित नियम व कानूनों के विषय में जानकारी प्रदान करने सम्बन्धी अभियान चलाया गया। तदुपरान्त पुनः रैली के साथ कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर प्रांगण में आकर छात्राओं द्वारा साफ सफाई कर, पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह में हिस्सा लिया गया।

समापन समारोह में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह जी मुख्य अतिथि के पद पर सुशोभित रही। जिन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी छात्राओं को पुरस्कृत किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रथम इकाई की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमति शिल्पी तथा शिविर की आख्या का वाचन द्वितीय इकाई की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमति नेहा त्रिपाठी द्वारा किया गया। समारोह में छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। तथा शिविरार्थी छात्राओं द्वारा शिविर में उनके अनुभवों पर वक्तव्य दिये गये।

प्राचार्या महोदया द्वारा छात्राओं के दिये गए आर्शीवचन के उपरान्त सभी का आभार व्यक्त किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के संचालन में विश्वविद्यालय प्रशासन, ग्राम सादोपुर के निवासियों, प्राथमिक विद्यालय के प्राचार्य एवं प्रशासन का विशेष सहयोग रहा।

राष्ट्रीय सेवा योजना की सम्पूर्ण समिति डॉ. अर्चना सिंह डॉ. दीप्ति बाजपेई, डॉ. अरविन्द यादव, डॉ. ऋचा, डॉ. मिन्तू, डॉ. विनीता सिंह, डॉ. नीलम शर्मा, डॉ. विजेता गौतम एवं डॉ. सोनम शर्मा सहित प्रथम इकाई की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमति शिल्पी ने शिविर संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। जिससे शिविर के समस्त कार्यक्रम सुचारू रूप से संचालित किये जा सके। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह जी के कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन तथा यथाशीघ्र समस्त समस्याओं का समाधान ढूंढने की प्रवृत्ति एवं महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण एवं कर्मचारी वर्ग के उल्लेखनीय सहयोग से शिविर अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल रहा।

पुरातन छात्रा सम्मेलन

डॉ. मिन्तु
संयोजिका

शिक्षण संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान के प्रसार के साथ-साथ उनके जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। जीवन में सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचने के पश्चात् समय-समय पर आकर अपने प्राधयापकों से मिलना इस बात का संकेत होता है कि महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों को व्यवहारिकता भी सिखाता है। पुरातन छात्राओं को इस सम्मेलन द्वारा एक ऐसा मंच प्राप्त होता है जिससे वे अपने विचारों एवं प्रतिक्रियाओं को व्यक्त कर सकते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु दिनांक 17.11.17 को पुरातन छात्रा सम्मेलन का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के विकास हेतु बहुत-सी बातों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर रोजगार के अवसरों पर विस्तृत चर्चा की गई।

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्या-डॉ. करूणा सिंह

कला संकाय

हिन्दी विभाग

1. डॉ. रश्मि कुमारी — एसो. प्रो.
2. डॉ. अर्चना सिंह — एसो. प्रो.
3. डॉ. जीत सिंह — असि. प्रो.
4. डॉ. मिन्तू — असि. प्रो.

अंग्रेजी विभाग

1. श्रीमती जूही बिरला — असि. प्रो.
2. श्रीमती दीक्षा — असि. प्रो.
3. डॉ. विजेता गौतम — असि. प्रो.
4. डॉ. श्वेता सिंह — असि. प्रो.

संस्कृत विभाग

1. डॉ. दीप्ति वाजपेयी — एसो. प्रो.
2. डॉ. नीलम शर्मा — असि. प्रो.
3. डॉ. कनकलता यादव — असि. प्रो.

समाजशास्त्र विभाग

1. डॉ. सुशीला — असि. प्रो.
2. डॉ. हरेन्द्र कुमार — असि. प्रो.
3. डॉ. विनीता सिंह — असि. प्रो.

इतिहास विभाग

1. डॉ. आशा रानी — एसो. प्रो.
2. डॉ. किशोर कुमार — एसो. प्रो.
3. डॉ. निधि रायजादा — एसो. प्रो.
4. डॉ. अनीता सिंह — एसो. प्रो.
5. श्री अरविन्द सिंह — असि. प्रो.

गृहविज्ञान विभाग

1. डॉ. शिवानी वर्मा — एसो.प्रो.
2. श्रीमती शिल्पी — असि. प्रो.

राजनीति शास्त्र विभाग

1. डॉ. आभा सिंह — एसो. प्रो.
2. डॉ. ममता उपाध्याय — एसो. प्रो.
3. डॉ. पंकज चौधरी — असि. प्रो.
4. डॉ. सीमा देवी — असि. प्रो.

भूगोल विभाग

1. डॉ. मीनाक्षी लोहानी — असि. प्रो.
2. श्री कनक कुमार — असि. प्रो.
3. श्रीमती निशा यादव — असि. प्रो.

अर्थशास्त्र विभाग

1. श्रीमती भावना यादव — असि. प्रो.
2. श्रीमती पवन कुमारी — असि. प्रो.

संगीत विभाग

1. डॉ. बबली अरुण — असि. प्रो.

शिक्षा विभाग

1. डॉ. सोनम शर्मा — असि. प्रो.

शारीरिक शिक्षा विभाग

1. डॉ. सत्यन्त कुमार — असि. प्रो.
2. श्री धीरज कुमार — असि. प्रो.

चित्रकला विभाग

1. डॉ. शालिनी तिवारी — असि. प्रो.

विज्ञान संकाय

जन्तु विज्ञान विभाग

1. डॉ. दिनेश चंद्र वर्मा — एसो. प्रो.

रसायन विज्ञान विभाग

1. श्रीमती नेहा त्रिपाठी — असि. प्रो.

वनस्पति विज्ञान विभाग

1. डॉ. प्रतिभा तोमर — असि. प्रो.

भौतिक विज्ञान विभाग

1. डॉ. ऋचा — असि. प्रो.

गणित विभाग

1. पद रिक्त

वाणिज्य संकाय

1. डॉ. अरविन्द कुमार यादव — असि. प्रो.
2. डॉ. मणि अरोड़ा — असि. प्रो.

शिक्षा संकाय

1. श्री बलराम सिंह — असि. प्रो.
2. डॉ. संजीव कुमार — असि. प्रो.
3. डॉ. रतन सिंह — असि. प्रो.
4. मो. वकार रजा — असि. प्रो.
5. श्रीमती रमाकान्ति — असि. प्रो.